Class 8 Study Material

Hindi Subject

Term 2

1. - कबीर की साखियाँ

पद्यांश **1**

निम्नलिखित दोहों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तरवारि का, पड़ा रहन दो म्यान ।
आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।
माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि ।
मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।

i) कवि और कविता का नाम लिखिए।
ii) कवि ने साधु की जाति न पूछने के लिए क्यों कहा है?
iii) अपशब्द का जवाब अपशब्द से क्यों नहीं देना चाहिए?
iv) कबीर के अनुसार मनुष्य दिखावे की भक्ति किस रूप में करता है?
v) 'मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै' का क्या आशय है?

docs.aglasem.com

aglasem.com

पद्यांश- **2**

निम्नलिखित दोहों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।

उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ ॥

जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय ।

या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।

i) साखी में तिनका किसका प्रतीक है?

ii) कवि घास के तिनके की भी निंदा करने से क्यों मना करता है?

iii) 'पाऊँ' और 'दुहेली' शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें।

iv) अपना मन शीतल होने से हमारे प्रति दूसरों का व्यवहार किस तरह प्रभावित होता है ?

v)आपा शब्द का क्या अर्थ है?आपा डारि देने का क्या परिणाम होता है ?

प्रश्नोत्तर

प्रश्न1-कवि कबीर किस काल के कवि हैं?

प्रश्न 2कबीर की रचनाओं का संकलन किस नाम से जाना जाता है?

प्रश्न3- कबीर के दोहों को किस नाम से जाना जाता है?

प्रश्न4- 'माला तो कर में फिरै' पंक्ति में **कर** का क्या अर्थ है?

प्रश्न 5- जग में कोई किसी का बैरी कब नही होता?

प्रश्न 6- कवि ने मन (मनुवाँ) की क्या विशेषता बताई है?

प्रश्न 7- **बैरी** शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखें।

प्रश्न 8- आपा और आत्मविश्वास में क्या अंतर है?

प्रश्न 9 - निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिंदी रूप लिखिए-

ग्यान

docs.aglasem.com

aglasem.com

जिभि

तलि

आँखि

सीतल

प्रश्न10- कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है?

प्रश्न 11- 'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं- उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 12- क्या अपशब्द का जवाब अपशब्द से देना ठीक है ? यदि नहीं तो क्यों ?

प्रश्न 13- कबीर किस तरह की भक्ति को सच्ची भक्ति नहीं मानते हैं ?

प्रश्न 14-घास का तिनका किस प्रकार कष्टदायी बन सकता है?

प्रश्न15- कवि ने मनुष्य को आपा त्यागने की सीख क्यों दी है?

उत्तर-कुंजी

पाठ कबीर की सखियाँ

उत्तर)। कवि का नाम- कबीर, कविता- कबीर की साखियाँ ।

उत्तर ii कवि के अनुसार साधु की कोई जाति नही होती। मनुष्य के लिए जाति नहीं ज्ञान महत्वपूर्ण होता है, अतः साधु से हमे ज्ञान प्राप्त करना चाहिए उसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए।

उत्तर iii अपशब्द का जवाब अपशब्द से नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे अपशब्द एक से बढ़कर अनेक हो जाते हैं।

उत्तर iv) मनुष्य हाथ में मनके की माला फिराता रहता है और मुँह से राम-राम का उच्चारण करता है परंतु उसका चंचल मन कहीं और भटकता रहता है। इस प्रकार वह दिखावे की भक्ति करता है।

उत्तर v 'मनुवाँ तो चहुँ दिसि फिरै' का आशय है- मन का प्रभु भक्ति में केंद्रित न हो पाना। मन भक्ति में रमने के बजाए इधर- उधर भटकता रहता है।

पद्यांश- **2**

उत्तर **I** -साखी में घास उस कमजोर मनुष्य का प्रतीक है जिसका अपमान करने से कोई तनिक भी नहीं डरता।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उत्तर**ii** -कवि घास के तिनके की निंदा करने से इसलिए मना करता है कि जमीन पर पड़ा अस्तित्वहीन घास का तिनका भी आँख में पड़ने से हमें पीड़ा पहुँचा सकता है।

उत्तर **iii** -पाऊँ-पैर ,पाँव

दुहेली-कष्टदायी, दुख पहुंचाने वाला।

उत्तर **iv** -अपना मन शीतल होने से मन का घमंड समाप्त हो जाता है, मन निश्छल और पवित्र हो जाता है जिससे दूसरे लोग भी हमें स्नेह और सम्मान देते हैं।

उत्तर **v** -आपा शब्द का अर्थ है अहंकार, घमंड। आपा त्याग देने का परिणाम यह होता है कि संसार में कोई व्यक्ति दुश्मन नहीं रह जाता। सभी उसके मित्र बन जाते हैं।

प्रश्नोत्तर

उत्तर1-कबीर भक्तिकाल के संत कवि हैं।

उत्तर2- बीजक

उत्तर3- कबीर के दोहों को साखी के नाम से जाना जाता है।

उत्तर4- हाथ

उत्तर 5- जब व्यक्ति का मन शीतल होता है।

उत्तर 6- मन स्थिर नहीं होता,यह चंचल होता है।

उत्तर 7- बैरी - दुश्मन,अरि, रिपु ,शत्रु

उत्तर 8- आपा का अर्थ है- अहंकार या घमंड

आत्मविश्वास का अर्थ है स्वयं पर विश्वास ।

उत्तर 9 ग्यान -ज्ञान

जिभि-जीभ

तलि- तले

आँखि-आँख

सीतल- शीतल

उत्तर10- उत्तर कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि साखी शब्द साक्षी शब्द का तद्भव रूप है, जिसका अर्थ है- आँखों देखा हुआ गवाह या गवाही। संत कबीर ने इस दुनिया में सब सुना देखा और सहा। उन्होंने अपने अनुभव को दोहों के रूप में व्यक्त किया।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उत्तर 11-तलवार का महत्त्व होता है, म्यान का नहीं इस उदाहरण के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जिस तरह तलवार की मजबूती तथा उसकी तीक्ष्ण धार देखी जाती है उसकी म्यान की सुंदरता नहीं देखी जाती उसी प्रकार मनुष्य के लिए संतों की जाति नहीं ज्ञान महत्वपूर्ण है ।

उत्तर12- हमें अपशब्द का जवाब कभी भी अपशब्द से नहीं देना चाहिए क्योंकि पलट कर अपशब्द का जवाब देने से वह एक से अनेक हो जाता है। इस प्रकार गालियों का सिलसिला रुकने के बजाए बढ़ता ही जाता है।

उत्तर 13-कबीर उस भक्ति को सच्ची भक्ति नहीं मानते हैं जब व्यक्ति हाथ में मनका घुमाता रहता है पर उसका मन एकाग्रचित्त होने के बजाए इधर-उधर भटकता रहता है।

उत्तर14- घास का तिनका -जिसे हम कुछ नहीं समझते जब हवा में उड़कर हमारी आँख में पड़ जाता है तो हमारे लिए कष्टदायी बन जाता है।

उत्तर15 -कवि ने मनुष्य को आपा त्यागने की सीख इसलिए दी है ताकि लोगों में आपस में सद्भाव फैले।

2. – कामचोर

गद्यांश – 1

बड़ी देर वाद – विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए | आखिर , ये मोटे –मोटे किस काम के हैं ! हिलकर पानी नहीं पीते | इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए | कामचोर कहीं के ! “तुम लोग कुछ नहीं | इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते |” और सचमुच हमें ख्याल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते ? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल – हिलाकर पानी पीना शुरू किया |

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ | लीजिए पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया | सुराहियाँ उधर लुढकी | मटके इधर गए | कपड़े भीगे सो अलग |

प्रश्न-1. लेखक व पाठ का नाम लिखिए |

प्रश्न- 2. वाद-विवाद किनके मध्य हो रहा था?

प्रश्न-3. अम्मा और अब्बू ने क्या निर्णय लिया?

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न-4. मोटे-मोटे शब्द का प्रयोग किनके लिए और क्यों किया गया है?

प्रश्न-5. बच्चों के बीच घमासान युद्ध किसके पास शुरू हो गया?

गद्यांश – 2

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ | ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ , भेड़ें , टूटे हुए तसले , बाल्टियाँ , लोटे , कटोरे और बच्चे थे | बच्चे बाहर किए गए | मुर्गियाँ बाग़ में हँकाई गई | मातम – सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं | "या तो बच्चा – राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो | नहीं तो मैं चली मायके," अम्मा ने चुनौती दे दी |

और अब्बा ने सबको क़तार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया | "अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा |" ये लीजिए! इन्हें किसी करवट शान्ति नहीं | हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए , हिल कर पानी भी नहीं पिएँगे |

प्रश्न-1. अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके क्या हिदायत दी?

प्रश्न-2. कोर्ट मार्शल से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न-3. बच्चों नें क्या निश्चय किया ?

प्रश्न-4. बच्चों को क्या चेतावनी दी गई ?

प्रश्न-5. अम्मा ने क्या चुनौती दे डाली?

गद्यांश -3

सारा घर धूल से अट गया । खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए । सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका । हम लोगों को तुरंत आँगन में निकाला गया । वहाँ हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया ।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेनेवाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण-भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींके जिसके हाथ पड़ी, वह उनसे ही उलटे-सीधे हाथ मारने लगा । अम्मा ने सिर पीट लिया । भई बुजुर्ग काम करने दें तो इंसान काम करे । जब ज़रा-ज़रा सी बात पर टोकने लगे तो बस, हो चुका काम !

प्रश्न 1

क) सारा घर धूल से क्यों अट गया ?

ख) धूल उड़ने से क्या हुआ ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

ग) बच्चों का काम करने के बारे में क्या विचार था ?

घ) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

ङ) दिए गए शब्दों के अर्थ लिखो ।

1. बेदम 2. फौरन

पाठ से संबंधित प्रश्न

प्रश्न-1. सोचे समझे बिना कार्य करने से क्या – क्या हानियाँ हो सकती हैं?

प्रश्न-2. घर से नौकरों को निकालने का निर्णय क्यों लिया गया ?

प्रश्न-3. काम करने के लिए बच्चों को क्या प्रलोभन दिया गया?

प्रश्न-4. झाड़ू के पुर्जे-पुर्जे क्यों उड़ गए?

प्रश्न-5. बच्चे सारा दिन क्या करते थे?

प्रश्न-6. दरी पर पानी डालने का क्या नतीजा हुआ?

प्रश्न-7. कीचड़ में लथपथ बच्चों को नहलाने के लिए कहाँ से नौकर बुलाए गए?

प्रश्न-8. भेड़ों को मारने पर कैसा लगता है?

प्रश्न-9. अम्मा और अब्बा में वाद-विवाद के बाद क्या तय हुआ?

प्रश्न-10. अब्बा का शाही फरमान क्या था?

प्रश्न-11. बच्चों ने अंत में क्या निश्चय किया?

प्रश्न-12. झाड़ू देने से पहले ज़रा-सा पानी क्यों छिड़क देना चाहिए?

प्रश्न-13. कहानी में अब्बा मियाँ ने बच्चों को क्या-क्या काम बताए |

प्रश्न-14. "जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा |" अब्बा ने ऐसा किस उद्देश्य से कहा?

प्रश्न-15. पेड़ में पानी डालने के लिए घर के बर्तनों की कैसी लूट मची?

उत्तर-कुंजी

गद्यांश-1.

1. इस्मत चुगताई |
2. वाद-विवाद अम्मा और अब्बा के मध्य हो रहा था |

docs.aglasem.com

aglasem.com

3. अम्मा और अब्बा ने घर के सभी नौकरों को निकालने का निर्णय लिया |
4. मोटे-मोटे शब्द का प्रयोग बच्चों के लिए किया गया क्योंकि उनकी नजर में वें पूर्णतया कामचोर है, केवल खाते-पीते व आराम करते हैं | घर का कोई काम नहीं करते |
5. बच्चों के बीच घमासान युद्ध मटकों के पास ही शुरू हो गया |

गद्यांश-2.

1. अब्बा ने बच्चों को हिदायत दी कि कोई किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएगा | यदि लगाएगा तो उसे रात का खाना नहीं दिया जाएगा |
2. कोर्ट मार्शल का अर्थ है – शाही फरमान जिसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता |
3. बच्चों ने निश्चय कर लिया कि अब किसी भी काम को हाथ नहीं लगाएँगे मेहनत कर पानी भी नहीं पिएँगे |
4. बच्चों को रात
5. अम्मा ने मायके जाने की चुनौती दे डाली|

गद्यांश-3

क) बच्चों ने फर्श पर बिछी दरी जो मिट्टी से सनी हुई थी उसे झाड़ना शुरू किया था इसलिए सारा घर धूल से अट गया ।

ख) धूल उङने से सारे घर में धूल ही धूल हो गई । सांस लेना भी कठिन हो गया ।

ग) उनके काम को गलत कहा जाने लगा । ऐसे में उन्होने कहा कि जब घर के बड़े-बूढ़े काम करने दें तो ही हम काम कर सकते हैं ।

घ) कामचोर

ङ) 1 बेदम- निर्बल 2 फौरन- तुरंत

पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

1. जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे कार्य करता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है | ऐसा व्यक्ति काम तो बिगाड़ता ही है साथ ही वह हँसी का पात्र भी बनता है | काम के बिगड़ जाने पर उसके मन को शान्ति नहीं मिलती |
2. घर से नौकरों को निकालने का निर्णय इसलिए लिया गया ताकि बच्चे अपना काम स्वयं कर सके और उनमें काम करने की आदत का विकास हो सके |
3. काम करने के लिए बच्चों को तनख्वाह देने का प्रलोभन दिया गया |
4. तनख्वाह का प्रलोभन देने से बच्चों के द्वारा खींचातानी से |
5. बच्चे सारा दिन ऊधम मचाने के अलावा कुछ नहीं करते थे |
6. दरी पर पानी डालने का नतीजा यह हुआ कि सारी धूल कीचड़ बन गई |

docs.aglasem.com

aglasem.com

7. कीचड़ में लथपथ बच्चों को नहलाने के लिए नौकर पास के बंगलों से बुलाए गए |
8. भेड़ों को मारने से ऐसा लगता है जैसे रुई के तकिए को कूट रहे हो | भेड़ को चोट ही नहीं लगती |
9. बड़ी देर के वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए |
10. अब्बा का शाही फरमान था कि जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा |
11. बच्चों ने अंत में निश्चय किया कि अब चाहे कुछ भी हो हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे |
12. झाड़ू देने से पहले जरा- सा पानी छिड़क देना इसलिए अच्छा होता है क्योंकि ऐसा करने से धूल नहीं उड़ती है |
13. अब्बा मियाँ ने बच्चों को दरी साफ़ करना, आँगन में पड़ा कूड़ा फेंकना और पौधों में पानी देना जैसे कुछ काम बताए |
14. घर के काम में सहयोग व स्वयं काम करने की आदत बच्चों में विकसित करने के उद्देश्य से अब्बा ने बच्चों को ऐसा कहा |
15. पेड़ में पानी डालने के लिए घर की बाल्टियाँ, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियाँ लूट ली गई | जिन्हें ये चीजें भी न मिली वें डोंगे, कटोरे और गिलास ही ले भागे |

3. – जब सिनेमा ने बोलना सीखा

गद्यांश – 1

वें सभी सजीव हैं , सांस ले रहे हैं , शत – प्रतिशत बोल रहे हैं , अठहतर मुर्दा इनसान जिन्दा हो गए , उनको बोलते , बातें करते देखो | देश की पहली सवाक (बोलती) फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थी | 14 मार्च 1931 को यह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था | इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था | हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था | 'पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई , उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनी | मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था |

प्रश्न-1. आलम आरा फिल्म के पोस्टरों पर क्या लिखा था ?

प्रश्न-2. 14 मार्च 1931 को ऐतिहासिक तारीख क्यों माना जाता है?

प्रश्न-3. सवाक फ़िल्में किसे कहते हैं?

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न-4. सवाक फिल्मों से पहले किन फिल्मों का प्रचलन था?

प्रश्न-5. आलम आरा फिल्म में कितने कलाकारों ने काम किया था?

गद्यांश-2.

फिल्म की नायिका जुबैदा थी | नायक थे विट्ठल | वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पाने वाले स्टार थे | उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है | विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थी | पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया | विट्ठल नाराज हो गए और अपना हक़ पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया |

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे | विट्ठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने | उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही | मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लम्बे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे |

प्रश्न-1. आलम आरा फिल्म की नायिका कौन थी?

प्रश्न-2. आलम आरा फिल्म के नायक कौन थे?

प्रश्न-3. मेहबूब को नायक क्यों बनाया गया था?

प्रश्न-4. विट्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए क्या किया?

प्रश्न-5. विट्ठल का मुकदमा किसने लड़ा था?

गद्यांश 3

प्रस्तुत गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए ---

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत कराने वाले निर्माता-निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में ' आलम आरा 'के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है । मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है ।

प्रश्न 3

क) सवाक् फिल्मों के नए दौर की शुरुआत किसने की ?

ख) अर्देशिर को किस सम्मान से सम्मानित किया गया ?

ग) पुरस्कृत होने पर अर्देशिर ने क्या कहा ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

घ) सवाक फिल्मों से क्या मतलब है ?

ङ) 'आलम आरा फिल्म' कब प्रदर्शित हुई ?

4.पाठ से संबंधित प्रश्न

प्रश्न-1. आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से मिला?

प्रश्न-2. 14 मार्च 1931 की तिथि का भारतीय सिनेमा के इतिहास में क्या स्थान है?

प्रश्न-3. फिल्म में प्रकाश प्रणाली का जन्म कैसे हुआ?

प्रश्न-4. अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा को लगभग कितनी फ़िल्में बनाकर दी?

प्रश्न-5. आलम आरा फिल्म के नायक और नायिका के नाम लिखिए?

प्रश्न-6. मेहबूब को विट्ठल की जगह पर नायक के रूप में क्यों रखा गया?

प्रश्न-7. आलम आरा फिल्म को बनाने में कितना समय लगा?

प्रश्न-8. फिल्म के 25 वर्ष पूरे होने पर अर्देशिर को क्या कहकर सम्मानित किया गया?

प्रश्न-9. पहली बोलती फिल्म बनाने के दौरान फिल्मकार को फिल्म निर्माण से जुड़े किन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के अभाव का सामना करना पड़ा?

प्रश्न 10.: आलमआरा फिल्म के संगीत में प्रयुक्त वाद्ययंत्रों का नाम लिखिए।

प्रश्न 11. : लेखक ने आलमआरा की तुलना किस फेंटेसी फिल्म से की है?

प्रश्न 12: आलमआरा फिल्म को दर्शकों ने क्यों पसन्द किया, स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 13: सिनेमा के सवाक् होने पर उसमें क्या-क्या परिवर्तन हुए?

प्रश्न-14 'आलम आरा' के निर्माण में प्रयुक्त कौन से प्रणाली आगे चलकर फिल्म निर्माण का जरुरी हिस्सा बनी?

प्रश्न-15 दर्शकों को 'आलम आरा' फिल्म कैसी लगी?

प्रश्न 5. नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क) सवाक् शब्द से आप क्या समझते हैं ?

ख) 'आलम आरा 'फिल्म में किन वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया गया ?

ग) फिल्म निर्माता, अर्देशिर की कंपनी ने लगभग कितनी फिल्मों का निर्माण किया ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

घ) 'स्टंटमैंन' शब्द से आप क्या समझते हैं ?

ङ) 'आलम आरा' फिल्म कैसी थी ?

च) 'आलम आरा' फिल्म के नायक-नायिका कौन थे ?

छ) फैन्टेसी शब्द से आप क्या समझते हैं ?

ज) 'किरदार' का क्या अर्थ है ?

झ) 'खुदा की शान' फिल्म में किस किरदार की भूमिका थी ?

ञ) मूक फिल्मों में कैसे अभिनेता का चयन होता था ?

ट) सिनेमा ने किस भाषा को बढ़ावा दिया गया ?

ठ) फिल्मों का स्वरूप कैसे बदला ?

ड) भारतीय सिनेमा के जनक कौन माने जाते हैं ?

ढ) फाल्के ने अर्देशिर की किस उपलब्धि को अपनाया ?

ण) ब्रिटिश सरकार सवाक् फिल्मों के खिलाफ क्यों थी ?

उत्तर-कुंजी

गद्यांश-1.

1. 'आलम आरा फिल्म के पोस्टरों पर लिखा था,' वें सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत – प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहतर मुर्दा इनसान जिन्दा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो |'
2. क्योंकि इस दिन पहली बार भारतीय सिनेमा ने बोलना सीखा था | पहली बोलने वाली फिल्म आलम आरा प्रदर्शित की गई थी |
3. जिन फिल्मों में संवाद बोले जाते हैं , उन्हें सवाक फ़िल्में कहा जाता है |
4. सवाक फिल्मों से पहले मूक फिल्मों का प्रचलन था |
5. आलम आरा फिल्म में अठहतर कलाकारों ने काम किया था |

गद्यांश-2.

1. आलम आरा फिल्म की नायिका जुबैदा थी |
2. आलम आरा फिल्म के नायक विट्ठल थे |
3. विट्ठल को उर्दू बोलनी नहीं आती थी इसलिए मेहबूब को नायक बनाया गया था |
4. विट्ठल ने अपना हक़ पाने के लिए मुकदमा कर दिया |

docs.aglasem.com

aglasem.com

5. विट्ठल का मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा था जो उस जमाने के मशहूर वकील थे |

गद्यांश 3

क) सवाक फिल्मों के नए दौर की शुरुआत निर्माता निर्देशक अर्देशिर ने की ।

ख) अर्देशिर को 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

ग) पुरस्कृत होने पर अर्देशिर ने कहा – "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है । मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।"

घ) बोलने वाले कलाकारों की फिल्म ।

ङ) 'आलम आरा' फिल्म 1931 में प्रदर्शित हुई ।

4.पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

1. अर्देशिर ने पारसी रंगमंच के लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर अपनी फिल्म आलम आरा की पटकथा का निर्माण किया |
2. 14 मार्च 1931 की तिथि भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखी गई है | इस दिन प्रथम सवाक फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा हाल में हुआ था |
3. भारतीय इतिहास की पहली बोलती फिल्म आलम आरा की शूटिंग साउंड के कारण रात को करनी पड़ी थी | इसके लिए कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था करनी पड़ी थी | यहीं से प्रकाश प्रणाली का जन्म हुआ |
4. अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा को लगभग 150 से अधिक मूक और 100 से अधिक सवाक फ़िल्में बनाकर दी |
5. आलम आरा फिल्म के नायक विट्ठल और नायिका जुबैदा थी |
6. मेहबूब को विट्ठल की जगह पर नायक के रूप में इसलिए रखा गया क्योंकि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती थी |
7. आलम आरा फिल्म को बनाने में 4 महीने का समय लगा |

8. फिल्म के 25 वर्ष पूरे होने पर अर्देशिर को भारतीय सवाक फिल्मों के पिता कहकर सम्मानित किया गया |

9. पहली बोलती फिल्म बनाने के दौरान फिल्मकार को फिल्म निर्माण से जुड़े संवाद लेखक, गीतकार एवं संगीतकार जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के अभाव का सामना करना पड़ा।

10. आलमआरा फिल्म के संगीत में केवल तीन वाद्ययंत्रों-हारमोनियम, वायलिन एवं तबला का प्रयोग किया गया था।

docs.aglasem.com

aglasem.com

11. लेखक ने आलमआरा की तुलना 'अरेबियन नाइट्स' नामक फैंटेसी फिल्म से की है।

12. आलमआरा फिल्म जब 14 मार्च 1931 को मुम्बई के मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित हुई तो यह फिल्म इतनी लोकप्रिय हुई कि लगातार 8 सप्ताह तक हाउसफुल चली। इसे देखने के लिए इतनी भीड़ उमड़ती कि भीड़ को नियन्त्रित करने के लिए पुलिस को काफी मेहनत करनी पड़ती। मूक सिनेमा देखने के आदी दर्शकों के लिए यह बिलकुल ही नया अनुभव था। इस फिल्म की सफलता ने मूक सिनेमा के युग का अन्त कर दिया।

13. सिनेमा के सवाक् होने पर सबसे पहला बदलाव यह हुआ कि अब पढ़े-लिखे अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की जरूरत महसूस की गई। अब उन्हें अभिनय के साथ संवाद भी बोलना था। इसी समय गायन प्रतिभा की कद्र बढ़ी तथा गायक अभिनेताओं का आगमन हुआ। इसके अलावा कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था, गीत-संगीत आदि भी बेहतर रूप में दर्शकों को मिलने लगा।

14. 'आलम आरा' की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी जो आगे चल कर फिल्म निर्माण का जरुरी हिस्सा बनी।

15. दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हज़ार फुट लम्बी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था। फिल्म 8 सप्ताह तक हाउसफुल चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए उसे नियंत्रित करना मुश्किल हो जाया करता था।

प्रश्न 5.

क) यह शब्द वाक् शब्द से बना है जिसका अर्थ है बोलना 'स' उपसर्ग लगने से हुआ सवाक् अर्थ बोलने सहित ।

ख) आलम आरा फिल्म में तबला, हारमोनियम और वायलिन का प्रयोग किया गया है ।

ग) लगभग 150 मूक व 100 सवाक् फिल्में बनाई ।

घ) 'स्टंटमैंन' शब्द का अर्थ है करतब दिखाने वाला ।

ङ) 'अरेबियन नाइटस' जैसी मौज-मस्ती की ।

च) नायिका जुबैदा और नायक फालके ।

छ) फैन्टसी शब्द का अर्थ है मौज-मस्ती ।

docs.aglasem.com

aglasem.com

ज) 'किरदार' शब्द का अर्थ है भूमिका निभाना ।

झ) खुदा की शान फिल्म में महात्मा गाँधी किरदार की छाप थी ।

ञ) मूक फिल्मों में पहलवान जैसे शरीर वाले, करतब दिखाने वाले और उछलकूद करने वाले ।

ट) सिनेमा ने हिन्दी-उर्दू भाषा को बढ़ावा दिया ।

ठ) फिल्में दैनिक व सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब प्रस्तुत करने लगी इस तरह फिल्मों का स्वरूप बदला ।

ड) भारतीय सिनेमा के जनक 'फाल्के' माने जाते हैं ।

ढ) फाल्के ने अर्देशिर की नई उपलब्धि बोलते चलचित्र को अपनाया ।

ण) सवाक् फिल्मों की भाषा और वातावरण का सीधा प्रभाव जनता पर पड़ता था इसलिए ब्रिटिश सरकार सवाक् फिल्मों के खिलाफ थी ।

4. - सुदामा चरित

पद्यांश 1

प्रश्न 1 - निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प के आधार पर दीजिए-

1. सीस पगा न झँगा तन में, प्रभु ! जाने को आहि बसे केहि ग्रामा ।

धोती फटी-सी लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह को नहिं सामा ॥

द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक, रह्यो चकिसों बसुधा अभिरामा ॥

पूछत दीनदयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा ॥

1. द्वारपाल श्री कृष्ण को किसके बारे में बताता है?
    1. राज्य के बारे में
    2. मंत्री के बारे में
    3. सुदामा के बारे में
    4. प्रजा के बारे में
2. सुदामा के सिर पर क्या नहीं है?
    1. पगड़ी
    2. बाल
    3. चादर

docs.aglasem.com

aglasem.com

4. मुकुट

3. पंक्तियों में आए 'बसुधा' शब्द का क्या अर्थ है?
    1. महल
    2. धोती
    3. धरती
    4. मनोहर

    4.यहाँ दीनदयाल किसे कहा गया है?
    1. सुदामा
    2. श्री कृष्ण
    3. द्वारपाल
    4. मंत्री

पद्यांश 2

2- ऐसे बेहाल बिवाइन सों, पग कंटक जाल लगे पुनि जोए ।

हाय ! महादुख पायो सखा, तुम आए इतै न कितै दिन खोए ॥

देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोए।

पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए ॥

1. सुदामा के पाँवों में क्या लगे थे?
    1. काँटे
    2. कंकड़
    3. कीड़े
    4. फूल
2. सुदामा किसके सखा थे?
    1. मंत्री के
    2. द्वारपाल के
    3. श्री कृष्ण के
    4. ग्रामवासी के
3. सुदामा की दशा देखकर कौन रोने लगा?
    1. सैनिक
    2. श्री कृष्ण
    3. गाँव वाले
    4. द्वारपाल4श्री कृष्ण ने सुदामा के पैर किससे धोए?
    1. जल से
    2. आँसुओं से
    3. दूध से
    4. लस्सी से

docs.aglasem.com

aglasem.com

1. 'पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए' - मे कौन सा अलंकार है?

1. अनुप्रास
2. अतिश्योक्ति
3. यमक
4. उपमा

प्रश्न 3 – निम्नलिखिति प्रश्नो के उत्तर दीजिए-

1. सुदामा किस हाल में, श्री कृष्ण के पास गए थे?
2. द्वारपाल ने श्री कृष्ण को क्या बताया?
3. सुदामा कौन थे? वे श्री कृष्ण के पास क्यों गए थे?
4. सुदामा वसुधा को चकित होकर क्यों देख रहे थे?
5. श्री कृष्ण ने सुदामा के पैर कैसे धोए?
6. किसने किसके लिए सुदामा के माध्यम से उपहार भेजा था? वह उपहार क्या था?
7. सुदामा उस उपहार को क्यों छिपा रहे थे?
8. 'चोरी की बान में हौं जू प्रवीने' कृष्ण ने ऐसा क्यों कहा?
9. श्री कृष्ण ने सुदामा द्वारा लाए गये उपहार को कैसा बताया?
10. सुदामा को कृष्ण और द्वारका की कौन-कौन सी बातें याद आ रहीं थी?
11. 'कछू न जानी जात' के माध्यम से सुदामा क्या कहना चाहते थे?
12. कृष्ण के प्रति सुदामा अपनी खीझ किस प्रकार व्यक्त कर रहे थे?
13. 'वैसोई राज-समाज कहाँ बने' पंक्ति में 'वैसोई' शब्द क्या संकेत करता है?
14. यहाँ पाड़े किसके लिए प्रयुक्त है? लोगों से क्या पूछते फिर रहे थे?
15. 'कै पग में पनही न हती' सुदामा कि किस स्थिति की ओर संकेत करती है?

1. उत्तर-कुंजी

उत्तर-1 पद्यांश 1 – 1 (ग)
2 (क)
3 (ग)
4 (क)

पद्यांश 2- 1 (क)
2 (ग)

docs.aglasem.com
aglasem.com

3 (ख)

4 (ख)
5 (ख)

उत्तर 3- 1. सुदामा के शरीर पर न कुर्ता था और न सिर पर पगड़ी । उनके पैरों में जूते भी नहीं थे, इसी हाल में वह श्री कृष्ण के पास पहुँचे ।

2. द्वारपाल ने श्री कृष्ण से सुदामा की फटेहाली के बारे में बताया और फिर कहा कि दरवाजे पर खड़ा दुर्बल ब्राह्मण अपना नाम सुदामा बताते हुए आपका भवन पूछ रहा है।

3. सुदामा एक गरीब ब्राह्मण थे। वे श्री कृष्ण के बचपन के मित्र थे जो अपनी गरीबी से ऊबकर उनके पास कुछ मदद के लिए गए थे।

4. सुदामा गाँव के रहने वाले थे। उनके आसपास ऐसा सौदंर्य दुर्लभ था, इसलिए वह वसुधा को चकित हो देख रहे थे।

5. श्री कृष्ण ने सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात के पानी को छुआ नहीं। उन्होंने आँखों से गिरते आसुओं से ही उनका पैर धो दिया।

6. सुदामा की पत्नी ने सुदामा के माध्यम से उनके मित्र श्री कृष्ण के पास उपहार भेजा था। वह उपहार स्वरूप चावल लाए थे।

7. सुदामा उस उपहार (चवाल) को इसलिए छिपा रहे थे क्योंकि कहाँ द्वारकाधीश कृष्ण और ये सूखे चावल । उन्हें उपहार में इतनी तुच्छ वस्तु कैसे दें।

8. सुदामा बचपन में गुरुमाता द्वारा दिए गए चने चुपके से अकेले खा गए थे, और वे चावल की पोटली फिर छिपा रहे थे, इसलिए उन्होंने ऐसा कहा।

9. कृष्ण ने सुदामा के लाए चावलों को प्रेम रुपी अमृत से सना हुआ बहुत ही स्वादिष्ट बताया।

10. सुदामा को देखते ही कृष्ण का खुशी से भर उठना, उन्हें गले लगाना, सिंहासन पर बिठाना, पैर धोना, इतना आदर-सम्मान देना याद आ रहा था।

11. सुदामा ने 'कछू न जानी जात' के माध्यम से यह कहना चहाते थे कि श्री कृष्ण ने विदा करते समय यह भी ध्यान न रखा कि ब्राह्मण को खाली हाथ विदा नहीं करते हैं।

12. सुदामा कह रहे थे कि अरे यह वही कृष्ण है जो बचपन में जरा-सी दही माँगता-फिरता था। क्या हुआ जो वह आज द्वारकाधीश बन गया है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

13. वैसे ही राज-समाज सुदामा के गाँव में बने थे। यह 'वैसोई' शब्द द्वारका जैसे राज प्रासाद, वैभव, समृद्धि आदि की ओर संकेत करता है।

14. यहाँ 'पाड़े' शब्द ब्राह्मण सुदामा के लिए प्रयुक्त है। वे लोगों से अपनी झोंपड़ी के बारे में पूछ रहे थे, जिसे वे खोज-नहीं पा रहे थे।

15. इस पंक्ति के माध्यम से सुदामा की पहले वाली विपन्नता की ओर संकेत किया गया है।

5. -जहाँ पहिया है

गद्यांश 1

प्रश्न 1 – निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प के आधार पर दीजिए-

साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है? कुछ अजीब-सी बात है-है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोट्टई जिले की हजारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई-न-कोई तरीका निकाल ही लेते हैं। कभी-कभी ये तरीके अजीबो-गरीब होते हैं।

1. पुडुकोट्टई जिले में साइकिल चलाने का कैसा आंदोलन चला?
    1. राष्ट्रीय आंदोलन
    2. सामाजिक आंदोलन
    3. धार्मिक आंदोलन
    4. प्रादेशिक आंदोलन

2साइकिल चलाना 'सामाजिक आंदोलन' क्यों बन गया?
    1. समाज ने स्त्रियों को साइकिल चलाने की अनुमति दी।
    2. सभी क्षेत्रों की स्त्रियाँ साइकिल चलाने की ओर अग्रसर हुई।
    3. सभी क्षेत्रों को सरकार की ओर से साइकिल दी गई।
    4. इनमें से कोई नहीं।

3.'नवसाक्षर' शब्द से क्या तात्पर्य है?
    1. नया सीखने वाला
    2. नौ लोग सीखने वाले
    3. नया पढ़ने वाला

docs.aglasem.com
aglasem.com

4. नया साइकिल चलाने वाला

4. साइकिल चलाने ने यहाँ की महिलाओं को कैसे प्रभावित किया?
    1. अब समाज में उनका प्रभुत्व पुरुषों से बढ़ गया।
    2. अब वे अपने सभी कार्य स्वयं करने लगीं।
    3. महिलाओं को ऐसा लगा कि वे अपने पिछड़ेपन की जंजीरें तोड़कर स्वच्छंदता कि ओर बढ़ रही हैं।
    4. वे पुरुषों से आगे निकल गईं।
5. समाज के लोग अपने तरीके क्यों निकालते हैं?
    1. उन्नति की ओर बढ़ने के लिए
    2. नवीनीकरण को अपनाने के लिए
    3. रूढ़िवादिता को अपनाने के लिए
    4. दिए गए सभी।

गद्यांश 2

2- साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है – "बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है।" फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा –"साइकिल चलाने से मेरी कौन सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आजादी ओर खुशहाली का अनुभव कर सकूँ।" पुडुकोट्टई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैंने कभी साइकिल को आजादी का प्रतीक नहीं समझा था।

1. साइकिल प्रशिक्षण मे महिलाओं में क्या बदलाव आया?
    1. आत्मनिर्भरता बढ़ गई।
    2. आत्मसम्मान की भावना जागी।
    3. वे स्वयं को स्वच्छंद समझने लगीं।
    4. दिए गए सभी।
2. महिलाओं के साइकिल चलाने के बारे में लेखक की क्या सोच थी?
    1. आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ व आत्मानिर्भरता होना।
    2. पुरुषों से अलग रहने में भी संकोच न करना।
    3. प्रभुत्व जमाना
    4. इनमें से कोई नहीं।
3. फातिमा ने लेखक को क्या कहा?
    1. समाज अब स्त्री से सुदृढ़ व आत्मनिर्भरता होना।
    2. महिलाएँ साइकिल चलाने से आर्थिक संपन्नता के साथ-साथ आजादी व खुशहाली का अनुभव करती हैं।
    3. वे अब निडर हो गई हैं।

docs.aglasem.com

aglasem.com

4. अब बे कभी रूढ़िवादिता की जंजीरों में नहीं बँधेंगी।

4.लेखक की सोच में क्या परिवर्तन आया?

1. अब महिलाएँ पुरुषों का मुकाबला पूरी तरह से करेंगी।
2. अब पुडुकोट्टई खूब उन्नति करेगा।
3. साइकिल चलाना केवल महिलाओं के आनंद का नहीं बल्कि आजादी का प्रतीक है।
4. अब इस गाँव में आर्थिक संपन्नता आ जाएगी।

5. फातिमा साइकिल कैसे चलाती थी?

1.नई खरीदकर
2.किराए पर लेकर
3.अपनी सहेलियों से माँगकर
4.धीरे-धीरे डर-डर कर

प्रश्न 3 – निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. इस पाठ में किस स्थान का वर्णन है और क्यों?
2. साइकिल चलाने को सामाजिक आंदोलन क्यों कहा गाया है?
3. इस पाठ के आधार पर 'नवसाक्षर'का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
4. यहाँ की महिलाओं पर इस आंदोलन का क्या प्रभाव पड़ा।
5. जमीला कौन है? साइकिल सीखने से उसे क्या लाभ हुआ?
6. साइकिल चलाने का लाभ किस-किस वर्ग की महिलाएँ उठा रही हैं?

7 साइकिल चलाने का संबंध महिलाओं कि व्यक्तिगत आजादी से किस तरह जुड़ा है?

8 साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखने को असाधारण अनुभव क्यों कहा गया है?

9 कौन-सी महिलाएँ और कहाँ एकत्रित हुई थी?

10 साइकिल चलाना सीखने से महिलाओं को क्या लाभ हुआ?

11 लेखक ने यहाँ किस मामले में पुरुषों की राय जाननी चाही है?

12 महिलाएँ जेंट्स साइकिलें क्यों खरीदने लगीं?

13 साइकिल चलाना सीखकर महिलाएँ क्या बदलाव महसूस करने लगी हैं?

14 फातिमा हर शाम किराए पर साइकिल क्यों लेती थी?

15 लेखक को अपनी सोची कौन-सी बात मूर्खतापूर्ण लगी?

1. उत्तर-कुंजी

docs.aglasem.com

aglasem.com

<u>जहां पहिया है</u>

जहां पहिया है

उत्तर 2- गद्यांश 1- 1 (ख)

2 (ख)

3 (क)

4 (ग)

5 (घ)

गद्यांश 2 – 1 (घ)

2 (क)

3 (ख)

4 (क)

5 (ख)

उत्तर 4-1. इस पाठ में पुडुकोट्टई नामक स्थान का वर्णन है क्योंकि यहाँ की महिलाओं ने साइकिल चलाना सीखना शुरू कर दिया। यह स्थान तमिलनाडु में है।

2. साइकिल चलाने को सामाजिक आंदोलन कहा गया है क्योंकि यहाँ की अधिकतर महिलाएँ साइकिल सीखने के लिए आतुर एवं अग्रसर हो उठी।

3. यहाँ 'नवसाक्षर' शब्द का अर्थ वे महिलाएँ जिन्होंने साइकिल चलाना अभी जल्दी में सीखा है।

4. इस आंदोलन के प्रभाव से यहाँ की महिलाओं का पिछड़ापन दूर हुआ है। उनकी आजादी का दायरा बढ़ा है और उन्होंने अपने बंधनों को तोड़ा है।

5. जमीला पुडुकोट्टई की नवसाक्षर युवती है। साइकिल चलाना सीखने के कारण अब वह कभी भी आ-जा सकती है। उसे अब बसों का इंतजार नहीं करना पड़ता है।

6. साइकिल चलाना सीखकर खेतिहर मजदूर, पत्थर खदानों में काम करने वाली औरतें, गाँव में काम करने वाली नर्सें, बालबाड़ी कार्यकर्त्ता, ग्राम सेविकाएँ और अध्यापिकाएँ इसका लाभ उठा रही हैं।

7. साइकिल चलाना सीखकर महिलाएँ कहीं भी आने-जाने को स्वतंत्र है। वे अपने बचे समय का उपयोग अपनी मर्जी से कर सकती हैं। इस प्रकार महिलाओं की आजादी से इसका सीधा संबंध है।

8. साइकिल प्रशिक्षण शिविर में इतनी महिलाओं को एक साथ इकट्ठा तथा उनमें साइकिल सीखने की असाधारण उमंग दिखाई पड़ी जो असाधारण अनुभव था।

9. वे महिलाएँ जिनमें साइकिल चलाना सीखने की प्रबल अभिलाषा थी वे किलाकुरुचि गाँव में इकट्ठी हुई।

docs.aglasem.com

aglasem.com

10. साइकिल चलाना सीखने से महिलाएँ अपनी जिंदगी के परंपरागत ढंग को बदल सकी। इससे उनकी व्यक्तिगत आजादी बढ़ी।

11. लेखक ने यहाँ महिलाओं के साइकिल चलाना सीखने का मामला कितना उचित है, कितना अनुचित, इस पर पुरुषों की राय जाननी चाही है।

12. महिलाएँ लेडीज साइकिल आने का इंतजार नहीं कर सकती थी। उनमें सीखने की आतुरता थी, इसलिए वे जेंटस साइकिलें खरीदने लगीं।

13. साइकिल चलाना सीखकर महिलाएँ आजादी का अनुभव करने लगी है। वे कामकाज पर अधिक ध्यान देकर आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गई हैं।

14. फातिमा हर शाम किराए पर साइकिल इसलिए लेती है जिससे वह आजादी और खुशहाली का अनुभव कर सके।

15. लेखक सोचता थी कि महिलाएँ साइकिल चलाना सीखकर कुछ पैसे ही तो कमाती होंगी पर जब उसने आजादी वाली बात सुनी तो उसे अपनी सोची बात मूर्खतापूर्ण लगी।

6. अकबरी लोटा

पठित गद्यांश

गद्यांश -1

लोटे ने दाएँ देखा न बाएँ, वह नीचे गली की ओर चल पड़ा | अपने वेग में उल्का को लजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया | किसी जमाने में न्यूटन नाम के किसी खुराफाती ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति नाम की एक चीज ईजाद की थी | कहना न होगा कि यह सारी शक्ति इस समय लोटे के पक्ष में थी |

प्रश्न

प्रश्न१: यहाँ किस लोटे का वर्णन है ?

प्रश्न:२ लोटे की चाल के बारे में गद्यांश में क्या बताया गया है ?

प्रश्न३: न्यूटन कौन था ?

प्रश्न४: न्यूटन ने क्या खोज की थी ?

प्रश्न५: 'उल्का को लजाता हुआ' से क्या तात्पर्य है ?

गद्यांश -२

इसी समय प. बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े | उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़कर ओर जितने आदमी आँगन में घुस आए थे, सबको बाहर निकाल दिया | फिर आँगन में कुर्सी रखकर उन्होंने साहब से कहा – "आपके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है | अब आप आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए|"

1. बिलवासी मिश्र कौन थे ?
2. बिलवासी मिश्र किस समय आए ?
3. साहब किसे कहा गया है ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

4. आते ही बिलवासी मिश्र ने कौन-सा बुद्धिमानी का काम किया?
5. बिलवासी ने साहब का क्रोध शांत करने के लिए क्या किया ?

गद्यांश 3

"आप इस लोटे को रद्दी बताते हैं? आश्चर्य ! मैं तो आपको एक विज्ञ और सुशिक्षित आदमी समझता था।"
"आखिर बात क्या है, कुछ बताइए भी ।"
"जनाब यह एक ऐतिहासिक लोटा जान पड़ता है। जान क्या पड़ता है मुझे पूरा विश्वास है। यह वह प्रसिद्ध अकबरी लोटा है, जिसकी तलाश में संसार भर के म्यूजियम परेशान हैं ।"
प्रश्न

क) गद्यांश के अनुसार यहां किस लोटे की बात हो रही है।
ख) कौन लोटे को रद्दी बता रहा था और क्यों ?
ग) कौन, किसे विज्ञ आदमी समझ रहा था ? यह बात उन्होंने किस भाव से कही ?
घ) किसने लोटे को ऐतिहासिक कहा और क्यों?
ङ) अकबरी लोटा कहकर लोटे की किस विशेषता की तरफ संकेत किया गया है?

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1."लाला ने लोटा ले लिया , बोले कुछ नहीं , अपनी पत्नी का अदब मानते थे।"
प्रश्न 2. "लाला झाउलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।'' आपके विचार से लाला झाउलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी ?
प्रश्न 3. अंग्रेज़ के सामने बिलवासी जी ने झाऊलाल को पहचानने तक से क्यों इनकार कर दिया था ? आपके विचार से बिलवासी जी ऐसा अजीब व्यवहार क्यों कर रहे थे ? स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 4. बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था ? लिखिए।
प्रश्न 5. आपके विचार में अंग्रेज ने वह पुराना लोटा क्यों खरीद लिया ? आपस में चर्चा करके वास्तविक कारण की खोज कीजिए और लिखिए।
प्रश्न 6. बिलवासी जी के चरित्र से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?
प्रश्न 7. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि विवेक से हर समस्या का हल हो जाता है।

प्रश्न 8. इस कहानी के लिए 'अकबरी लोटा' शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार लिखिए ।

प्रश्न 9. : वजू करना क्या है ?
प्रश्न 10. यह कहानी आज के युवाओं को क्या सन्देश देती है ?

<u>अनुमान और कल्पना</u>

प्रश्न 1 ."इस भेद को मेरे सिवाय मेरा ईश्वर ही जानता है। आप उसी से पूछ लीजिए मैं नहीं बताऊंगा" बिलवासी जी ने यह बात किससे और क्यों कहीं ? लिखिए।

docs.aglasem.com
aglasem.com

प्रश्न 2.उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।"

<u>क्या होता यदि</u>

प्रश्न 1. अंग्रेज़ लोटा न खरीदता ?
प्रश्न 2. यदि अंग्रेज़ पुलिस को बुला लेता ?
प्रश्न 3. जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे , तभी उनकी पत्नी जाग जाती तो ?

1. उत्तर-कुंजी

अकबरी लोटा

गद्यांश -1

1. उत्तर – अकबरी लोटे का |
2. उत्तर- लोटे की चाल आकाशीय पिंड से टूटे उल्का के समान थी |
3. उत्तर – एक वैज्ञानिक था |
4. उत्तर – पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज की थी |
5. उत्तर- उल्का (आकाशीय पिंड)की रफ़्तार से भी तेज |

गद्यांश -2

1. उत्तर – लाला झाऊलाल के मित्र थे |
2. उत्तर – जब चोट खाई तो अंग्रेज गालियाँ देता हुआ अंदर आ गया था |
3. उत्तर – अंग्रेज को |
4. उत्तर – अंग्रेज को छोड़कर बाक़ी सभी को बाहर निकाला |
5. उत्तर – उसे कुर्सी पर बैठाया और कहा शायद आपको कुछ चोट आ गई है|

गद्यांश 3

उत्तर क : यहां उस लोटे की बात हो रही है जिस लोटे से अंग्रेज को चोट लगी थी तथा जिसके पानी से वह भीग गया था।
उत्तर ख. लोटे को अंग्रेज रद्दी बता रहा था क्योंकि वह पुराना था और बेढंगा भी था ।
उत्तर ग. बिलवासी मिश्र उस अंग्रेज को विज्ञ समझ रहे थे। यह बात उन्होंने व्यंग्य के भाव से कही ?
उत्तर घ. अंग्रेज की नजर में उस लोटे को महत्व देने के लिए बिलवासी जी ने उसे ऐतिहासिक कहा था ताकि उस अंग्रेज की नजरों में उसका महत्व बढ़ जाए।
उत्तर ड़ अकबरी लोटा कहकर उसके मुगल काल से संबंधित होने के बारे में बताया गया है। इससे उसके शाही घराने से संबंध का ज्ञान भी होता है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

1. उत्तर – लाला झाऊलाल को वह बेढंगा व बदसूरत लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने अपनी पत्नी के हाथ से चुपचाप लोटा ले लिया क्योंकि वे अपनी पत्नी के स्वभाव से अच्छी तरह से परिचित थे। वो ये अच्छी तरह से जानते

docs.aglasem.com
aglasem.com

थे कि अभी तो लोटे में पानी मिला है। अगर थोड़े से भी नखरे दिखाये तो भोजन बाल्टी में भी करना पड़ सकता हैं । इसीलिए उन्हें चुप रहने में ही समझदारी दिखी।

2. उत्तर –लोटे के गली में गिरने के थोड़ी देर बाद ही शोर मचाती एक बड़ी सी भीड़ लालाजी के आंगन में घुस आई थी और उसी भीड़ के साथ-साथ पानी से भीगा हुआ एक अंग्रेज अपने पैर को थामे , गालियां करता हुआ लाला जी के सामने पहुंच गया। उसे देखकर लाला जी को सारी बात समझ में आ गई कि लोटा जाकर सीधे इस अंग्रेज को लगा हैं। इसीलिए उन्होंने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी।
3. उत्तर – उस अजीब सी परिस्थिति में भी बिलवासी जी को लालाजी की समस्या हल करने की योजना सूझी। ऐसे में अगर वो लालाजी को अपना परिचित बताते तो उनकी पैसों की समस्या हल नहीं हो पाती। इसीलिए उन्होंने अपनी योजना के तहत ही अंग्रेज के सामने अजीब सा व्यवहार करना शुरू कर दिया। लालाजी को अपशब्द कहने शुरू कर दिए। उनके इस नाटक से अंग्रेज को उन पर जरा सा भी संदेह नहीं हुआ और उनकी योजना भी आसानी से सफल हो गई।
4. उत्तर –बिलवासी जी ने 250/-रूपये का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी कर किया था। लेकिन योजना सफल होने के बाद जब लालाजी की समस्या हल हो गई तो , पंडित जी ने वो पैसे ईमानदारी से अपनी पत्नी के संदूक में वापस रख दिए।
5. उत्तर – उस अंग्रेज ऑफिसर को पुरानी व ऐतिहासिक चीजों को इकट्ठा करने का शौक तो था ही , साथ में वह अपने पड़ोसी मेजर डगलस को भी नीचा दिखाना चाहता था। मेजर डगलस के पास एक जहांगीरी अंडा था जिसे दिखाकर वह अक्सर उस अंग्रेज पर रौब जमाता था। इसीलिए अंग्रेज ने इसे अकबरी लोटा समझकर 500/- रूपये में खरीद लिया।
6. उत्तर : बिलवासी जी के चरित्र से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मुसीबत में फंसे मित्र की सहायता अवश्य करनी चाहिए। यदि उसके लिए हमें परेशानी उठानी भी पड़े तो भी इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।
7. उत्तर : यह सच है की विवेक से हर समस्या का हल खोजा जा सकता है। यह कहानी से भली-भांति स्पष्ट हो जाता है। बिलवासी मिश्र ने समय पर अपने विवेक का प्रयोग किया । उन्होंने लाला जी को न केवल थाने जाने से बचाया बल्कि उनकी जरूरत से अधिक पैसों का प्रबंध भी कर दिया।
8. उत्तर : इस कहानी के लिए अकबरी लोटा शीर्षक पर विचार करने से पता चलता है की यह कहानी बेढ़ब आकार वाले लोटे से शुरू होती है , जिसे लाला झाऊलाल देखना भी पसंद नहीं करते । यही लोटा एक अंग्रेज के पैर पर गिर कर उनके लिए मुसीबत बन जाता है , तो यही लोटा ऐतिहासिक अकबरी लोटा के नाम से बिककर लाला झाऊलाल की समस्या से अधिक पैसा दिला देता है | सारी कहानी इसी लौटे के इर्द-गिर्द घूमती है | कहानी में जहांगीरी अंडे का भी

docs.aglasem.com
aglasem.com

प्रसंग है पर वह बहुत संक्षिप्त है। इस कहानी के लिए यह शीर्षक पूर्णतया सार्थक व उपयुक्त है।

9. उत्तर-नमाज पढ़ने से पहले मुसलमान अपने हाथ पैर धोते है जिसे वजू करना कहते हैं |

10. उत्तर : यह कहानी सन्देश देती है कि वास्तविकता और सच्चाई को जाने बिना ,विदेशी लेबल देखकर वस्तुओं को खरीदने के लिए लालायित नहीं होना चाहिए अन्यथा उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है |

<u>अनुमान और कल्पना</u>

उत्तर 1 – लाला झाऊलाल के बिलवासी जी से यह पूछने पर कि "पैसों का इंतजाम कहाँ से किया"।तब यह बात बिलवासी जी ने लाला झाऊलाल से कहीं थी। दरअसल बिलवासी जी ने वो पैसे अपनी पत्नी के संदूक से चुराए थे। और वो यह बात लाला जी को नहीं बताना चाहते थे।

उत्तर 2. – उस रात बिलवासी जी को देर रात तक नींद नहीं आई क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नी के संदूक से 250 /- रूपये चुराए थे और समस्या हल हो जाने के बाद वो उन पैसों को वापस अपनी पत्नी के संदूक में रखना चाहते थे। लेकिन संदूक की चाबी पत्नी के गले में पड़ी सिगड़ी में बंधी थी । जिसे वो पत्नी के सो जाने के बाद ही निकाल सकते थे। इसीलिए वे अपनी पत्नी के सोने का इंतजार कर रहे थे। जब उनकी पत्नी सो गई तब उन्होंने चाबी निकाली और संदूक खोल कर पैसे वापस उसमें रख दिए।

उत्तर 3– लालाजी की पत्नी , लालाजी की "वादा करके मुकर जाने की आदत" से अच्छी तरह से वाकिफ थी। इसीलिए वह उन पर भरोसा नहीं कर पा रही थी कि लालाजी उन्हें वास्तव में पैसे देंगे ही देंगे ।वह इस बार कोई धोखा नहीं खाना चाहती थी। इसलिए वह इस बात को पक्का कर लेना चाहती थी कि लालाजी पैसे देंगे या नहीं।

<u>क्या होता यदि ?</u>

उत्तर – दो बातें हो सकती हैं।

1 . बिलवासी जी को अपनी पत्नी से चुराए हुए पैसों से लाला झाऊलाल की समस्या हल करनी पड़ती।

Ii . लाला झाऊलाल अपनी पत्नी को पैसे नहीं दे पाते तो , उन्हें अपनी पत्नी के सामने बेइज्जत होना पड़ता ।

उत्तर2. – पूरी सम्भवना थी कि लाला झाऊलाल को गिरफ्तार कर लिया जाता।

उत्तर 3. उत्तर – पत्नी चोरी का इल्जाम उन पर अवश्य लगाती। और उन्हें अपनी पत्नी के सामने शर्मिंदा होना पड़ता और संभवत: पत्नी से माफी भी मांगनी पड़ती ।

docs.aglasem.com

aglasem.com

7.सूरदास के पद (कविता)

काव्यांश आधारित प्रश्नोत्तर ----

काव्यांश---1

*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें ---

मैया ,कबहिं बढ़ेगी चोटी ?

किती बार मोहि दूध पियत भई ,यह अजहूँ है छोटी |

तू जो कहति बल की बनी ज्यों ,ह्वै है लांबी-मोटी |

काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै ,नागिनी सी भुईं लोटी |

कांचो दूध पियावत पचि -पचि, देति न माखन-रोटी |

सूर चिरजीवौ दोउ भैया ,हरि-हलधर की जोटी |

प्रश्न—1—इस पद में कौन, किससे , क्या पूछ रहा है ?

प्रश्न-2- माता यशोदा ने कृष्ण को क्या बताया था ?

प्रश्न—3-माता यशोदा बालक कृष्ण को क्या देती थीं ?

प्रश्न-4-काव्यांश में किस जोड़ी की बात की गई है ?

प्रश्न-5—काव्यांश किस भाषा में लिखा गया है ?

काव्यांश -2

* निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें ----

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ |

दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढिं-ढंढोरि आपही आयौ |

खोलि किवारि ,पैठि मंदिर मै,दूध-दही सब सखनि खवायौ |

ऊखल चढि, सींके को लीन्हों ,अनभावत भुइं मैं ढरकायौ |

दिन प्रति हानि होति गोरस की ,यह ढोटा कौनें रंग लायौ |

docs.aglasem.com

aglasem.com

सूर स्याम को हटकि न राखैं तैं ही पूत अनोखो जायौ |

प्रश्न-1- कौन, किसके पास ,किसकी शिकायत लेकर गया ?

प्रश्न-2- कृष्ण ने एक गोपी के घर क्या किया ?

प्रश्न –3—गोपी ने कृष्ण पर क्या आरोप लगाया ?

प्रश्न –4—क्या बालक कृष्ण अकेले ही सारा माखन खा जाते थे?

प्रश्न—5—'दूध-दही' में कौन-सा समास है ?

पाठ आधारित प्रश्न (सूरदास के पद)

प्रश्न—1. बालक कृष्ण माता यशोदा से क्या पूछते है ?

प्रश्न—2.बालक कृष्ण को किस बात पर हैरानी हो रही है ?

प्रश्न-3.बालक कृष्ण को क्या खाना पसंद था ?

प्रश्न—4. बालक कृष्ण किससे और क्या शिकायत कर रहे हैं ?

प्रश्न.—5 —बलराम की चोटी की समानता किससे की गई है ?

प्रश्न—6— 'हरि -हलधर' किन्हें कहा गया है ?

प्रश्न-7- कवि सूरदास जी ने बालक कृष्ण और बलराम को कौन-सा आशीर्वाद दिया ?

प्रश्न—8-एक गोपी माँ यशोदा के पास क्या शिकायत लेकर आई थी ?

प्रश्न—9—गोपी ने किस पर क्या आरोप लगाया और क्यों ?

प्रश्न—10—गोपी ने माँ यशोदा पर क्या व्यंग्य किया ?

प्रश्न—11—बालक कृष्ण माखन कैसे चुराते थे ?

प्रश्न-12—दूसरे पद में किस वस्तु की हानि की बात की गई है ? इस हानि का जिम्मेदार किसे ठहराया गया है ?

प्रश्न—13—'अनोखा' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों ?

प्रश्न—14—आप बालक कृष्ण के बारे में क्या धारणा रखते हैं ?

प्रश्न-15—आपके विचार से बालक कृष्ण माखन की चोरी क्यों करते होंगे ?

1. उत्तर-कुंजी

docs.aglasem.com

aglasem.com

2. <u>सूरदास के पद</u>

काव्यांश---1

उत्तर –1—बालक कृष्ण अपनी माँ यशोदा से अपनी चोटी न बढ़ने का कारण पूछ रहे हैं |

उत्तर-2- माता यशोदा ने कृष्ण को बताया था कि नित्यप्रति दूध का सेवन करने से उनकी चोटी भी बलराम की चोटी की तरह ही लम्बी -मोटी हो जायेगी |

उत्तर-3- माँ यशोदा बालक कृष्ण को दूध पीने को देतीं थीं |

उत्तर—4- काव्यांश में कृष्ण और बलराम की जोड़ी की बात की गई हैं |

उत्तर –5—काव्यांश ब्रज भाषा में लिखा गया है |

काव्यांश—2

उत्तर-1- गोपी माँ यशोदा के पास बालक कृष्ण की शिकायत लेकर गई |

उत्तर-2- कृष्ण ने उसके घर में घुस कर माखन की चोरी की |

उत्तर-3- गोपी ने कृष्ण पर माखन चोरी का आरोप लगाया |

उत्तर-4-नहीं,बालक कृष्ण सब सखाओं के साथ मिलकर माखन खाते थे |

उत्तर-5-इसमें द्वंद्व समास है |

<u>पाठ आधारित प्रश्न (सूरदास के पद)</u>

उत्तर—1—बालक कृष्ण माता यशोदा से यह प्रश्न पूछते हैं कि उनकी चोटी कब बढेगी उन्हें दूध पीते-पीते बहुत देर हो गई है , लेकिन चोटी ज्यों की त्यों छोटी है |

उत्तर—2—बालक कृष्ण को माँ यशोदा ने यह प्रलोभन दिया था कि लगातार दूध पीने से उनकी चोटी बड़े भाई बलराम की चोटी की तरह ही लम्बी और मोटी हो जायेगी , लेकिन चोटी बलराम भाई की चोटी की तरह न तो लम्बी हुई और न ही मोटी | यही उनकी हैरानी का कारण है कि माँ यशोदा का कथन असत्य साबित क्यों हो रहा है |

उत्तर—3—बालक कृष्ण को माखन-रोटी खाना पसंद था |

उत्तर—4—बालक कृष्ण माँ यशोदा से चोटी न बढ़ने की शिकायत कर रहे हैं |

उत्तर—5 – बलराम की चोटी की समानता नागिन से की गई है |

उत्तर—6—हरि -हलधर कृष्ण और बलराम को कहा गया है |

docs.aglasem.com

aglasem.com

उत्तर—7—कवि सूरदास जी ने बालक कृष्ण और बलराम को चिरकाल तक जीवित रहने का आशीर्वाद दिया |

उत्तर—8—एक गोपी माँ यशोदा के पास बालक कृष्ण की शिकायत लेकर आयी थी बालक कृष्ण नित्यप्रति उनके घर में अपने ग्वाल सखाओं को लेकर घुस जाते और माखन को चुरा कर खा जाते थे| इससे उस गोपी को बहुत हानि हो रही थी |

उत्तर—9—गोपी ने बालक कृष्ण पर माखन चोरी का आरोप लगाया | वह बालक कृष्ण किए जा रहे इस नुक्सान से बहुत दुखी थी| उसने माँ यशोदा से इसकी शिकायत करना उपयुक्त समझा|

उत्तर—10—गोपी ने माँ यशोदा पर यह व्यंग्य किया कि उसने एक ऐसे विचित्र बालक को जन्म दिया है जो अपने घर में भरपूर माखन उपलब्ध होने पर भी दूसरों के घरों में माखन की चोरी करता रहता है |

उत्तर—11—बालक कृष्ण अपने बाल सखाओं के साथ गोपियों के घरों में दोपहर के समय जा घुसते थे| उस समय सभी गोपियाँ दही-माखन बेचने के लिए चली जातीं थीं | कृष्ण अपने मित्रों के सहयोग से ऊखल पर चढ़ कर छींके तक जा पहुँचते थे | वहाँ टंगे हुए माखन के बर्तन को उतार लेते और उसमें रखे हुए माखन को सभी सखाओं के साथ मिलकर खाते थे |

उत्तर—12 —दूसरे पद में गोरस की हानि की बात की गई है | इस हानि का जिम्मेदार बालक कृष्ण को ठहराया गया है |

उत्तर—13—अनोखा विशेषण बालक कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है | चूँकि पूरे गाँव में कृष्ण ही एक ऐसा बालक था जो अपने घर में भरपूर माखन होने पर भी दूसरों के घरों से माखन चुराया करता था |

उत्तर—14—हम बालक कृष्ण की क्रियाओं को बाल-सुलभ मानते हैं | बालक स्वभाव से ही जिज्ञासु होते हैं ,इसीलिए बालक कृष्ण को हैरानी होती है कि दूध पीते रहने के बावजूद भी उनकी चोटी क्यों नहीं बढ़ रही है ? बालक कृष्ण को माखन प्रिय था | माँ यशोदा उन्हें गाय का कच्चा दूध पीने को देती थीं | माखन-रोटी कम देती थीं | हमारे विचार से इसीलिए बालक कृष्ण दूसरों के घर से माखन चोरी करते थे |

उत्तर—15—हमारे विचार से इसके दो कारण हैं - पहला यह कि माँ यशोदा उन्हें दूध पीने को देती थीं ,जबकि कृष्ण को माखन खाना पसंद था इसलिए वे माखन चोरी करते होंगे | दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि कृष्ण में स्वाभाविक बाल सुलभ चंचलता अधिक थी| बच्चे अक्सर हमउम्र बच्चों के साथ मिलकर ऐसे कार्य कर लेते हैं |

docs.aglasem.com

aglasem.com

8. पानी की कहानी

पाठ पर आधारित गद्यांश –1

1. "वह जो पेड़ तुम देखते हो न !" वह ऊपर ही इतना बड़ा नहीं है,पृथ्वी में भी लगभग इतना ही बड़ा है |उसकी बड़ी-बड़ी जड़े,छोटी जड़े और जड़ों के रोएँ हैं | वे रोएँ बड़े निर्दयी होते हैं | मुझ जैसे असंख्य जल-कणों को वे बलपूर्वक पृथ्वी में से खींच लेते हैं |कुछ को तो पेड़ एकदम खा जाते हैं और अधिकाँश का सबकुछ छीनकर उन्हें बाहर निकाल देते हैं |"

   (क)उपर्युक्त गद्यांश में वक्ता कौन है ?
   (ख) पृथ्वी में से असंख्य जल-कणों को बलपूर्वक कौन खींच लेते हैं?
   (ग) पेड़ की जड़ों के रोएँ को निर्दयी की संज्ञा किसने दी है ?
   (घ) 'असंख्य' और 'अधिकाँश' शब्दों में से उपसर्ग छांटिए |
   (ड.) 'बड़ी-बड़ी' में कौन-सा समास है ?

गद्यांश –2

हम एक बार बड़ी ऊँची शिखर पर से कूदे और नीचे एक चट्टान पर गिरे | बेचारा पत्थर हमारे प्रहार से टूटकर खंड-खंड हो गया | यह जो तुम इतनी रेत देखते हो पत्थरों को चबा-चबा कर हमीं बनाते हैं | जिस समय हम मौज में आते हैं तो कठोर से कठोर वस्तु हमारा प्रहार सहन नहीं कर सकती |

(क)ऊँची शिखर से नीचे चट्टान पर कौन कूदा ?

(ख) किसके प्रहार से पत्थर टूटकर चकनाचूर हो गए ?

(ग) पत्थरों को चबाकर रेत कौन बनता है ?

(घ) 'प्रहार' और 'बेचारा' शब्दों में से उपसर्ग छांटिए |

(ड.)उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

पाठ पर आधारित अभ्यास के प्रश्नोत्तर –

प्रश्न-1.लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली ?

प्रश्न-2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?

प्रश्न-3. हाइड्रोजन और आक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज क्यों कहा है?

प्रश्न-4. ओस की बूँद लेखक को आप बीती सुनाते हुए किसकी प्रतीक्षा कर रही थी ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न-5.पानी की कहानी और जलचक्र में आपको क्या-क्या समानता नजर आती हैं ?

प्रश्न-6.समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और गरमी क्यों नहीं पड़ती ?

प्रश्न-7. पेड़ों की जड़ों से पत्तों तक पानी को पंहुचाने की क्रिया को क्या कहते हैं ?

प्रश्न-8.जल की कितनी अवस्थाएँ होती हैं और उसमें कौन-सी हल्की होती है ?

प्रश्न-9. ओस को उड़ने की शक्ति किससे मिलती है?

प्रश्न-10.ओस की बूँद और लेखक के बीच हुई प्रथम वार्ता को संवाद रूप में लिखिए |

प्रश्न 11) लेखक के हाथ पर बेर की झाड़ी से क्या गिरा?

प्रश्न 12) सितार के तारों सी झंकार कहाँ-से उत्पन्न हुई थी?

प्रश्न 13) बूँद किसके समान थी?

प्रश्न 14) लेखक ने बूँद को क्या आश्वासन दिया ?

प्रश्न 15) प्रकाश-पिंड कैसा दिखाई पड़ रहा था?

उत्तर-कुंजी

पानी की कहानी

उत्तर-(क) पानी की बूँद

ख) पेड़ की जड़ों के रोएँ |

(ग) पानी की बूँद ने |

(घ) 'अ' और 'अधि' |

(ड.) अव्ययीभाव समास |

<u>गद्यांश –2</u>

उत्तर –(क)पानी की बूंदें |

(ख) पानी की बूंदों के प्रहार से |

(ग) पानी की बूँदें |

docs.aglasem.com

aglasem.com

(घ) 'प्र' और 'बे' |

(ड.) 'पानी की कहानी' नामक पाठ से |

<u>पाठ पर आधारित प्रश्न उत्तर</u>

उत्तर1 - रात के समय लेखक जब जा रहा था ,तब बेर के वृक्ष के ऊपर से एक बूँद आकर लेखक की हथेली पर गिरी | यह बूँद मोती के सामान चमक रही थी | बूँद को देखकर लेखक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा |

उत्तर2 -क्योकि पेड़ की जड़ें तथा जड़ों पर उगने वाले रोएँ बड़े निर्दयी होते हैं |ये असंख्य बूंदों एवं जल कणों को बलपूर्वक पृथ्वी से खींच लेते हैं |

उत्तर3 - अरबों वर्ष पहले हाइड्रोजन और ऑक्सीजन नामक दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थी |जिनकी रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप पानी का जन्म हुआ था |

उत्तर4 -कहानी के अंत और आरम्भ को पढ़कर स्वयं यह पता चलता है कि ओस की बूँद लेखक को आप बीती सुनाते हुए सूर्य की प्रतीक्षा कर रही थी |

उत्तर5 -पानी की कहानी और जलचक्र में निम्नलिखित समानताएं हैं-

१.पानी की बूँद सूर्य उदय के पश्चात वाष्पित हो जाती है |

२.वायुमंडल में भ्रमण कर मेघों द्वारा वर्षा के रूप में धरती पर गिरती हैं |

उत्तर6 -समुद्र के किनारे या समीप के वातावरण में आर्द्रता अधिक होती है क्योंकि समुद्र के पानी में नमक अधिक होता है | इसलिए समुद्र के समीप के वातावरण में न अधिक गरमी पड़ती है और न अधिक सर्दी पड़ती है |

उत्तर7 -प्रकाश संश्लेषण क्रिया कहते हैं |पौधे सूर्य के प्रकाश से क्लोरोफिल को अवशोषित करके अपना भोजन तैयार करते हैं |

उत्तर8 -जल की दो अवस्थाएँ होती हैं-तरल और ठोस | ठोस तरल से हल्की होती है |

उत्तर 9 - 'ओस' पानी की एक बूँद होती है |अधिक ठन्डे स्थान पर यह जमकर बर्फ का रूप धारण कर लेती है | सूर्य का ताप पाकर यह 'ओस' भाप बनकर आकाश में उड़ जाती है और सूर्य से इसे उड़ने की शक्ति मिलती है

उत्तर 10-लेखक और ओस बूँद के बीच संवाद निम्न प्रकार से हुए –

ओस की बूँद :"सुनो,सुनो....."

लेखक :मैं चुप था |
ओस की बूँद :फिर आवाज आई ,"सुनो,सुनो"

docs.aglasem.com

aglasem.com

लेखक :अब मुझ से न रहा गया |मेरे मुख से निकल गया ,"कहो,कहो |"
ओस की बूँद :ओस की बूँद मानो प्रसन्नता से हिली और बोली –"मैं ओस हूँ |"
लेखक :"जनता हूँ"-मैंने कहा |
ओस की बूँद:"लोग मुझे पानी कहते हैं ,जल भी |"
लेखक:"मालूम है |"

ओस की बूँद :"मैं बेर के पेड़ में से आई हूँ |"

11) लेखक के हाथ पर बेर की झाड़ी से पानी की बूंद आकर गिरी ।
12) सितार के तारों सी झंकार बूँद से उत्पन्न हुई थी।
13) बूँद मोतियों के समान थी।

14) लेखक ने उसे आश्वासन दिया कि जब तक वह लेखक के पास है तब तक कोई भी उसे हानि नहीं पहुँचा सकता।

15) प्रकाश-पिंड अत्यंत चमकदार दिखाई पड़ रहा था ।

9.बाज और साँप

पाठ पर आधारित गद्यांश-

1. "आकाश में असीम शून्यता में एक ऐसा आकर्षण छिपा है | जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए ? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया |न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है ?एक बार तो मैं भी वहां जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊंगा,चाहे कुछ देर के लिए ही हो |कम से कम उस आकाश का स्वाद चख लूँगा |"

   (क)बाज ने किसके लिए अपने प्राण गँवा दिए ?
   (ख) बाज मरते समय किसके दिल का चैन ले गया ?
   (ग) साँप ने आकाश में उड़ने की कोशिश क्यों की ?
   (घ)'असीम' और 'आकाश' शब्दों में से उपसर्ग छांटिए |
   (ड.)उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

गद्यांश –2

1. ईश्वर भला करे , मरते-मरते बच गया | अब तो मेरी यह बात और भी पक्की हो गई है कि अपनी खोखल से बड़ा सुख और कहीं नहीं है | धरती पर रेंग लेता हूँ ,मेरे लिए यह बहुत कुछ है | मुझे आकाश की स्वछंदता से क्या लेना –देना है ? न वहां छत है , न

docs.aglasem.com
aglasem.com

दीवार हैं ,न रेंगने के लिए जमीन है | मेरा तो सर चकराने लगता है दिल काँप-काँप जाता है | अपने प्राणों को खतरे में डालना कहाँ की चतुराई है |

1. उपर्युक्त गद्यांश में वक्ता कौन हैं ?
2. साँप ने सबसे बड़ा सुख कहाँ बताया है ?
3. साँप ने अपने प्राणों को खतरे में डालने की बात क्यों कही ?
4. 'स्वछंदता' व्याकरणिक दृष्टि से क्या है ?
5. 'मरते-मरते' में कौन-सा समास है ?

<u>पाठ पर आधारित अभ्यास के प्रश्नोत्तर –</u>

प्र 3 नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर लिखो -

1. **बाज और साँप कहानी के लेखक कौन हैं ?**
2. **साँप कहाँ रहता था ?**
3. **अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप क्या देखता रहता था ?**
4. **साँप गुफा में बैठ कर अपने बारे में क्या सोचता था ?**
5. **गुफा में जब बाज गिरा तो उसकी दशा कैसी थी ?**
6. **घायल बाज को देख कर साँप क्यों खुश हुआ ?**

7.बाज अपनी जिन्दगी से क्यों संतुष्ट था ?
8. बाज जिन्दगी भर आकाश में उड़ता रहा घायल होने के बाद भी वह आकाश में क्यों उड़ना चाहता था ?
9. गुफा को देख कर बाज के मुंह से करुणा भरी चीख क्यों फूट पड़ी ?
10. बाज ने उड़ने की कोशिश क्यों की ?
11. बाज ने किस तरहं अपने प्राण गंवा दिए ?
12. साँप बाज को मूर्ख क्यों समझता था ?
13. बाज के मरने पर लहरों ने गीत क्यों गया ?
14. इस कहानी का शीर्षक लेखक ने ' 'बाज और साँप' क्यों रखा ?
1. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर-कुंजी

<u>बाज और साँप</u>

उत्तर –१

1. आकाश की असीम ऊंचाई को छूने के लिए |
2. साँप के दिल का चैन ले गया |
3. बाज का आकाश के प्रति मोह देखकर |
4. 'अ' और 'आ' |
5. बाज और साँप |

docs.aglasem.com

aglasem.com

उत्तर २

(क) साँप |

(ख) साँप ने सबसे बड़ा सुख अपनी खोखल में बताया है

(ग) क्योंकि साँप रेंगने वाला जीव है उसके लिए उड़ना प्राणों को खतरे में डालना है |

(घ)भाववाचक संज्ञा

(ड.)अव्ययीभाव समास |

प्रश्न 3 - पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर ------

1. लेखक का नाम -निर्मल वर्मा
2. साँप समुद्र के किनारे बनी एक पथरीली गुफा में रहता था |
3. अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप ,समुद्र की लहरों की गर्जन,आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, नदी की ,गुस्से से भरी आवाजें सुना करता और अपनी गुफा को देखा करता था
4. गुफा में बैठा हुआ साँप यही सोच कर संतुष्ट था कि वह गुफा का स्वामी है ,वह दुनियां की भाग दौड़ से दूर ,और छीना झपटी से दूर है सुखी और सुरक्षित है |
5. गुफा में जब बाज गिरा तो वो घायल था| पंख खून से सने थे |अधमरा हो कर जोर शोर से हांफ रहा था |
6. साँप इसलिए खुश हुआ क्योंकि उसने सोचा कि बाज इतना घायल है कि उसे किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा सकता |
7. क्योंकि बाज ने स्वतंत्रता से उड़ते हुए आकाश की ऊँचाइयों को छुआ था |
8. बाज जिन्दगी भर आकाश में स्वतंत्रता से उड़ता रहा ,अब वो बदबूदार ,सीलन और गंदगी से भरी गुफा में अंतिम सांसे लेकर मरना नहीं चाहता. वह हिम्मत कर के उड़ते हुए आकाश की ऊँचाइयों में अपने प्राण देना चाहता है |
9. गुफा की बदबू को महसूस कर के , गंदगी और सीलन को देखकर ,उसने सोचा कि क्या उसे अपनी जिन्दगी का अंतिम समय यहाँ गुजरना पड़ेगा,यही सोच कर उसके मुंह से करुणा भरी चीख निकल गई |
10. क्योंकि वह बदबूदार ,गंदगी और सीलन से भरी गुफा में नहीं मरना चाहता था | उड़ते- उड़ते अपने प्राण देना चाहता था |
11. घायल बाज ने हिम्मत और साहस से उड़ने का प्रयास किया परन्तु वह लुडकता हुआ नदी में जा गिरा ,उसने बहादुरी और साहस को दिखाते हुए अपने प्राण गँवा दिए |
12. साँप बाज को मूर्ख इसलिए मानता था क्योंकि उसने सोचा कि जब बाज को पता था कि यदि वह उड़ने का प्रयास करेगा तो मर जायेगा, फिर भी जान बूझ कर वह उड़ा और मर गया |

docs.aglasem.com

aglasem.com

13. बाज के मरने पर लहरों ने उसकी बहादुरी ,साहस और निडरता पर गीत गया कि बाज ने कायर होकर गुफा में रेंग- रेंग कर मरना कबूल नही किया बल्कि साहस दिखाते हुए उड़ने का प्रयास किया और अपने प्राण गंवा दिए|
14. इस कहानी का शीर्षक बाज और साँप इसलिए लेखक ने रखा क्योंकि बाज और साँप ही इस कहानी के मुख्य पात्र हैं, कहानी इन दोनों के इर्द गिर्द घूमती है |
15. इस कहानी से हमे यह शिक्षा मिलती है कि हमें साँप की तरह कायर नहीं बाज की तरह साहसी और निडर होना चाहिए |

10. टोपी

निम्नलिखित पठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए : -5

“टोपी तू पाएगी कहाँ से ? " गवरा बोला , “ टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है । जानती है,एक टोपी के लिए कितनों का टाट उलट जाता है । जरा- सी चूक हुई नहीं कि टोपी उछलते देर नहीं लगती । अपनी टोपी सलामत रहे, इसी फिक्र में कितनों को टोपी पहनानी पड़ती है ।...मेरी मान तो तू इस चक्कर में पड़ ही मत ।”

गवरा था तनिक समझदार , इसलिए शक्की । जबकि गवरइया थी जिद्दी और धुन की पक्की| ठान लिया सो ठान लिया , उसको ही जीवन का लक्ष्य मान लिया । कहा गया - जहां चाह ,वहीं राह । मामूल के मुताबिक अगले दिन दोनों घूरे पर चुगने निकले । चुगते-चुगते उसे रुई का एक फाहा मिला ।“ मिल गया ... मिल गया ... मिल गया..” गवरइया मारे खुशी के घूरे पर लोटने लगी ।

प्रश्नः1

I. गवरइया ने क्या इच्छा रखी थी ?

2 गवरा ने क्या कहकर गवरइया को हतोत्साहित किया ?

3 गवरइया का स्वभाव कैसा था ?

4 एक दिन गवरइया को घूरे पर चुगते- चुगते क्या मिला और उससे क्या किया ?

5. टोपी उछलना मुहावरे की अर्थ है?

2 . कदम - कदम पर मिलते कामगारों के सहयोग ने गवरइया को आगे बढ़ने पर उकसा दिया । इसके बाद वे दोनों एक बुनकर के पास गए और कहने लगे,” बुनकर भइया, बुनकर भइया, इस कते सूत से कपड़ा बुन दो ।“

docs.aglasem.com
aglasem.com

बुनकर इन्हें अगवग हो कर देखने लगा," हटते हो कि नहीं यहां से ! देखते नहीं, अभी मुझे राजा जी के लिए बागा बुनना है । अभी थोड़ी देर बाद ही राजा जी के कारिंदे हाजिर हो जाएंगे । साव करे भाव तो चबाव करे चाकर ।" इतना कहकर बुनकर अपने काम में मशगूल हो गया ।

प्रश्न : -

I . किसके सहयोग से गवरइया आगे बढ़ने को तैयार हो गई ?

2 बुनकर किसके लिए बागा बुन रहा था?

3 एक टक होकर बुनकर किसको ताक रहा था?

4 राजा शब्द का स्त्रीलिंग क्या है?

5 इस पाठ का नाम क्या है ?

प्र० 3 प्रश्न बैंक

I . जब गवरइया दर्जी के पास पहुंची तो वह किस काम में मशगूल था?

2 . लेखक ने इस कहानी में किसके ऊपर कटाक्ष किया है?

3 इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

4 कोरी की स्थिति कैसी थी ?

5 . धुनिया के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए ।

6 तब राजा क्या करवा रहा था, जब गवरइया राजा के महल के कंगूरे पर आई हुई थी?

7 गवरइया की टोपी कैसे बनी?

8 गवरा ने कपड़े न पहनने के हक में क्या तर्क दिए?

9 दर्जी ने कैसी टोपी बनाई और टोपी पहनकर गवरइया को कैसा लगा ?

10 अगर राजा के राज में सभी को उचित मेहताना मिले तो कारीगरों का व्यवहार गवरइया के प्रति कैसा होता?

.11 .. ग्रामीण शब्दों का सुमेल कीजिए 1

इत्ते – चमड़ा

चाम – इतने

हुलस पंख

docs.aglasem.com

aglasem.com

पखने – उल्लास

12 मुहावरो को अर्थ के साथ मेल कीजिए ।

टोपी उछालना- पछताना

टोपी पहनाना - बेवकूफ बनाना

ओझल होना - बेइज्जत करना

ठंडी आहें भरना - गायब होना

13 इस पाठ के आधार पर हमारा दूसरों के प्रति कैसा रवैया होना चाहिए?

14 टोपी सम्मान व इज़्ज़त का प्रतीक है कैसे ? अपने विचार लिखिए ।

15 मानुष शब्द का पर्यायवाची लिखिए।

1. उत्तर-कुंजी

: गद्यांश :

1. टोपी पहनने की

2 टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है।

3 जिद्दी लेकिन धुन की पक्की

4 रुई का फाहा मिला टोपी बन गई

5 बेइज्जती होना

गद्यांश : 2

1 कामगारों के सहयोग से

.2 राजा के लिए

3 . गवरा और गवरइया

4 रानी

5 टोपी

प्र०3 1 राजा के लिए बागा बुनने मे मशगूल था।

2 लेखक ने उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किए जाने वाले शोषण पर कटाक्ष किया है ।

docs.aglasem.com

aglasem.com

3 इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि उचित मूल्य मिलने पर कारीगर दक्षता एवं निपुणता के साथ कार्य को पूरा करता है वह उस कार्य को दिल और दिमाग दोनों से करता है अगर उसे सही मेहताना न दिया जाए तो वह उस काम को बेमन से करता है ।

4 कोरी की कमर झुकी हुई थी । उसने बदन पर धज्जी धज्जी हो चुका एक धुस्सा डाल रखा था वह बड़ी अनिच्छा से बोला ' " तुम लोग यहां से भागते हो कि नहीं , अभी मुझे राजा जी के अचकन के लिए सूत कातने हैं मुझे फुर्सत नहीं है मुफ्त में मल्लार गाने की ।

5 धुनिया बेचारा बूढ़ा था जाड़े का मौसम था उसकी दशा खराब थी उसके तन पर वर्षों पुरानी तार तार हो चुकी एक मिर्जई पड़ी हुई थी ।

6 उस वक्त राजा अपने चौबारे पर टहलुओं से खुली धूप में फुलेल की मालिश करवा रहा था । राजा उस वक्त अधनंगा बदन और नंगे सिर था एक टहलुआ सिर पर चंपी कर रहा था , तो दूसरा हाथ पांव की उंगलियों फोड़ रहा , तो तीसरा पीठ पर मुट्ठी मार रहा था|

7 गवरइया को कूड़े के ढेर से चुगते चुगते एक रुई का फाहा मिल गया वह उसे लेकर धुनिए के पास गई । उसे धुनवा कर वह गई गोरी के पास सूट कतवाने । जब सूत कत गया तो बुनकर की तलाश कर उसने सुंदर कपड़ा बनवाया ।कपड़ा बनकर तैयार हुआ तो उसने दर्जी से टोपी बनवाई । दर्जी ने भी उसकी टोपी में सुंदर फुँदने टांग कर लाजवाब टोपी तैयार की ।

8 इससे कुदरती सुंदरता ढक जाती है इससे सुघड़ काया दिखाई नहीं देती ।

9 दर्जी ने पाँच फुँदनो वाली सुंदर टोपी सिल दी । टोपी पहनकर गवरइया प्रसन्न चित्त हो गई । वह डेढ़ टाँग पर नाचने लगी। वह फुदक फुदक कर गवरा को टोपी दिखा रही थी और कह रही थी - देख मेरी टोपी सबसे निराली पाँच फुँदने वाली 1

10 अच्छा होता ।

11. इत्ते-इतने
चाम – चमडा
हुलस – उल्लास
पखने – पंख

12 बेइज्जत होना

बेवकूफ बनाना

गायब होना

13 विवेकानुसार

14 विवेकानुसार

docs.aglasem.com

aglasem.com

15 मनुष्य या अन्य

11. - युगों का दौर

1. मौर्य साम्राज्य के अवसान के बाद भारत किन स्थितियों से गुजरता रहा?
उत्तर:- मौर्य साम्राज्य के अवसान के बाद शुंग वंश प्रभुत्व में आया । उसका शासन अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र पर था । दक्षिण में बड़े राज्य उभर रहे थे । उत्तर में काबुल से पंजाब तक भारतीय यूनानी फैल गए थे ।

2. मेनांडर कौन था? वह किस रूप में प्रसिद्ध हुआ?
उत्तर:- मेनांडर भारतीय यूनानियों का प्रमुख था जिसके नेतृत्व में युद्ध लड़ा गया, पर भारतीय यूनानी हार गए । भारतीय चेतना और वातावरण से प्रभावित हो मेनांडर बौद्ध बन गया । वह राजा मिलिंद नाम से प्रसिद्ध हुआ । आख्यानों में उसे संत कहा गया है ।

3. भारत में कुषाण काल में बौद्ध धर्म किस प्रकार प्रभावित हुआ?
उत्तर:- कुषाण काल तक आते - आते बौद्ध धर्म दो संप्रदायों में बँट गया हीनयान और महायान । इन दोनों के बीच मतभेद उठने लगे । बड़ी - बड़ी सभाओं में इन पर विवाद आयोजित किया जाने लगा ।

4. नागार्जुन कौन थे? उन्होंने बौद्ध धर्म के लिए क्या किया?
उत्तर:- नागार्जुन ईसा की पहली शताब्दी के विशिष्ट व्यक्ति थे, जिनका व्यक्तित्व महान था । वे बौद्ध शास्त्रों और भारतीय दर्शन दोनों के ही बहुत बड़े विद्वान थे । उन्हीं के कारण भारत में हीनयान की विजय हुई ।

5 'भारत का नेपोलियन' किसे कहा जाता है और क्यों?
उत्तर:- गुप्त साम्राज्य के वंशज सम्राट समुद्र गुप्त को ' भारत का नेपोलियन ' कहा जाता है । समुद्रगुप्त का काल अत्यंत सुसंस्कृत, शक्तिशाली और समृद्ध था । इस काल में साहित्य और कला के क्षेत्र में भारत ने बहुत उन्नति की ।

6. दक्षिण में मौर्य साम्राज्य के सिमट जाने पर भी वह किस तरह फलता - फूलता रहा ?

docs.aglasem.com
aglasem.com

उत्तर:- मौर्य साम्राज्य के सिमट जाने पर भी दक्षिण भारत बारीक दस्तकारी और समुद्री व्यापार का केंद्र बना रहा । यहाँ दूर - दूर के देशों से व्यापारी जहाज पर माल पहुँचाया करते थे । यहाँ यूनानी बस्तियाँ और रोम के सिक्के पाए गए ।

7. उत्तर भारत, दक्षिण भारत जैसा विकसित क्यों नहीं हो पाया?
उत्तर:- भारत के उत्तरी भाग पर पश्चिमोत्तर दिशा से हमले होते रहे । इन हमलों के कारण बहुत से लोग राजगीर, शिल्पी, कारीगर आदि दक्षिण भारत में जाकर बस गए । इधर उत्तर भारत के लोग हमलावरों की नीतियों, संस्कृति तथा परंपरा से अधिक प्रभावित होते रहे ।

8. विदेशी यहाँ लंबे समय तक शासन करने में सफल क्यों रहे ?
उत्तर:- विदेशी हमलावरों ने जब भी भारत पर हमला किया, वे यहाँ आकर अपनी संस्कृति तथा परंपराओं तक ही सिमट कर न रह सके । उन्होंने जल्दी ही अपने आपको इस देश और इसकी सांस्कृतिक परंपरा में ढाल लिया, इसलिए वे लंबे समय तक शासक बने रहे ।

9. भारत में किन - किन क्षेत्रों में समन्वय की भावना दिखाई पड़ती है?
उत्तर:- भारत में बाहर से आने वाले विभिन्न तत्वों के बीच ही समन्वय किया गया । यहाँ व्यक्ति के बाहरी और भीतरी जीवन तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच भी समन्वय का प्रयास किया गया ।

10. भारतीय रंगमंच का मूल उद्गम कहाँ मिलता है ? उनकी शैली क्या थी?
उत्तर:- भारतीय रंगमंच का मूल उद्गम वेदों की ऋचाओं और संवादों में मिलता है । रामायण और महाभारत में भी नाटकों का उल्लेख मिलता है । इनकी शैली नाटकीय है ।

11. यूरोप को प्राचीन भारतीय नाटकों की जानकारी कब हुई?
उत्तर:- यूरोप को प्राचीन भारतीय नाटकों की जानकारी 1789 में हुई, जब कालिदास कृत नाटक शकुंतला का विलियम जोंस कृत अनुवाद प्रकाशित हुआ । इस अनुवाद के आधार पर जर्मन, फ्रेंच, डेनिश और इटालियन भाषाओं में भी इसका अनुवाद किया गया ।

12 .भवभूति कौन थे ?
उत्तर:- भवभूति संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध नाटककार थे । वे सातवीं शताब्दी में नाट्य क्षेत्र के चमकते सितारे थे संस्कृत साहित्य में कालिदास के बाद इनका ही स्थान है ।

13. "संस्कृत भाषा अद्भुत रूप से समृद्ध भाषा है"- ऐसा क्यों कहा गया है ?

docs.aglasem.com
aglasem.com

उत्तर:- "संस्कृत भाषा अद्‌भुत रूप से समृद्ध भाषा है"- ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि संस्कृत भाषा अत्यंत विकसित तथा अनेक तरह से अलंकृत भाषा है । इस भाषा ने अपना प्रसार होने, संपन्न होने तथा अलंकृत होने के बाद भी अपना मूल स्वरूप नहीं छोड़ा । यह अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी भी है ।

14. सर विलियम जोंस ने संस्कृत के बारे में क्या कहा था- अपने शब्दों में लिखिए ।
उत्तर:- सर विलियम जोंस ने 1784 में संस्कृत की प्रशंसा करते हुए कहा है – 'संस्कृत भाषा कितनी ही पुरानी हो, पर इसकी बनावट अद्‌भुत है । यह यूनानी भाषा से अधिक पूर्ण तथा लातीनी के मुकाबले उत्कृष्ट है । इसके अलावा यह दोनों भाषाओं से अधिक परिष्कृत है ।

15. भारतीय उपनिवेशों का काल कब से कब तक माना जाता है?
उत्तर:- भारतीय उपनिवेशों का काल ईसा की पहली या दूसरी शताब्दी से शुरू होकर पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक माना जाता है । अर्थात् यह समय लगभग तेरह सौ साल या इससे कुछ अधिक का है ।

17. उपनिवेशों के इतिहास में भारत और चीन का प्रभाव कहाँ - कहाँ पड़ा?
उत्तर:- उपनिवेशों के इतिहास में चीन का प्रभाव महाद्वीप के देशों बर्मा, स्याम, और हिंद चीन पर तथा भारत का प्रभाव टापुओं और मलय प्रायद्वीप पर अधिक था । यहाँ भारतीय धर्म और कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था ।

18. इंडोनेशिया, जावा, बाली आदि ने भारतीय सभ्यता को किस प्रकार बनाए रखा है ?
उत्तर:- इंडोनेशिया का प्राचीन साहित्य भारतीय पुराकथाओं और गाथाओं से भरा हुआ है । जावा और बाली के मशहूर नृत्य भारत से लिए गए हैं । बाली के छोटे से टापू पर हिंदू धर्म अब भी प्रचलित है ।

19. प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला का प्रभाव दक्षिण - पूर्वी एशिया में किस तरह दिखाई देता है ?
उत्तर:- दक्षिण - पूर्वी एशिया में प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला का प्रभाव अंगकोर और बोरोबुदुर की इमारतों और अद्‌भुत् मंदिरों पर दिखाई देता है । जावा में बुद्ध की जीवन - कथा पत्थरों में उत्कीर्ण है । अनेक स्थानों पर विष्णु, राम और कृष्ण की कथाएँ भी अंकित हैं ।

20. 'विदेशों पर भारतीय कला का प्रभाव' के आधार पर भारतीय संगीत की विशेषताएँ लिखिए ।

docs.aglasem.com
aglasem.com

उत्तर:- 'विदेशों पर भारतीय कला का प्रभाव' से ज्ञात होता है कि भारतीय और यूरोपीय संगीत में भिन्नता है । भारतीय संगीत बहुत विकसित था । इसने चीन और सुदूर पूर्व के अलावा एशियाई संगीत को बहुत दूर तक प्रभावित किया ।

21. प्राचीन भारतीय व्यापार की क्या स्थिति थी?
उत्तर:- प्राचीन भारतीय व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था । अपने सामानों की गुणवत्ता के कारण बहुत से विदेशी बाज़ारों पर इसका नियंत्रण था । यह व्यापार पूर्वी समुद्री देशों से भूमध्य सागर तक फैला था ।

22. प्राचीन भारतीय गणित में प्रयुक्त अंक किस तरह बेजोड़ थे?
उत्तर:- आधुनिक अंकगणित और बीजगणित की भारत में नींव पड़ी । काफ़ी समय तक इसकी प्रगति बाधित रही पर शून्यांक मिलने पर अंकों का महत्त्व व्यवहार में बढ़ गया । ये अंक चिह्न दूसरे देशों में प्रयुक्त तमाम चिहनों से भिन्न एवं बेजोड़ थे ।

23. ईसवी के पहले हजार वर्षों में विपरीत परिस्थितियों में भी भारत किस प्रकार विकास करता रहा?
उत्तर:- ईसवी के पहले हजार वर्षों में बाहरी हमलों के बीच भी भारत अपना विकास करता रहा । उसने चीन, यूनानी जगत मध्य एशिया से अपना संपर्क बढ़ाया । भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता रहा । गुप्तकाल में भारत की खूब उन्नति हुई ।

24. हूणों के आक्रमण का प्राचीन भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर :- पश्चिम दिशा से होने वाले हूणों के आक्रमण से भारत राजनैतिक एवं सैन्य दोनों दृष्टियों से कमजोर हो गया । उनके यहाँ बसने से लोगों में अंदरूनी परिवर्तन हुआ । उनके बर्बरतापूर्ण व्यवहार भारतीय आदर्शों से भिन्न थे ।

26. भारत की उस विशेषता का उल्लेख कीजिए, जिसके कारण वह अपनी शक्ति एवं विकास पुनः पा सका ।
उत्तर:- भारत का हर क्षेत्र में भले ही ह्रास हो रहा था, परंतु उसमें जीवन-शक्ति, अद्‌भुत दृढ़ता, लचीलापन और अपने को प्रत्येक परिस्थिति में ढालने जैसी आधारभूत क्षमताएँ बची हुई थीं । फलस्वरूप वह नए संपर्कों एवं विचारधाराओं का लाभ उठाकर शक्तिशाली बना तथा विकास करता रहा ।

12. नयी समस्याएं

प्रश्न 1. भारत में किन-किन विदेशी जातियों ने अपने पाँव पसारने चाहे?

docs.aglasem.com
aglasem.com

उत्तर- हर्षवर्धन के शासन के पश्चात् अरबी, तुर्की व अफगानी जातियों ने भारत में आगमन किया।

प्रश्न 2. महमूव गज़नवी कौन था? उसने भारत पर आक्रमण कब किया?

उत्तर- महमूद गज़नवी अफगानिस्तान का सुल्तान था। उसने 1000 ई० के आस पास भारत पर आक्रमण किया।

प्रश्न 3. महमूव गज़नवी ने भारत पर आक्रमण क्यों किए?

उत्तर- महमूद गजनवी ने भारत पर कब्ज़ा करने व इसकी धन - संपदा लूटने हेतु भारत पर आक्रमण किए।

प्रश्न 4. महमूद गज़नवी ने भारत के किन क्षेत्रों को प्रभावित किया?

उत्तर- महमूद गज़नवी ने भारत के उत्तरी क्षेत्रों को ही प्रभावित किया।

प्रश्न 5. महमूद गज़नवी की मृत्यु कब हुई?

उत्तर- महमूद गजनवी की मृत्यु 1030 ई. में हुई।

प्रश्न 6. भारत में मुगल साम्राज्य का नींव कव और किसके द्वारा रखी गई?

उत्तर- भारत में मुगल साम्राज्य क नींव 1526 ई. में तुर्क-मंगोल बाबर द्वारा रखी गई।

प्रश्न 7. मुगल काल में कौनसी कुरीति उभरी?

उत्तर- परदा प्रथा।

प्रश्न 8. बाबर कौन था?

उत्तर- भारत में मुगल शासन की नींव रखने वाला 'बाबर' था उसने भारत पर चार वर्ष तक शासन किया।

प्रश्न 9. अकबर ने कब और किसके बाद भारतीय शासन की डोर सँभाली?

उत्तर- अकबर ने 1531 में हुमायूँ के पश्चात् मुगल सत्ता की डोर संभाली।

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न 10. अकबर का उद्देश्य क्या था?

उत्तर- अकबर भारत का एक सफल शासक रहा। लोग उसे अत्यधिक पसंद करते थे। उसका उद्देश्य था अखंड भारत की स्थापना करना, जहां राजनीतिक अखंडता के अलावा लोगों में आपसी सबंध हो।

प्रश्न 11. अकबर के व्यक्तित्व की क्या विशेषता थी?

उत्तर- अकबर बहादुर, साहसी, वीर, योग्य सेनानायक, विनम्र, दयालु, आदर्शवादी व कुशल प्रशासक था।

प्रश्न 12. मुगल शासन-काल के दो प्रमुख हिंदी कवियों के नाम बताइए।

उत्तर- मुगल शासन-काल के दो प्रमुख हिंदी कवि थे-मलिकमोहम्मद जायसी एवं अब्दुल रहीम खानखाना |

प्रश्न 13. मलिक मोहम्मद जायसी ने कौन-से प्रमुख ग्रंथ की रचना की?

उत्तर- मलिक मोहम्मद जायसी ने प्रमुख ग्रंथ 'पद्मावत' की रचना की।

प्रश्न 14. जजिया-कर क्या था?

उत्तर- जजिया-कर वह कर था जो औरंगजेब ने हिंदुओं पर धार्मिक कारणों हेतु लगाया।

प्रश्न 15. औरंगजेब की नीतियों का क्या परिणाम निकला?

उत्तर- औरंगजेब को गलत नीतियों से उत्तर में सिक्ख और पश्चिम के मराठे उसके खिलाफ़ हो गए। किसानों का बड़ा भाग व आम जनता का गरीब वर्ग जो सतनामियों के नाम से जाना जाता था पूर्णतया उसके विरुद्ध था।

प्रश्न 16. मराठों के सेनानायक कौन थे?

उत्तर- मराठों के सेनानायक छत्रपति वीर शिवाजी थे।

प्रश्न 17. शिवाजी किस पद्धति से युद्ध करते थे?

उत्तर- शिवाजी छापामार पद्धति से युद्ध करते थे

प्रश्न 18. चौथ-कर क्यों और किनके द्वारा लगाया गया?

उत्तर- चौथ-कर शिवाजी द्वारा अमीरों पर लगाया गया, जिसमें उन्हें अपनी

docs.aglasem.com

aglasem.com

आमदनी का चौथा भाग कर के रूप में जमा करवाना पड़ता था ताकि सैनिक कार्यों हेतु धन एकत्रित हो सके।

प्रश्न 19. औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् भारत के दावेवार कौन-कौन थे?

उत्तर- औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद भारतीयों में मराठे, हैदरअली और उसका बेटा टीपू सुल्तान और विदेशियों में फ्रांसीसी

और अंग्रेज़ थे।

प्रश्न 20. इस समय पूरे भारत में कौन शक्ति पा रहे थे?

उत्तर- इस समय पूरे भारत में मराठे शक्ति पा चुके थे और ऐसा अनुमान लगाया जाता था कि ये ही पूरे भारत पर राज करेंगे।

प्रश्न 21. नादिरशाह कौन था? उसने दिल्ली पर आक्रमण क्यों किया? इसका मुख्य क्या परिणाम निकला?

उत्तर- नादिरशाह ईरान का शासक था। उसने दिल्ली पर आक्रमण दिल्ली को लूटने के लिए किया। उसने दिल्ली की बेशुमार धन-दौलत लूटकर, दिल्ली के शासकों को अत्यधिक कमज़ोर बना दिया।

प्रश्न 22. नादिरशाह के हमले के क्या परिणाम निकले?

उत्तर- नादिरशाह के हमले के निम्न परिणाम निकले-

(i) मराठों का शक्ति पाना

(ii) मुगल शासकों की सत्ता का अंत

(iii) अफगानिस्तान से भारत का अलग होना।

प्रश्न 23. जय सिंह के व्यक्तित्व की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर- जय सिंह एक बहादुर योद्धा, कुशल राजनीतिज्ञ, चतुर, अवसरवादी, गणितज्ञ, खगोल विज्ञानी व नगर-निर्माण करने

वाला था। वह इतिहास के अध्ययन में भी रुचि रखता था।

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न 24. जय सिंह ने किस राज्य का निर्माण करवाया उसकी क्या विशेषता थी?

उत्तर- जय सिंह ने जयपुर राज्य का निर्माण करवाया। इस राज्य की यह विशेषता थी कि इसका निर्माण विदेशी नक्शों के आधार पर किया गया था।

प्रश्न 25. ईस्ट इंडिया कंपनी भारत कब आई?

उत्तर- ईस्ट इंडिया कंपनी भारत सन् 1600 में आई।

प्रश्न 26. शासन सत्ता संभालने पर कंपनी ने क्या किया?

उत्तर- शासन सत्ता संभालने पर कंपनी का उद्देश्य केवल धन कमाना था। उन्होंने भारतीय माल यूरोप की मंडियों में बेचा। उन्होंने भारत में भी कल-कारखाने खोलकर भारतीय अर्थतंत्र का नाश किया व अपने फायदे हेतु कार्य किए।

प्रश्न 27. विद्वान एडम स्मिथ ने ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए क्या लिखा?

उत्तर-विद्वान एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'द वैल्थ ऑफ नेशंस' में लिखा-'एकमात्र व्यापारियों की कंपनी की सरकार किसी भी देश के लिए सबसे बुरी सरकार है।'

प्रश्न 28. यदि भारत पर इंग्लैंड का प्रभुत्व कायम न होता तो भारत की स्थिति क्या होती?

उत्तर- यदि भारत पर अंग्रेजों का प्रभुत्व कायम न होता तो भारत अधिक स्वतंत्र, समृद्ध व प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति करने वाला होता।

13.अंतिम दौर- एक

भारत राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से पहली बार एक अन्य देश का पुछल्ला बनता है-
अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के बाद भारत के लिए एकदम से नई घटना थी। नया पूँजीवाद सारे विश्व में जो बाज़ार तैयार कर रहा था उससे हर हालत में भारत के आर्थिक ढाँचे पर प्रभाव पड़ा। भारत अब अंग्रेज़ी आर्थिक ढाँचे का गुलाम बन गया और किसान भी उनके गुलाम बनकर रह गए। अंग्रेजों के आने से बड़े ज़मीनदार पैदा हुए। उनका मुख्य उद्देश्य लगान अधिक से अधिक मात्रा में वसूल करना था।

docs.aglasem.com

aglasem.com

इस तरह अंग्रेजों ने ऐसे वर्ग को जन्म दिया जिनके स्वार्थ अंग्रेजों से मिलते-जुलते थे। यह वर्ग ये राजा, जमीनदार सरकार के विभिन्न विभागों के पटवारी, गाँवों के प्रधान व उच्च अधिकारी थे। ये वर्ग भी आम जनता का अंग्रेज़ों की तरह खून चूसने वाले थे। अंग्रेज़ों ने प्रत्येक जिले में कलेक्टर की भी नियुक्ति किए, ये वर्ग आम जनता से मुँह-माँगी टैक्स वसूलकर अंग्रेज़ों का खजाना भरते थे।

इस प्रकार भारत की आम जनता को ब्रिटेन के अनेक खर्च उठाने पड़ते थे। उनमें सेना पर किए खर्च जिसे 'कैपिटेशन चार्ज' कहा जाता था, देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त अन्य खर्चों का बोझ भी भारत के कंधों पर था।

भारत में ब्रिटिश शासन के अंतर्विरोध राममोहन राय – बंगाल में अंग्रेज़ी शिक्षा और समाचार पत्र

बंगाल में अंग्रेज़ी शिक्षा के कई समाज सुधारक पक्ष थे। इसके अलावे शिक्षाविद् अंग्रेज़ प्राच्य विद्या विशारद पत्रकार मिशनरी और कुछ अन्य लोगों ने पाश्चात्य संस्कृति को भारत में लाने के लिए काफ़ी प्रयास किया। यद्यपि अंग्रेज़ भारत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार नापसंद करते थे क्योंकि वे चाहते थे कि शिक्षण-प्रशिक्षण के माध्यम से क्लर्क तैयार किया जाए ताकि कम वेतन पर उनसे काम कराया जा सके। शिक्षा के माध्यम से शिक्षित लोगों में नई चेतना जाग उठी। वे गुलामी से मुक्त होने के लिए तड़पने लगे लेकिन नई तकनीकी, रेलगाड़ी, छापाखाना, दूसरी मशीनें ये सब ऐसी बातें थीं जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। ऐसे ही वक्त में 18 वीं शताब्दी में एक सामाजिक सुधारक एवं अत्यंत शक्तिशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ। इसका नाम था-राजा राम मोहन राय। वह एक नई सोच का व्यक्ति था। भारतीय विचारधारा और दर्शन की उन्हें काफ़ी ज्ञान था। उन्हें अनेक भाषाओं का भी ज्ञान था। उन्होंने अंग्रेजी सरकार के गवर्नर जनरल को गणित, भौतिकी, विज्ञान, रसायन, शास्त्र, जीव-विज्ञान और अन्य उपयोगी विज्ञानों की शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया और अंग्रेज़ी को लागू करने के लिए भी लिखा।

राजा राम मोहन राय ईसाई व मुस्लिम दोनों धर्मों के संपर्क में रहे और इससे वे प्रभावित भी रहे। वे भारतीय धार्मिक कुरीतियों व कुप्रथाओं से भारत को मुक्त करवाना चाहते थे। इसके फलस्वरूप अंग्रेजी सरकार ने सती प्रथा पर रोक लगा दी।

वे भारतीय पत्रकारिता के प्रवर्तक भी थे। उनका कहना था कि समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ मनुष्य के विचारों को जागरूक करने का माध्यम हैं। अतः उनके नेतृत्व में 1818 में पहली बार एक अंग्रेज़ी का समाचार पत्र निकला जिसका संपादन भारतीयों ने किया था। इसके अतिरिक्त बंगाली में एक साप्ताहिक व एक मासिक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ। धीरे-धीरे देश में, कलकत्ता, मद्रास और मुंबई में तेजी

docs.aglasem.com
aglasem.com

से और भी समाचार पत्र निकलने लगे।

उनकी सोच थी कि भारत में पूर्ण जागरण के बिना परिवर्तन लाना असंभव है। बहुत से लोगों ने उनका समर्थन किया जिनमें रवींद्र नाथ का परिवार उनका समर्थक था। वे दिल्ली सम्राट की ओर से इंग्लैंड गए। दुर्भाग्य से उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआती वर्षों में ब्रिस्टल में उनकी मृत्यु हो गई।

सन् 1857 की महान क्रांति – जातीयतावाद

भारत के उत्तरी राज्यों को छोड़कर लगभग सारा भारत अब ब्रिटिश सरकार की सहानुभूति चाहता था। बंगाल ने ब्रिटिश सरकार से संधि की थी । किसान आर्थिक तंगी से परेशान थे। उत्तर भारत में प्रजा में असंतोष और अंग्रेज़ी भावना फैल रही थी। इसी बीच मई 1857, में मेरठ की भारतीय सेना ने अंग्रेजों के खिलाफ़ बगावत शुरू कर दी। विद्रोह की शुरुआत गुप्त तरीके से हुई थी लेकिन इस योजना की शुरुआत समय से पहले हो जाने के कारण योजना को बिगाड़ दिया। अब यह केवल सैनिक विद्रोह होकर रह गया। इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत के रूप में देखा जाने लगा। हिंदू और मुसलमान सभी भारतीयों ने इस विद्रोह में बढ़चढ़कर भाग लिया। यह सैनिक विद्रोह के अलावा जन आंदोलन का रूप भी बन गया। अंग्रेज़ों ने इसका दमन भारतीयों की सहायता से किया। इस आंदोलन में तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस विद्रोह ने ब्रिटिश शासन को हिलाकर कर रख दिया। 'ब्रिटिश पार्लियामेंट' ने 'ईस्ट इंडिया कंपनी' से भारत को अपने हाथ में ले लिया।

हिंदुओं और मुसलमानों में सुधारवादी आंदोलन

इस समय हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कई सामाजिक कुरीतियाँ फैली हुई थीं। इस समय सामाजिक सुधारकों में जिसमें राजा राम मोहन राय और दयानंद सरस्वती हुए। इन्होंने हिंदू धर्म में कुछ सुधारवादी आंदोलन चलाया। राजा राम मोहन राय ने हिंदू 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की। 19वीं शताब्दी में स्वामी दयानंद सरस्वती ने महत्त्वपूर्ण सुधार आंदोलन की शुरुआत की। यह आर्य सामाजियों का आंदोलन था। इसका नारा था- 'वेदों की ओर चलो' आर्य समाज में वेदों की एक विशेष ढंग से व्याख्या की गई। इसका प्रसार मुख्य रूप से पंजाब और संयुक्त प्रदेश के हिंदू वर्ग में हुआ। इस सुधारवादी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था लड़के-लड़कियों में समान रूप से शिक्षा के प्रसार में, स्त्रियों की स्थिति का सुधार करने में और दलित जातियों के स्तर को ऊँचा उठाने में था। स्वामी दयानंद के समय में बंगाल में श्री रामकृष्ण परम हंस का व्यक्तित्व सामने आया। उन्होंने हिंदू धर्म और दर्शन के विविध पक्षों को आपस जोड़कर जनता के सामने रखा। वे संप्रदायिकता के विरोधी थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभी धर्म सत्य की ओर जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने गुरु- भाइयों की सहायता से रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

docs.aglasem.com
aglasem.com

उन्होंने हिंदू धर्म और दर्शन के विविध पक्षों को आपस में जोड़कर जनता के सामने प्रस्तुत किया।

1893 ई. में शिकागो में अंतर्राष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में भाग लिया। विवेकानंद ने भारत के दक्षिणी छोर में कन्याकुमारी से हिमालय तक अपने सिद्धांतों को फैलाया। 1902 ई. में 39 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। विवेकानंद के समकालीन रवींद्रनाथ ठाकुर थे। टैगोर परिवार ने बंगाल के सुधारवादी आंदोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने जलियाँवाला कांड के विरोध में अपनी 'सर' की उपाधि लौटा दी। शिक्षा के क्षेत्र में 'शांति निकेतन' उनकी प्रमुख देन थी। वे रूसी क्रांति के प्रशंसक थे विशेष उसमें शिक्षा के प्रसार, संस्कृति, स्वास्थ्य और समानता की चेतना के। उनका मानना था कि यही तत्व व्यक्ति के उसके उददेश्य की पूर्ति में सहायक होता है। टैगोर और गांधी दोनों मानवतावादी थे। इन्होंने लोगों को संकीर्ण विचारधाराओं से बाहर निकालना चाहा। गांधी जी विशेष रूप से आम जनता के आदमी थे, जो भारतीय किसान के रूप में थे। टैगोर मूलतः विचारक थे और गांधी अनवरत कर्मठता के प्रतीक थे। उस समय ऐनी बेसेंट का भी बहुत प्रभाव पड़ा। बहुत-सी बातें मुसलमान जनता में भी समान रूप से प्रचलित थीं। इन दोनों ने अपनेअपने तरीके से जनता में नई विचारधारा का संचार करना चाहा।

श्रीमती एनी बेसेंट आयरलैंड की रहने वाली महिला थी। उन्होंने भारत में होम रूल चलाया जिसका उद्देश्य अंग्रेजों से भारतीयों को आंतरिक स्वतंत्रता दिलाना था। 1857 के विद्रोह के बाद भारतीय मुसलमान यह तय नहीं कर पा रहे थे कि घर जाएँ। अंग्रेजों ने उनके साथ अत्यधिक दमनपूर्ण रवैया अपनाया था। सन् 1870 के बाद संतुलन बनाने के लिए अंग्रेजी सरकार अनुकूल हो गई। इसमें सर सैयद अहमद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्हें यह विश्वास था कि ब्रिटिश सत्ता के सहयोग से मुसलमानों की स्थिति बेहतर हो सकती है। उन्होंने मुसलमानों में ब्रिटिश विरोधी भावना कम करने की कोशिश की। सर सैयद अहमद खा का प्रभाव मुसलमानों में उच्च वर्ग के कुछ लोगों तक ही सीमित था। 1912 में मुसलमानों के दो नए साप्ताहिक निकले-उर्दू में 'अल हिलाल' और अंग्रेज़ी में 'कामरेड।' अबुल कलाम आजाद का अलीगढ़ कॉलेज में सर सैयद खाँ से संबंध था। अबुल कलाम आजाद ने पुरातन पंथी और राष्ट्र विरोधी भावना के गढ़ पर हमला किया जिससे बुजुर्ग नाराज हुए पर युवा पीढ़ी में उत्तेजना भर चुकी थी।

<u>तिलक और गोखले</u>

ए. ओ. हयूम ने 1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की थी। जब 1885 में निर्मित नेशनल कांग्रेस अपनी प्रौढ़ावस्था में आई तो इसके नेतृत्व का ढंग बदल गया। जब इसके संरक्षक बने थे वे अत्यधिक आक्रमणकारी व अवज्ञाकारी थे और निम्न वर्ग छात्र व युवा लोगों के प्रतिनिधि थे। उसमें कई तरह के योग्य ओजस्वी नेता उभरकर आए। इसके सच्चे प्रतिनिधि थे- महाराष्ट्र के बालगंगाधर तिलक और गोखले थे।

docs.aglasem.com
aglasem.com

संघर्ष का पूरा माहौल तैयार हो गया था जिसे बचाने के लिए दादा भाई नोरोजी लाए गए। 1907 ई. में हुए संघर्ष में उदार दल की जीत हुई लेकिन बहुसंख्यक समाज के लोग तिलक के पक्ष में थे। इस समय बंगाल में हिंसक घटनाएं हो रही थीं।

गद्यांश – 1

अट्ठाहरवीं शताब्दी में बंगाल में एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ | यह थे राजा राममोहन राय | वे एक नए ढंग के व्यक्ति थे जिनमें प्राचीन और नवीन ज्ञान का मेल था |भारतीय विचारधारा और दर्शन की उन्हें गहरी जानकारी थी | वे संस्कृत फारसी और अरबी के विद्वान थे और उस हिंदू मुस्लिम संस्कृति की उपज थेजो उस समय भारत के सुसंस्कृत वर्ग के लोगों पर छाई हुई थी | उन्होंने अंग्रेजी और पश्चिम के धर्म और संस्कृत के स्रोतों की खोज के लिए ग्रीक,लातीनी , और इब्रानी भाषाएँ सीखीं |

पश्चिमी सभ्यता के विज्ञान और तकनीकी पक्षों ने भी उन्हें आकर्षित किया | अपने दार्शनिक और विद्वतापूर्ण झुकाव के कारण राजा राममोहन राय अनिवार्य रूप से प्राचीन साहित्यों की ओर झुके | तुलनात्मक धर्म के अध्ययन की पद्धति की खोज करने वाले दुनिया के पहले उत्साही व्यक्ति थे और शिक्षा को आधुनिक सांचे में डालकर उसे पुराने पंडिताऊ पद्धति के चंगुल से निकालने के लिए बहुत उत्सुक थे | उन्होंने गवर्नर जनरल को गणित, भौतिक –विज्ञान , रसायन- शास्त्र, जीव विज्ञान और अन्य उपयोगी विज्ञानों की शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए लिखा |

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. अट्ठाहरवीं शताब्दी में बंगाल में किस प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ ?
2. राजा राममोहनराय किन भाषाओँ के विद्वान् थे ?
3. वे शिक्षा को किस ढांचे में ढालना चाहते थे ?
4. उन्होंने गवर्नर जनरल को कौन –सी शिक्षा की आवश्यकता पर ज़ोर देने के लिए कहा ?
5. राजा राम मोहनराय कौन –से साहित्यों की ओर झुके ?

गद्यांश - 2

विवेकानंद ने बहुत- सी बातें कहीं लेकिन जिस एक बात के बारे में उन्होंने अपने लेखन और भाषणों में बराबर लिखा, वह थी ‘अभय’ निडर रहो| उनके अनुसार “

docs.aglasem.com

aglasem.com

अगर दुनिया में कोई पाप है तो वह दुर्बलता है- हर तरह की दुर्बलता से बचो' दुर्बलता पाप है 'दुर्बलता मृत्यु है | उपनिषदों की यही महान शिक्षा थी |"और सत्य की कसौटी है- " कोई भी चीज जो तुम्हें शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से कमजोर बनाती है, उसे जहर की तरह छोड़ दो, उसमें कोई जीवन नहीं है वह सत्य नहीं हो सकती |

सत्य मजबूत बनाता है, सत्य पवित्रता है ' सर्वज्ञान है | " अंधविश्वासों से सावधान रहो| मैं तुम्हें अंधविश्वासी मूर्ख कहने की अपेक्षा कट्टर नास्तिक कहना पसंद करूंगा , क्योंकि नास्तिक सजीव होता है और आप उसे कुछ बना सकते हैं लेकिन अगर अंधविश्वास घर कर ले तो दिमाग गायब हो जाता है बुद्धि क्षीण होने लगती है , जीवन का पतन होने लगता है |

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. विवेकानंद ने अपने लेखन और भाषणों में क्या बात लिखी ?
2. विवेकानंद ने दुर्बलता के बारे में क्या कहा ?
3. उपनिषदों की महान शिक्षा क्या थी ?
4. सत्य मनुष्य को कैसा बनाता है ?
5. मनुष्य में अगर अन्धविश्वास घर कर ले तो क्या होता है ?

प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. राजा राममोहन राय ने प्रमुख रूप से किस कुरीति का अंत किया ?
2. अंग्रेजों के समय भारत में कौन से दो प्रमुख विभाग बने ?
3. 'कैपिटेशन चार्ज' क्या था ?
4. अंग्रेजी शासनकाल के दौरान भारत ने किस- किस क्षेत्र में विकास किया ?
5. नेशनल कांग्रेस की स्थापना कब हुई ?
6. तिलक और गोखले ने किन-किन वर्गों का प्रतिनिधित्व किया ?
7. 'मुस्लिम लीग' की स्थापना किनके प्रयास से हुई ?
8. अबुल कलाम आज़ाद ने क्या विशेष कार्य किया ?
9. रामकृष्ण मिशन की स्थापना किसने की ? इस मिशन की क्या विशेषता थी ?
10. उन्नीसवीं शताब्दी में कौन- कौन से सुधारक हुए ?
11. स्वामी दयानंद सरस्वती ने लोगों को क्या संदेश दिया ?
12. अंग्रेजों ने अपने फायदे हेतु किस वर्ग को जन्म दिया ?
13. मालगुजारी से आप क्या समझते हैं ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

14. भारत में सभी संपन्न साधन होने पर भी भारत की जनता अपने ही देश में गरीब क्यों हो गई ?
15. सन् 1857 के भारतीय विद्रोह में कौन- से दो प्रमुख नेता उभरे ?

उत्तर कुंजी

गद्यांश -1

1. राजा राममोहन राय का उदय हुआ |
2. राजा राममोहन राय संस्कृत, फ़ारसी, अरबी भाषाओँ के विद्वान थे |
3. वे शिक्षा को आधुनिक ढाँचे में ढालना चाहते थे |
4. उन्होंने गणित, भौतिक-विज्ञान, रसायनशास्त्र, जीव-विज्ञान आदि की आवश्यकता पर ज़ोर दिया |
5. राजा राममोहन राय प्राचीन साहित्यों की ओर झुके |

गद्यांश -2

1. विवेकानंद ने जो बात लिखी वह थी 'अभय' – निडर रहो |
2. विवेकानंद ने दुर्बलता के बारे में कहा कि दुर्बलता से बचो, दुर्बलता पाप है, दुर्बलता मृत्यु है |
3. कोई भी चीज़ जो तुम्हे शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से कमज़ोर बनाती है, उसे ज़हर की तरह छोड़ दो |
4. सत्य मनुष्य को मजबूत बनाता है, सत्य पवित्रता है, सर्वज्ञान है |
5. बुद्धि क्षीण होने लगती है, जीवन का पतन होने लगता है |

प्रश्नों के उत्तर :

1. राजा राममोहन राय ने मुख्या रूप से 'सती प्रथा' जिसमें पति की मृत्यु होने पर स्त्री भी ज़िंदा जलकर अपने प्राण दे देती थी, का अंत किया | उन्हीं के आंदोलन के कारण ब्रिटिश सरकार ने सती प्रथा पर रोक लगाई |
2. मालगुजारी व पुलिस |
3. अंग्रेज़ी सेना के प्रशिक्षण हेतु भारत की ओर से उठाया गया खर्च 'कैपिटेशन चार्ज' था |
4. अंग्रेजी शासनकाल में ही भारत ने नई तकनीक, रेलगाड़ी, छापाखाना, दूसरी मशीनें व युद्ध के अधिक कारगर तरीकों का विकास किया |

docs.aglasem.com
aglasem.com

5. नेशनल कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 में हुई |
6. तिलक और गोखले ने निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, विद्यार्थी व युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व किया | भारतीय जनसँख्या का एक बड़ा जनसमुदाय उनके पक्ष में था |
7. 'मुसलिम लीग' की स्थापना अलीगढ कॉलेज के उस समुदाय के माध्यम से हुई जो नए मुसलमान बुद्धिजीवियों का नेतृत्व कर रहा था |
8. अबुल कलाम आज़ाद ने मुस्लिम बुद्दिजीवी समुदाय में सनसनी पैदा कर दी और युवा पीढ़ी के दिमाग में राष्ट्रीयता की भावना जगाने हेतु उत्तेजना भरी |
9. रामकृष्ण मिशन की स्थापना विवेकानंद ने की | इसकी विशेषता यह थी कि इसमें सांप्रदायिकता का भाव नहीं था अर्थात् सभी धर्मों को समान समझा जाता था |
10. उन्नीसवीं शताब्दी में स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, टैगोर, महात्मा गांधी, एनी बेसेंट, सर सैयद अहमद खां, अबुल कलाम आज़ाद, गोपाल कृष्ण गोखले एवं बालगंगाधर तिलक मुख्य सुधारक हुए | इन्होने अंग्रेजी शासन के प्रभाव के होते हुए भी लोगों की विचारधारा को बदलना चाहा | उनमें राष्ट्रीयता की भावना भर, धार्मिक कर्म-कांडों से उन्हें हटाना चाहा |
11. स्वामी दयानंद सरस्वती ने लोगों को अंदेश दिया कि 'वेदों की ओर लौटो' अर्थात् उनका मानना था कि वेदों में ही जीवन की सत्यता है |
12. अंग्रेजों ने अपने फायदे हेतु भारतीय आम जनता व अपने बीच एक ऐसे वर्ग को जन्म दिया जो उनके कहे अनुसार चले | उनमें थे ज़मींदार, राजा, पटवारी, गाँव के मुखिया व ऊपर के कर्मचारी | ये सरकार के पिछलग्गू थे, आम जनता से धन बटोरकर अपनी व सरकार की जेबें भरते थे |
13. मालगुजारी एक प्रकार का चुंगी कर था जो गाँवों से शहरों में लाए या ले जाए जाने वाले सामान पर सरकार की ओर से लगाया जाता था |
14. भारत में सभी साधन संपन्न होने पर भी – भारत की जनता अपने ही देश में गरीब हो गई क्योंकि उसे ब्रिटेन के सभी खर्च उठाने पड़ते थे |
15. तांत्या टोपे व लक्ष्मीबाई |

प्रश्न

प्रश्न 1. अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के बाद भारत में कैसी व्यवस्था से बँध गया?
प्रश्न 2. अंग्रेज़ों का लक्ष्य क्या था?
प्रश्न 3. कैपिटेशन चार्ज क्या था?
प्रश्न 4. शिक्षा का विरोध करने वाले अंग्रेजों को भारत में शिक्षित क्यों करना पड़ा?

docs.aglasem.com
aglasem.com

प्रश्न 5. सती प्रथा क्या थी? इसे रोकने में राजा राममोहन राय ने क्या किया?
प्रश्न 6. 1857 का विद्रोह असफल क्यों रहा?
प्रश्न 7. तकनीकी परिवर्तन और शिक्षा के प्रसार का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?
प्रश्न 8. सर सैयद अहमद खाँ ने अलीगढ़ कॉलेज की स्थापना किस उद्देश्य से की?
प्रश्न 9. तिलक और गोखले कैसे आंदोलनकारी थे?

प्रश्न 10.भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के साथ घटने वाली नई घटना क्या थी?
प्रश्न 11. 18वीं शताब्दी में बंगाल में किस व्यक्तित्व का उदय हुआ?
प्रश्न 12.19वीं शताब्दी के प्रमुख सुधारक का नाम लिखिए।
प्रश्न 13. दयानंद सरस्वती कौन थे? उन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में क्या-क्या कार्य किए?
प्रश्न 14. तिलक और गोखले के बारे में संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तरमाला

1. अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के बाद भारत एक ऐसी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के साथ जुड़ गया जिसका संचालन भारत देश के बाहर इंग्लैंड से होने लगा।

2. अंग्रेजों का लक्ष्य था – लगान के रूप में भारतीयों से अधिक मात्रा में टैक्स वसूलना और मुनाफ़ा कमाना।

3. इंग्लैंड में ब्रिटिश सेना के एक हिस्से का प्रशिक्षण खर्च भारत को उठाना पड़ता था। इसे कैपिटेशन चार्ज कहा जाता था।

4. अंग्रेज़ शिक्षा के प्रचार को नापसंद करते थे। फिर भी भारत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना उनकी मज़बूरी रही। वे भारत में पाश्चात्य संस्कृति को फैलाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने कार्यों के लिए क्लर्क भी तैयार करना था।

5. सती प्रथा एक पुराने समय की कुरीति थी। इस प्रथा में पति की मृत्यु होने पर स्त्री (पत्नी) को भी जिंदा जला दिया जाता था। राजा राममोहन राय ने इस प्रथा का अंत अंग्रेजों की सहायता लेकर कानून बनाकर किया। उन्हीं के प्रयासों के कारण सरकार ने सती प्रथा पर रोक लगाई।

6. 1857 का विद्रोह असफल होने का प्रमुख कारण यह था कि उसके विद्रोह के लिए जो तिथि निश्चित की गई थी उसका खुलासा समय से पहले हो गया। इससे अंग्रेज़ सतर्क

docs.aglasem.com
aglasem.com

हो गए, इसके अलावे देश के ज़मीनदारों, सामंती सरदारों ने इसमें भाग नहीं लिया। इससे भी यह विद्रोह कमज़ोर पड़ गया।

7. अंग्रेजों के आने से तकनीकी और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। समाज में सोई हुई चेतना जाग उठी और नई चेतना का विकास हुआ। अंग्रेजी पढ़ने वालों का रुझान पश्चिमी वस्तुओं और पश्चिमी सभ्यता की गतिविधियों पर गया तथा लोगों में अपने देश की आजादी के प्रति लगाव पैदा हो गया।

8. सर सैयद अहमद खाँ ने अलीगढ़ कॉलेज की स्थापना अपने इस उद्देश्य से की कि भारतीय मुसलमान शिक्षा ग्रहण करके अंग्रेजी सरकार द्वारा योग्य नौकरियाँ प्राप्त कर सकें।

9. तिलक और गोखले आक्रामक व अवज्ञाकारी विचाराधारा वाले थे। गरम दल के प्रभावी आंदोलनकारी नेता थे। वे अपना मांग अनुरोध से नहीं बल्कि छीन कर लेना चाहते थे। भारतीय जनमानस का बहुत बड़ा भाग उनके समर्थन में था। सरकार भी उनकी गतिविधियों से डरती थी।

10. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना से भारतीयों के लिए यह नई घटना थी कि पहली बार वे ऐसी शासन सत्ता में आए जिसका मूल भारतीय न था। इससे पूर्व कई बाहरी जातियों ने भारत पर आक्रमण कर शासन सत्ता सँभाली थी। अधिकांश ने अपना भारतीयकरण किया जबकि अंग्रेजों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को नहीं अपनाया। अब तो भारत ऐसे शासकीय संचालन में बँध गया जिसकी बागडोर भारतीय धरती पर न होकर लंदन की धरती पर था

11. 18वीं शताब्दी में जिस सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ, वे थे राजा राममोहन राय। वे एक नई सोच के व्यक्ति थे। उन्हें भारतीय विचारधारा और दर्शन की गहरी जानकारी थी। उन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था। वे भारतीय समाज को पुरानी पद्धति से बाहर निकालना चाहते थे। वे एक समाज सुधारक थे। उन्हीं के प्रयास के कारण सती प्रथा पर रोक लगी।

12. 19वीं शताब्दी में स्वामी दयानंद सरस्वती रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, टैगोर, महात्मा गांधी, ऐनी बेसेंट, सर सैय्यद अहमद खाँ, अबुल कलाम आजाद, गोपाल कृष्ण गोखले एवं बाल गंगाधर तिलक मुख्य सुधारक थे। इन्होंने समाज सुधारक ब्रिटिश शासन के प्रभाव के चंगुल से बाहर निकाल कर लोगों की विचारधारा को बदलना चाहा। वे उनमें राष्ट्रीयता की भावना भर, धार्मिक कांडों से उन्हें निकालना चाहते थे।

docs.aglasem.com
aglasem.com

13. दयानंद सरस्वती 19वीं शताब्दी के जाने-माने समाज-सुधारक थे। उन्होंने लोगों को संदेश दिया कि 'वेदों की ओर लौटो' यानी उनका मानना था कि जीवन में ही जीवन की सत्यता है। इसका प्रसार पंजाब तथा संयुक्त प्रदेश के हिंदू वर्ग में हुआ। उन्होंने लड़के-लड़कियों को बराबरी की शिक्षा देने का प्रयास किया। स्त्रियों की स्थिति में सुधार और दलित जातियों का स्तर ऊँचा उठाने के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किए।

14.एक योग्य और तेजस्वी नेता के रूप में उभरे महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक मराठों के महापुरुष के रूप में थे। गोपाल कृष्ण गोखले कांग्रेस के बुजुर्ग नेता थे, वे दादा भाई नौरोजी को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे।

14.**अंतिम दौर - दो**

राष्ट्रीयता बनाम साम्राज्यवाद : मध्य वर्ग की बेबसी गांधी जी का आगमन- दूसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत होने के समय कांग्रेस की राजनीति में उतार आया था। इसका मुख्य कारण कांग्रेस का दो गुटों में बँटना था। जिनमें एक था नरमदल और दूसरा गरम दल। विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद भारत में अंग्रेजों द्वारा दमनकारी कानून और भारत में मार्शल ला लागू हुआ। भारतीय जनता का शोषण लगातार बढ़ने लगा। तभी भारतीय राजनीति में गांधी का उदय हुआ। वे करोड़ों की आबादी से निकलकर आए थे। वे जनता की भाषा बोलने वाले और जनता के सच्चे शुभ चिंतक थे। अतः उन्होंने भारत में करोड़ों लोगों को प्रभावित किया। गांधी ने पहली बार कांग्रेस के संगठन में प्रवेश किया। इस संगठन का उद्देश्य था सक्रियता और तरीका था शांतिप्रिय तरीके से। गांधी ने आते ही ब्रिटिश शासन की बुनियादों पर चोट की। उन्होंने लोगों से कहा कि अपने अंदर का भय निकाल दो क्योंकि आम लोगों की व्यापक दमनकारी दमघोटू भय, सेना का, पुलिस का, खुफिया विभाग का, अफसरों, जमीनदारों, साहूकारों, बेकारी और भुखमरी का भय सताता रहता था। गांधी जी की प्रेरणा से लोगों ने भयमुक्त होकर काम करना शुरू किया। इससे लोगों में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का संचालन हुआ। यह परिवर्तन असंख्य लोगों को प्रभावित कर रहा था। उनकी इस प्रेरणा से सभी आम जनता में जागरुकता का विस्तार हुआ।

<u>गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस सक्रिय</u>
गांधी जी ने पहली बार कांग्रेस में प्रवेश करते ही उसके संविधान में परिवर्तन ला दिया। उन्होंने कांग्रेस को लोकतांत्रिक संगठन बनाया। इस संगठन का लक्ष्य और आधार था सक्रियता। इसके परिणामस्वरूप किसानों ने कांग्रेस में भाग लेना शुरू किया। अब कांग्रेस विशाल किसान संगठन दिखाई देने लगा। गांधी जी का सक्रियता का आह्वान दोहरा था – विदेशी शासन को चुनौती देना और इसका मुकाबला करना। अपनी खुद की सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ने में भी सक्रियता थी। गांधी जी ने अंग्रेजी शासन

docs.aglasem.com
aglasem.com

की बुनियादों पर चोट की। लोगों से इसके विरोध में मैडल और खिताब वापस करने की अपील की। धनी लोगों ने सादगीभरा जीवन व्यतीत करना अपना लिया। गांधी जी के अनुसार आज़ादी पाने के लिए आम जनता की भागीदारी आवश्यक है। वे हर काम को शांतिपूर्ण तरीके से सही ढंग से करते थे । उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति धर्मनिरपेक्ष है। यह सभी धर्मों का सम्मिश्रण है। गांधी जी सभी की भावनाओं का सम्मान करते थे। वे प्रायः लोगों की इच्छा के सामने झुक जाते थे। कभी-कभी अपने विरुद्ध फैसले स्वीकार कर लेते थे। सन् 1920 तक कांग्रेस में शामिल और आम लोगों ने गांधी के रास्ते को अपनाकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष किया। पहली बार नए आंदोलन हुए, सविनय अवज्ञा आंदोलन हुआ, असहयोग की नीति अपनाई गई लेकिन यह अहिंसक आंदोलन था।

अल्पसंख्यकों की समस्या-मुस्लिम लीग-मोहम्मद अली जिन्ना

भारत सदैव से धर्म निरपेक्षता का अनुसरण करता रहा और सभी धर्मों को एक समान मान्यता दी। यहाँ किसी धर्म का विरोध नहीं किया गया। लेकिन भारत में उस समय राजनीतिक मामलों में धर्म का स्थान सांप्रदायिकता ने ले लिया था। कांग्रेस इन धार्मिक सांप्रदायिक मामलों का हल निकालने के लिए उत्सुक और चिंतित थी। कांग्रेस की सदस्य संख्या में अधिकांश हिंदू सदस्य थे। कांग्रेस मुख्यतः दो बुनियादी प्रश्नों पर अटल रही – राष्ट्रीय एकता और लोकतंत्र। 1940 में कांग्रेस ने घोषणा की कि भारत में ब्रिटिश सरकार की नीति 'नव जीवन में संघर्ष और फूट को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देती है।'

ऐसे में भारत की बलि देना और लोकतंत्र का त्याग करना देश के लिए अहितकर था। अंग्रेज़ों की नीति हिंदू और मुस्लिम एकता को कमज़ोर करना रहा। वे फूट डालो राज्य करो की नीति को अपनाते थे। ऐसे में कांग्रेस ऐसा कोई हल न ढूँढ़ सकी जिससे सांप्रदायिक समस्या को सुलझाया जा सके।

अब हर हाल में हिंदू और मुसलमानों में दीवार खड़ी करना चाहता थे। वे हिंदू-मुस्लिम के मत-भेदों को सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास करने लगा।

गद्यांश – 1

गांधी जी ने पहली बार कांग्रेस के संगठन में प्रवेश किया और तत्काल उसके संविधान में पूरी तरह परिवर्तन ला दिया | उन्होंने उसे लोकतांत्रिक और लोक संगठन बनाया | अब उसमें किसानों ने प्रवेश किया और अपने नए रूप में वह एक विशाल किसान - संगठन दिखाई देने लगा, जिसमें मध्य वर्ग के लोग संख्या में छितरे हुए थे लेकिन उनका ज़ोर काफ़ी था | अब उसका खेतिहर चरित्र बढ़ने लगा | औद्योगिक मज़दूर भी उसमें आए लेकिन अपनी व्यक्तिगत हैसियत में, अलग से संगठित रूप में नहीं |

docs.aglasem.com
aglasem.com

इस संगठन का लक्ष्य पर आधार था सक्रियता | ऐसी सक्रियता जिसका आधार शांतिपूर्ण पद्धति थी | अब तक जो विकल्प थे उसमें या तो केवल बातचीत करना और प्रस्ताव पारित करना था अथवा हिंसक कार्यवाही करना | इन दोनों तरीकों को एक तरफ़ हटा दिया और हिंसा की विशेष रूप से निंदा की गई क्योंकि वह कांग्रेस की मूल नीति के खिलाफ़ था | काम करने का एक नया तरीका निकाला गया, जो पूरी तरह शांतिपूर्ण था |

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. गांधी जी के कांग्रेस में प्रवेश के बाद क्या परिवर्तन हुए ?
2. उसमें किस वर्ग ने प्रवेश किया ?
3. इस संगठन का लक्ष्य और आधार क्या था ?
4. वे कांग्रेस की कौन सी नीति के खिलाफ़ थे ?
5. काम करने का नया तरीका कैसा था ?

गद्यांश - 2

कांग्रेस पर गांधी जी का प्रभुत्व था, लेकिन यह खास किस्म का अधिकार था, क्योंकि कांग्रेस एक सक्रिय, विद्रोही, अनेक पक्षीय संगठन था जिसमें तरह-तरह की राय होती थी और उसे आसानी से इधर-उधर नहीं ले जाया जा सकता था | गांधी जी अक्सर दूसरों की इच्छा के सामने झुक जाते थे | कभी-कभी वे अपने विरुद्ध फैसलों को भी स्वीकार कर लेते थे |

इस तरह सन् 1920 में नेशनल कांग्रेस ने और काफी हद तक देश ने इस नए रास्ते को अपनाया और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ बार-बार संघर्ष किया |

एक के बाद दूसरा सविनय अवज्ञा आंदोलन हुआ और उसके कारण बहुत कष्ट उठाने पड़े, लेकिन इन मुसीबतों को चूँकि खुद आमंत्रित किया गया था इसलिए उनसे शक्ति ही मिली |

जब सविनय अवज्ञा आंदोलन जारी नहीं था, तब भी भारत में ब्रिटिश सरकारी तंत्र से असहयोग जारी था, गरचे उसका आक्रामक चरित्र समाप्त हो गया था|

docs.aglasem.com

aglasem.com

गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. कांग्रेस पर किसका प्रभुत्व था ?
2. गांधी जी अक्सर किसकी इच्छाओं के सामने झुक जाते थे ?
3. सन 1920 तक नेशनल कांग्रेस ने किसकी नीतियों को अपनाकर संघर्ष किया ?
4. इसके बाद कौन-सा आंदोलन हुआ ?

प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1. विश्व युद्ध की समाप्ति पर क्या हुआ ?
2. मार्शल लॉ क्या था ?
3. इस समय लोगों की क्या स्थिति थी ?
4. गांधी जी ने लोगों को क्या संदेश दिया ?
5. भारतीय जनता किस-किस के भय में जीवन जी रही थी ?
6. गांधी जी के संदेश ' डरो मत ' का जनता पर क्या प्रभाव पड़ा ?
7. भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किन दो गुटों ने जन्म लिया ?
8. गांधी जी का उद्देश्य क्या था ?
9. गांधी जी की सक्रियता को दोहरा आह्वान क्यों माना गया ?
10. गांधी जी की कथनी और करनी में मेल था | कैसे ?
11. भारत में कभी जातीय सवाल क्यों नहीं उठे थे ?
12. कांग्रेस किन दो विचारों पर अडिग थी ?
13. मुसलमानों को अलग धार्मिक गुट निर्मित करने में किस नेता ने पूर्ण सहयोग दिया ?
14. कांग्रेस किस प्रयास में असफल रही ?
15. स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु मिस्टर जिन्ना के क्या विचार थे ?

<u>उत्तर कुंजी</u>

docs.aglasem.com

aglasem.com

गद्यांश – 1 उत्तर

1. गांधी जी ने कांग्रेस के संगठन में प्रवेश किया और तत्काल उसके संविधान में पूरी तरह परिवर्तन ला दिया |
2. किसान वर्ग ने प्रवेश किया |
3. इस संगठन का लक्ष्य और आधार था सक्रियता | ऐसी सक्रियता जिसका आधार शांतिपूर्ण पद्धति था |
4. वह कांग्रेस की मूल नीति के खिलाफ थे |
5. काम करने का नया तरीका पूरी तरह शांतिपूर्ण था |

गद्यांश – 2 उत्तर

1. कांग्रेस पर गांधी जी का प्रभुत्व था |
2. गांधीजी अक्सर दूसरों की इच्छाओं के सामने झुक जाते थे |
3. गांधी जी की नीतियों को अपनाकर अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध संघर्ष किया |
4. सविनय अवज्ञा आंदोलन हुआ |

प्रश्नों के उत्तर :

1. विश्व युद्ध के दौरान भारतीयों का इस्तेमाल करने के लिए सरकार ने बहुत वायदे किए थे और लोगों को इस बात की आशा थी कि अब जीवन में राहत व प्रगति के क्षण आएँगे लेकिन युद्ध समाप्त होते ही सरकार ने तो दमनकारी कानूनों का निर्माण कर पंजाब में ' मार्शल लॉ ' भी घोषित किया जिससे लोगों की उम्मीदों पर पानी फिर गया |
2. मार्शल लॉ ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाया गया एक ऐसा कानून था जिसमें किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय बिना पुलिस व न्यायालय की इजाज़त के गोली का निशाना बनाया जा सकता था |
3. इस समय सभी लोग किसान, मजदूर व मध्यम वर्ग मुश्किलों से भरा जीवन जी रहे थे | शोषण की प्रक्रिया ज़ोरों पर थी | लोगों के पौरुष को निरंतर कुचला जा रहा था | गरीबी निरंतर बढ़ती जा रही थी |

docs.aglasem.com
aglasem.com

4. गांधी जी ने लोगों को सत्य का साथ देते हुए, निर्भय होने व कर्म करने का संदेश दिया |
5. ब्रिटिश सरकार ने चारों और खौफ़नाक वातावरण बनाया था, इसी कारण भारतीय जनता व्यापक दमनकारी, दमघोंटू वातावरण, सेना का, पुलिस का, ख़ुफ़िया विभाग का, अफ़सरों व जमींदारों का, साहूकारों का, बेकारी व भुखमरी के भय तले जीवन जी रही थी |
6. गांधी जी के संदेश ' डरो मत ' से लोगों का ब्रिटिश सरकार के प्रति भय कम हो गया | अब वे डरकर या छिपकर काम कम करने लगे जिससे उनमें काफी परिवर्तन आया | वे कार्यों की ओर अग्रसर हुए | यह एक मनोवैज्ञानिक बदलाव था |
7. नरम दल और गरम दल |
8. गांधी जी का उद्देश्य था लोगों को प्रेरित करके उनमें सक्रियता का भाव जागृत करना |
9. गांधी जी की सक्रियता को दोहरा आह्वान माना गया क्योंकि एक ओर तो उनका लक्ष्य था विदेशी शासन को चुनौती देना और दूसरी ओर सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़कर देश की समस्याओं को हल करना व दलित जातियों को ऊपर उठाने के साथ छुआछूत के अभिशाप को समाप्त करना |
10. गांधी जी की कथनी और करनी में मेल था अर्थात् जो कहते थे वही करके भी दिखाते थे | ऐसा इसलिए सत्य है क्योंकि अपने विचारों की शुरुआत वे स्वयं अपने से करते थे |
11. भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख व इसाई सभी जातियों के लोग समान रूप से रहते थे | इसलिए कभी जातीय सवाल नहीं उठे थे |
12. कांग्रेस राष्ट्रीय एकता और लोकतंत्र की भावना पर अडिग थी |
13. मुसलमानों को अलग धार्मिक गुट निर्मित करने में मिस्टर जिन्ना ने पूरा सहयोग दिया | उन्होंने ही ब्रिटिश सरकार के समक्ष दो राष्ट्रों भारत और पाकिस्तान का प्रस्ताव रखा |
14. कांग्रेस ने बहुत प्रयास किया कि सांप्रदायिक तत्वों को राजनीति में न लाया जाए लेकिन मुस्लिम लीग ने सहयोग न किया और कांग्रेस राष्ट्रीय एकता कायम रखने में असफल रही |

docs.aglasem.com
aglasem.com

15. मिस्टर जिन्ना ने स्वतंत्रता की माँग को नया मोड़ दे दिया | उन्होंने अपना विचार दिया कि भारत में दो राष्ट्र हैं हिंदू और मुसलमान | इसी विचारधारा से पाकिस्तान व भारत के विभाजन की अवधारणा का विकास हुआ | जिसका परिणाम यह निकला कि स्वतंत्रता मिलते ही भारत दो टुकड़ों में बँट गया |

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. प्रथम विश्वयुद्ध के समय राजनीतिक स्थिति क्या थी?
प्रश्न 2. कांग्रेस में दो दल कौन-कौन से थे?
प्रश्न 3. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद देश में लोगों की क्या स्थिति थी?
प्रश्न 4. मार्शल लॉ क्या था?
प्रश्न 5. गांधी जी द्वारा अहवान करने पर देश की आम जनता पर क्या प्रभाव पड़ा?
प्रश्न 6. भारतीय संस्कृति के बारे में गांधी जी के क्या विचार थे?
प्रश्न 7. कांग्रेस किस प्रयासों में असफल रही?
प्रश्न 8. गांधी जी के सपनों का भारत कैसा था?
प्रश्न 9. प्रथम विश्व युद्ध का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?
प्रश्न 10.गांधी जी की कार्यप्रणाली क्या थी?

उत्तरमाला

1. प्रथम विश्व युद्ध के समय राजनीतिक स्थिति उतार पर थी।

2. कांग्रेस में दो दल थे (1) गरम दल (2) नरम दल

3. प्रथम विश्वयुद्ध के बाद देश में आम लोगों की स्थिति दयनीय थी। किसान, मजदूर, वर्ग, मध्यम वर्ग सभी आक्रांत थे। उनका बड़े पैमाने पर शोषण हो रहा था। देश में भुखमरी और गरीबी बढ़ती जा रही थी।

4. 'मार्शल लॉ' अंग्रेज़ी सरकार द्वारा बनाया गया एक ऐसा कानून था जिसमें किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय पुलिस व न्यायालय के आदेश के बगैर गोली का निशाना बनाया जा सकता था।

5. गांधी जी द्वारा आम जनता को अह्वान करने पर 'डरो मत' किए जाने पर लोगों में ब्रिटिश सरकार का डर समाप्त हो गया। वे अपने कार्य खुलेआम करने लगे। उनमें हौंसला और साहस की वृद्धि हुई और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा।

docs.aglasem.com
aglasem.com

6. गांधी जी ने भारतीय संस्कृति के बारे में लिखित रूप में कहा कि "भारतीय संस्कृति न हिंदू है न इस्लाम, न पूरी तरह से कुछ और है। यह सबका मिलाजुला रूप है। उन्होंने हिंदू धर्म को सार्वभौमिक यानी सबके लिए समान रूप देना चाहा। सत्य के घेरे में सबको शामिल करने का प्रयास किया।

7. कांग्रेस ने बहुत प्रयास किया कि सांप्रदायिक तत्वों को राजनीति में न लाया जाए लेकिन मुस्लिम लीग ने सहयोग न किया और राष्ट्रीय एकता कायम रखने में असफल रही।

8. गांधी जी ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे- जिसमें गरीब-से-गरीब व्यक्ति भी यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है जिसके निर्माण में उसका योगदान रहा है। एक ऐसा भारत हो जिसमें लोगों के बीच ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद न हो। ऐसा भारत जिसमें सभी जातियाँ समभाव से रहें। ऐसा भारत हो जिसमें भेद-भाव से रहित हो, छुआछूत की जगह न हो, नशीली मदिरा और दवाइयों के अभिशाप के लिए कोई जगह नहीं हो, जिसमें स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार हों, यही गांधी जी के सपनों का भारत है।

9. प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर देश में राहत और प्रगति की बजाय दमनकारी कानून और पंजाब में मार्शल लॉ लागू हुआ। जनता में अपमान की कड़वाहट और क्रोध फैल गया और शोषण का बाजार गर्म था। इससे लोगों की आशा निराशा में बदल गई।

10. गांधी जी की कार्य प्रणाली अहिंसात्मक थी, उसमें हिंसा के लिए लेशमात्र की जगह नहीं थी। उनके काम करने का तरीका पूर्णतया शांतिपूर्वक था लेकिन जिस बात को गलत समझा जाता था उसके आगे सिर झुकाना भी उन्होंने कबूल नहीं किया। उन्होंने लोगों को अंग्रेजों के द्वारा दी गई पदवियाँ वापस करने के लिए प्रेरित किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन व असहयोग आंदोलन उन्हीं की देख-रेख में भारत में चले, जिन्होंने अंग्रेज़ी सरकार को उखाड़कर रख दिया।

15. तनाव

प्रश्न- 1. भारत छोड़ो आंदोलन किस वर्ष प्रारंभ हुआ?

प्रश्न- 2.. कांग्रेस कमेटी ने किसके सामने अपनी अपील पेश की?

प्रश्न-3 कांग्रेस के सभापति कौन थे? तनाव पाठ के आधार पर बताइये।

प्रश्न 4 भारत छोड़ो प्रस्ताव रखने का कारण स्पष्ट कीजिए। तनाव पाठ के आधार पर बताइये।

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न-5 सभापति और गाँधीजी ने प्रस्ताव के बारे में क्या निर्णय लिया? तनाव पाठ के आधार

पर बताइए।

प्रश्न-6 कांग्रेस कमेटी ने अपने आवेदन प्रस्ताव में अंग्रेजों से क्या अपील की थी? तनाव पाठ के आधार पर बताइये ।

प्रश्न-7 कमेटी ने भारत में अंतरिम सरकार बनाने का क्या सुझाव कर दिया और संयुक्त राष्ट्र और ब्रिटेन से क्या अपील की?

प्रश्न-8 वर्ष 1942 में आरंभ के महीनों में भारत में तनाव का माहौल क्यों बना हुआ था?

उत्तर कुंजी

1. भारत छोड़ो आंदोलन वर्ष 1942 में आरम्भ हुआ।
2. ब्रिटेन तथा संयुक्त राष्ट्र के सामने कांग्रेस ने अपनी अपील पेश की।
3. कांग्रेस के सभापती 'मौलाना अबुल कलाम' थे।
4. भारत छोड़ो प्रस्ताव रखने का यह कारण था कि भारतीय अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित थे। भारतीय जनता में अंग्रेजों के विरुद्ध आक्रोश था। इस प्रस्ताव में जनता से यह अपील की गई थी कि अब अंग्रेजों को भारत छोड़ देना चाहिए। इसमें पुरुषों ने ही नहीं, बल्कि स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।
5. उस समय कंग्रेस के सभापति मौलाना अबुल कलाम आजाद थे। उन्होंने और गाँधीजी ने एकमत होकर यह निर्णय लिया कि उनका अगला कदम ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि वायसराय से मुलाकात करना और संयुक्त राष्ट्रों के मुख्याधिकारियों से एक सम्मानपूर्ण समझौते के लिए अपील करना है और अब जन आंदोलन भी होकर ही रहेगा।
6. यह एक लम्बा प्रस्ताव था। इस प्रस्ताव में अंतरिम सरकार बनाने का आवेदन था, जिसमें भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके। इसमें मित्र शक्तियों के सहयोग से भारत की सुरक्षा और अपने सारे हथियारबंद और अहिंसक शक्तियों के साथ बाहरी आक्रमण को रोकने का प्रस्ताव भी था।

7. कांग्रेस कमेटी ने 7 और 8 अगस्त, 1942 को बैठक कर भारत छोडो प्रस्ताव पर विचार और बहस की। इसमें स्पष्ट किया गया था कि अब अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए विवश करना होगा। इसी दिन इस प्रस्ताव को पारित करते समय ही इस प्रस्ताव में अंतरिम सरकार बनाने का भी सुझाव दिया गया था। ऐसी

docs.aglasem.com
aglasem.com

अंतरिम सरकार जिसमें सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो। कांग्रेस कमेटी ने भारत एवं संसार के सभी देशों की आजादी के लिए ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र से

अपील की तथा गाँधीजी के नेतृत्व में एक अहिंसक जन आंदोलन शुरू करने की मांग भी की।

8. वर्ष 1942 के आरंभ के महीनों में तनाव का माहौल इसलिए बना हुआ था क्योंकि युद्ध का समय नजदीक आता जा रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। ऐसे माहौल में भारत के शहरों पर हवाई हमलों की संभावना बढ़ गई थी। इनका परिणाम क्या होगा, क्या भारत और इंग्लैंड के संबंधों में दूरी बढ़ जाएगी, आदि प्रश्न तनाव का वातावरण बना रहे थे ।

दो पृष्ठभूमियाँ

1. वर्ष 1942 में किसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
2. अकाल के दौरान कलकता की हालत कैसी थी?
3. वर्ष 1942 का विद्रोह असफल क्यों रहा?
4. कलकत्ता में अकाल के समय कैसी स्थिति थी?
5. 1943 ई० में भारत को किस भीषण प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा, इसका प्रभाव कहाँ कहाँ तक था ?

6 वर्ष 1942 में नेताओं की गिरफ्तारी का आम जनता पर किस तरह का प्रभाव पड़ा?

7.अकाल के समय कलकत्ता की स्थिति का अवलोकन करिए?

8. नेहरू जी ने अपने लेखन 'भारत की खोज' में किन-किन विचारों को स्थान देकर भारतीयों को कैसे प्रेरित किया है?

उत्तर कुंजी

1. वर्ष 1942 में युवा वर्ग तथा विशेषकर विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण कार्य किया।
2. अकाल के दौरान कलकत्ता की हालत चिंताजनक थी।
3. वर्ष 1942 का विद्रोह योजनाबद्ध तरीके से अंजाम नहीं दिए जाने के कारण असफल रहा।
4. अकाल ने कलकता की आम जनता को अधिक प्रभावित किया, सड़कों पर लोगों की लाशें मिली थी और दूसरी और अभिजात्य वर्ग था, जिस पर अकाल या लोगों के दुख-दर्द का कोई असर ही न था वह अपनी ही विलासिता में मस्त था।

docs.aglasem.com
aglasem.com

5.1943 ई० में भारत को भीषण अकाल का सामना करना पड़ा था। इस अकाल का प्रभाव

बंगाल और पूर्वी तथा दक्षिण भारत की बहुसंख्यक जनता पर पड़ा।

6. 1942 में नेताओं की गिरफ्तारी तथा गोलीबारी की बात सुनकर आम जनता भड़क उठी। जनता ने सहज तथा हिंसक प्रदर्शन किए जनता इतनी उत्तेजित हो गई कि चुप नहीं बैठ सकी तथा तोड़-फोड़ करने से भी नहीं चूकी।

7. अकाल के समय कलकत्ता की आम जनता अधिक प्रभावित हुई सड़कों पर चारों और लोगों की लाशें बिछ गई तथा दूसरी तरफ अभिजात्य वर्ग था, जिसके सामाजिक जीवन पर कोई परिवर्तन नहीं आया था। उस पर न तो अकाल का कोई प्रभाव हुआ और न ही लोगों के दुःख-दर्द का कोई असर था। यह वर्ग अपनी ही विलासिता ते मग्न था। उसका जीवन उल्लास से भरा था।

8. नेहरू जी ने भारत की खोज लेखन में निम्न विचारों को स्थान देकर भारतीयों को प्रेरित करने का प्रयास किया है

भारत एक भौगोलिक व आर्थिक सत्ता है, उसकी विभिन्नता में सांस्कृतिक एकता है। भारत पर विदेशी जातियों के कितने ही आक्रमण हुए लेकिन उसकी आत्मा अर्थात् अस्तित्व को कोई जीत न सका, भले ही शासन सत्ता बदलती रही।

भारत का अतीत सदा भारतीयों के साथ जुड़ा रहेगा।

16. अपठित गद्यांश :

1

जिस प्रकार बीज के उगने और बढ़ने के लिए मौसम विशेष नहीं, अपेक्षित परिस्थितियों का निर्माण जरूरी है। उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, मन की सकारात्मक वृत्ति अनिवार्य है और वह सकारात्मक वृत्ति है हमारा संकल्प। संकल्पाः कल्पतरवः, तेजः कल्पकोद्यानम्' अर्थात संकल्प ही कल्पतरु हैं और तेज अथवा मन उन कल्पतरुओं का उद्यान है। जैसी कल्पना वैसा उद्यान अर्थात जीवन की दिशा और दशा। गहन संकल्प से ही संभव है पूर्ण सफलता। कुछ कर गुजरने के लिए वास्तव में मौसम अथवा बाहरी परिस्थितियाँ ही सब कुछ नहीं हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है मन। इस संपूर्ण सृष्टि के सृजन के मूल में मन ही तो है। मन हीवह अदृश्य

docs.aglasem.com

aglasem.com

सूक्ष्म बीज अथवा सत्ता है जिससे यह पृथ्वी रूपी विशाल वट वृक्ष अस्तित्व में आया और निंरतर पल्लवित-पुष्पित हो रहा है। तभी तो कहा गया है। कुछ कर गुजरने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए। साधन सभी जुट जाएँगे संकल्प का धन चाहिए।

उपरोक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए-

(क) जीवन में कुछ कर गुज़रने के लिए आवश्यक है-
(1) मन और मौसम
(2) मन
(3) अनुकुल परिस्थितियाँ
(4) मौसम
(ख) कार्य में सफलता के लिए अनिवार्य है-
(1) परिस्थितियाँ
(2) लोगों की सहायता
(3) सकारात्मक वृत्ति
(4) पर्याप्त ज्ञान
(ग) बीज के उगने और बढ़ने के लिए ज़रूरी है-
(1) अपेक्षित परिस्थितियाँ
(2) मौसम विशेष
(3) किसान का कुशल होना
(4) उपर्युक्त सभी
(घ)हमारी सकारात्मक वृत्ति है-
(1) साहस
(2) विवेक
(3) बुद्धि
(4) संकल्प
(ड.) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है-
(1) संकल्प का धन
(2) धन का महत्त्व
(3) कर्मठता
(4) बीज की कथा

2

काशी के सेठ गंगादास एक दिन गंगा में स्नान कर रहे थे कि तभी एक व्यक्ति नदी में कूदा और डुबकियाँ खाने लगा। सेठजी तेजी से तैरते हुए उसके पास पहुँचे और किसी

docs.aglasem.com
aglasem.com

तरह खींच कर उसे किनारे ले आए। वह उनका मुनीम नंदलाल था। उन्होंने पूछा, 'आप को किसने गंगा में फेंका?' नंदलाल बोला, 'किसी ने नहीं, मैं तो आत्महत्या करना चाहता था। 'सेठजी ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, 'मैंने आप के पाँच हजार रुपये चुरा कर सट्टे में लगाए और हार गया। मैंने सोचा कि आप मुझे जेल भिजवा देंगे इसलिए बदनामी के डर से मैंने मर जाना ही ठीक समझा।' कुछ देर तक सोचने के बाद सेठजी ने कहा, 'तुम्हारा अपराध माफ किया जा सकता है लेकिन एक शर्त है कि आज से कभी किसी प्रकार का सट्टा नहीं लगाओगे।' नंदलाल ने वचन दिया कि वह अब ऐसे काम नहीं करेगा। सेठ ने कहा, 'जाओ माफ किया। पाँच हजार रुपये मेरे नाम घरेलू खर्च में डाल देना।' मुनीम भौंचक्का रह गया। सेठजी ने कहा, 'तुमने चोरी तो की है लेकिन स्वभाव से तुम चोर नहीं हो। तुमने एक भूल की है, चोरी नहीं। जो आदमी अपनी एक भूल के लिए मरने तक की बात सोच ले, वह कभी चोर हो नहीं सकता।

उपरोक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए-

(क) सच्चे भक्त से तात्पर्य है-

(1) बिना स्वार्थ के पूजा करना
(2) रोज मंदिर जाना
(3) एक ही भगवान की पूजा करना
(4) अपने धर्म में कट्टरता

(ख) मुनीम आत्महत्या क्यों करना चाहता था-

(1) जीवन से छुटकारा पाने के लिए
(2) सेठजी को प्रभावित करने के लिए
(3) दुनिया को दिखाने के लिए
(4) अपराध बोध होने के कारण

(ग) हमें समाज में किस चीज का डर सबसे ज्यादा होता है-

(1) परिवार का
(2) नौकरी का
(3) रुतबे का
(4) बदनामी का

(घ) सेठजी को मालूम था कि मुनीम चोर है लेकिन फिर उन्होंने उसे छोड़ दिया क्योंकि-

(1) बाद में उसे जीवन भर गुलाम बनाना चाहते थे
(2) भूल सुधारने का मौका देना चाहते थे
(3) दुनिया को प्रभावित करना चाहते थे
(4) समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते थे

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है-

(1) 'चोरी की सजा'
(2) 'मेरा प्रण'

docs.aglasem.com
aglasem.com

(3) 'सेठजी की दयालुता'
(4) 'मुनीम जी का दुख'

3

कार्य का महत्त्व और उसकी सुंदरता उसके समय पर संपादित किए जाने पर ही है। अत्यंत सुघड़ता से किया हुआ कार्य भी यदि आवश्यकता के पूर्व न पूरा हो सके तो उसका किया जाना निष्फले ही होगा। चिड़ियों द्वारा खेत चुग लिए जाने पर यदि रखवाला उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करे तो सर्वत्र उपहास का पात्र ही बनेगा।
उसके देर से किए गए उद्यम का कोई मूल्य नहीं होगा। श्रम का गौरव तभी है जब उसका लाभ किसी को मिल सके। इसी कारण यदि बादलों द्वारा बरसाया गया जल कृषक की फ़सल को फलने-फूलने में मदद नहीं कर सकता तो उसका बरसना व्यर्थ ही है। अवसर का सदुपयोग न करने वाले व्यक्ति को इसी कारण पश्चाताप करना पड़ता है।

प्रश्न

(क) जीवन में समय का महत्त्व क्यों है?

(i) समय काम के लिए प्रेरणा देता है।
(ii) समय की परवाह लोग नहीं करते।

(iii) समय पर किया गया काम सफल होता है।

(iv) समय बड़ा ही बलवान है।

(ख) खेत का रखवाला उपहास का पात्र क्यों बनता है?
(i) खेत में पौधे नहीं उगते।
(ii) समय पर खेत की रखवाली नहीं करता।
(iii) चिड़ियों का इंतजार करता रहता है।
(iv) खेत पर मौजूद नहीं रहता।।
(ग) चिड़ियों द्वारा खेत चुग लिए जाने पर यदि रखवाला उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करे तो सर्वत्र उपहास का पात्र ही बनेगा। इस पदबंध का प्रकार होगा
(i) संज्ञा
(ii) सर्वनाम
(iii) क्रिया
(iv) क्रियाविशेषण
(घ) बादल का बरसना व्यर्थ है, यदि
(i) गरमी शांत न हो।
(ii) फ़सल को लाभ न पहुँचे

docs.aglasem.com
aglasem.com

(iii) किसान प्रसन्न न हो
(iv) नदी-तालाब न भर जाएँ

(ङ) गद्यांश का मुख्य भाव क्या है?

(i) बादल का बरसना
(ii) चिड़ियों द्वारा खेत का चुगना
(iii) किसान का पछतावा करना
(iv) समय का सदुपयोग

4

मानव जाति को अन्य जीवधारियों से अलग करके महत्त्व प्रदान करने वाला जो एकमात्र गुरु है, वह है उसकी विचार-शक्ति। मनुष्य के पास बुधि है, विवेक है, तर्कशक्ति है अर्थात उसके पास विचारों की अमूल्य पूँजी है। अपने सविचारों की नींव पर ही आज मानव ने अपनी श्रेष्ठता की स्थापना की है और मानव-सभ्यता का विशाल महल खड़ा किया है। यही कारण है कि विचारशील मनुष्य के पास जब सविचारों का अभाव रहता है तो उसका वह शून्य मानस कुविचारों से ग्रस्त होकर एक प्रकार से शैतान के वशीभूत हो जाता है। मानवी बुधि जब सद्भावों से प्रेरित होकर कल्याणकारी योजनाओं में प्रवृत्त रहती है तो उसकी सदाशयता का कोई अंत नहीं होता, किंतु जब वहाँ कुविचार अपना घर बना लेते हैं तो उसकी पाशविक प्रवृत्तियाँ उस पर हावी हो उठती हैं। हिंसा और पापाचार का दानवी साम्राज्य इस बात का द्योतक है कि मानव की विचार-शक्ति, जो उसे पशु बनने से रोकती है, उसका साथ देती है।

प्रश्न

(क) मानव जाति को महत्त्व देने में किसका योगदान है?

(i) शारीरिक शक्ति का
(ii) परिश्रम और उत्साह का
(iii) विवेक और विचारों का
(iv) मानव सभ्यता का

(ख) विचारों की पूँजी में शामिल नहीं है

(i) उत्साह
(ii) विवेक
(iii) तर्क
(iv) बुधि

(ग) मानव में पाशविक प्रवृत्तियाँ क्यों जागृत होती हैं?

(i) हिंसाबुधि के कारण
(ii) असत्य बोलने के कारण
(iii) कुविचारों के कारण
(iv) स्वार्थ के कारण

docs.aglasem.com
aglasem.com

(घ) "मनुष्य के पास बुधि है, विवेक है, तर्कशक्ति है' रचना की दृष्टि से उपर्युक्त वाक्य है

(i) सरल
(ii) संयुक्त
(iii) मिश्र
(iv) जटिल

(ड.) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(i) मनुष्य का गुरु
(ii) विवेक शक्ति
(iii) दानवी शक्ति
(iv) पाशविक प्रवृत्ति

5

उन्नीसवीं शताब्दी में यह राष्ट्रीय जागरण संपूर्ण भारत में किसी-न-किसी रूप में अभिव्यक्त हो रहा था, जिसमें भारतीयता के साथ आधुनिकता का संगम था। स्वामी विवेकानंद ने तो अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों से भारत लौटकर पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्वों के सम्मिलन से भारत को आधुनिक बनाने का स्वप्न देखा था। उन्होंने माना कि भारत और पश्चिम की मूल गति एवं उद्देश्य भिन्न हैं, परंतु भारत को जागना होगा, कुसंस्कारों एवं जाति-विद्वेष को त्यागना होगा, शिक्षित होकर देश की अशिक्षित, गरीब जनता को ही 'दरिद्रनारायण' मानकर उनकी सेवा करनी होगी, उनका उत्थान करना होगा। विवेकानंद का मत था कि भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। यहाँ गरीबी अपराध एवं पाप नहीं है तथा दरिद्रों की अपेक्षा धनियों को अधिक प्रकाश की जरूरत है। वे चाहते थे कि हम नीच, अज्ञानी, दरिद्र-सभी को भाई मानें और गर्व से कहें-हम सब भाई भारतवासी हैं। मनुष्य को मानव बनाना, आदमी को इंसान बनाना आवश्यक है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो हमें संस्कारी मानव, हमदर्द इंसान बना सके। विचारों में विवेकानंद गांधी से अधिक दूर नहीं थे और ऐसे ही विचारकों का चिंतन उन्नीसवीं सदी में भारत को उद्वेलित कर रहा था।

प्रश्न

(क) किस सदी में संपूर्ण भारत में राष्ट्रीय जागरण अभिव्यक्त हो रहा था?

(i) उन्नीसवीं सदी में
(ii) अठारहवीं सदी में
(iii) बीसवीं सदी में
(iv) इक्कीसवीं सदी में

(ख) विवेकानंद ने क्या सपना देखा था?

(i) विदेशी तर्ज पर भारत का विकास
(ii) पूर्व व पश्चिम के तत्वों का मिलन

docs.aglasem.com
aglasem.com

(iii) भारत को आधुनिक बनाना
(iv) (ख) व (ग)

(ग) विवेकानंद के अनुसार भारतीयों को कैसी शिक्षा की जरूरत है?

(i) आदमी को आदमी बनाने वाली
(ii) अंग्रेजी पढ़ाने वाली
(iii) भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने वाली
(iv) कोई नहीं

(घ) "पश्चिम' का विशेषण बताइए

(i) पश्चिमी
(ii) पाश्चात्य
(iii) पश्च
(iv) कोई नहीं

(ङ) विवेकानंद के अनुसार किसे अधिक प्रकाश की ज़रूरत है?

(i) दरिद्र
(ii) धनिकों
(iii) सामंतों
(iv) कोई नहीं

उत्तर कुंजी

अपठित गद्यांश -1

(क) 2
(ख) 3
(ग) 1
(घ) 4
(ड.) 1

अपठित गद्यांश -2
(क) 1
(ख) 4
(ग) 4
(घ) 2
(ड.) 3

अपठित गद्यांश -3
(क) 3
(ख) 2
(ग) 1
(घ) 2
(ड.) 4

अपठित गद्यांश -4

docs.aglasem.com
aglasem.com

(क) 3
(ख) 1
(ग) 3
(घ) 1
(ड.) 2

अपठित गद्यांश -5

(क) 1
(ख) 4
(ग) 1
(घ) 1
(ड.) 2

17. मुहावरा

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है **'अभ्यास होना'** या **'आदी होना'**। इस प्रकार मुहावरा शब्द अपने–आप में स्वयं मुहावरा है, क्योंकि यह अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर असामान्य अर्थ प्रकट करता है। मुहावरा संक्षिप्त होता है, परन्तु अपने इस संक्षिप्त रूप में ही किसी बड़े विचार या भाव को प्रकट करता है।

1. **इधर की उधर करना**–(चुगली करके भड़काना)

मनोज की इधर की उधर करने की आदत है, इसलिए उस पर विश्वास मत करना।

2. **इन्द्र की परी**–(अत्यन्त सुन्दर स्त्री)

राजेन्द्र की पत्नी तो इन्द्र की परी लगती है।

3. **इन तिलों में तेल नहीं**–(किसी भी लाभ की आशा न करना)

कपिल ने कारखाने को देख सोच लिया इन तिलों में तेल नहीं और बैंक से ऋण लेकर बहन का विवाह किया।

docs.aglasem.com

aglasem.com

4. **ईंट से ईंट बजाना**–(नष्ट–भ्रष्ट कर देना)

असामाजिक तत्त्व रात–दिन ईंट से ईंट बजाने की सोचा करते हैं।

5. **ईंट का जवाब पत्थर से देना**–(दुष्ट के साथ दुष्टता करना)

दुश्मन को सदैव ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए।

6. **उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ना**–(अल्प सहारा पाकर सम्पूर्ण की

प्राप्ति हेतु उत्साहित होना) रामचन्द्र ने नौकर को एक कमरा मुफ़्त में रहने के लिए दे दिया; थोड़े समय बाद वह परिवार को साथ ले आया और चार कमरों को देने का आग्रह करने लगा। इस पर रामचन्द्र ने कहा, तुम तो उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ने की बात कर रहे हो।

7. **एक म्यान में दो तलवारें**–(एक वस्तु या पद पर दो शक्तिशाली

व्यक्तियों का अधिकार नहीं हो सकता) विद्यालय की प्रबन्ध–समिति ने दो–दो प्रधानाचार्यों की नियुक्ति करके एक म्यान में दो तलवारों वाली बात कर दी है।

8. **एक की चार लगाना**–(छोटी बातों को बढ़ाकर कहना)

रमेश तुम तो अब हर बात में एक की चार लगाते हो।

9. **एक पंथ दो काज**–(एक कार्य के साथ दूसरा कार्य भी पूरा करना)

आगरा में मेरी परीक्षा है, इस बहाने ताजमहल भी देख लेंगे। चलो मेरे तो एक पंथ दो काज हो जाएंगे।

10. **एक और एक ग्यारह होते हैं**–(संघ में बड़ी शक्ति है)

docs.aglasem.com

aglasem.com

भाइयों को आपस में लड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

11. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**–(शर्म के मारे मुँह न दिखाना)

आप इतने सभ्य परिवार के होते हुए भी दुष्कर्म करते हैं, आपको चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।

12. **कच्चा खा/चबा जाना**–(पूरी तरह नष्ट कर देने की धमकी देना)

जब से दोनों मित्र अशोक और नरेश की लड़ाई हुई है, तब से दोनों एक–दूसरे को ऐसे देखते हैं, जैसे कच्चा चबा जाना चाहते हों।

13. **कब्र में पाँव लटकना**–(वृद्ध या जर्जर हो जाना/मरने के करीब होना)

"सुनीता के ससुर की आयु काफ़ी हो गई है। अब तो उनके कब्र में पाँव लटक गए हैं।" सोनी ने अफसोस ज़ाहिर करते हुए कहा।

14. **कलेजे पर पत्थर रखना**–(धैर्य धारण करना)

गरीब और कमजोर श्यामा को गाँव का चौधरी सबके सामने खरी–खोटी सुना गया, जिसको उसने कलेजे पर पत्थर रखकर सुन लिया।

15. **कलेजा ठण्डा होना**–(मन को शान्ति मिलना)

आशीष इन्जीनियर बन गया, माँ का कलेजा ठण्डा हो गया।

16. **कली खिलना**–(खुश होना)

बहुत पुराने मित्र आपस में मिले तो कली खिल गई।

docs.aglasem.com

aglasem.com

17. **कलेजा मुँह को आना**–(दुःख होना)

घायल की चीत्कार सुनकर कलेजा मुँह को आता हैं।

18. **कंधे से कंधा छिलना**–(भारी भीड़ होना)

दशहरा के त्योहार पर लगे मेले में इतनी भीड़ थी कि लोगों के कंधे–से–कंधे छिल गए।

19. **कान में तेल डालना**–(चुप्पी साधकर बैठे रहना)

राजेश से किसी बात को कहने का क्या लाभ; वह तो कान में तेल डाले बैठा रहता है।

20. **किए कराए पर पानी फेरना**–(बिगाड़ देना)

औरंगजेब ने मराठों से उलझकर अपने किए कराए पर पानी फेर दिया।

21. **कान भरना**–(चुगली करना)

मंथरा ने कैकेई के कान भरे थे।

22. **कान का कच्चा**–(किसी भी बात पर विश्वास कर लेना)

जहाँ अधिकारी कान का कच्चा होता है वहाँ सीधे, सरल, ईमानदार कर्मचारियों को परेशानी होती है।

23. **कच्ची गोली खेलना**–अनुभवहीन होना।

तुम हमें नहीं ठग सकते, हमने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं।

24. **काँटों पर लेटना**–(बेचैन होना)

docs.aglasem.com

aglasem.com

दुर्घटनाग्रस्त पुत्र जब तक घर नहीं आया, तब तक पूरा परिवार काँटों पर लोटता रहा।

25. **काँटा दूर होना**–(बाधा दूर होना)

राजीव के दूसरे प्रकाशन में जाने से बहुतों के रास्ते का काँटा दूर हो गया।

26. **घाव हरा करना**–(भूले दुःख की याद दिलाना)

मेरे अतीत को छेड़कर तुमने मेरा घाव हरा कर दिया।

27. **काटने दौड़ना**–(चिड़चिड़ाना/क्रोध करना)

विनीता बहुत कमजोर हो गई है। जरा–जरा सी बात पर काटने को दौड़ती है।

28. **कान गरम करना**–(दण्ड देना)

शरारती बच्चों के तो कान गरम करने पड़ते हैं।

29. **काम तमाम करना**–(मार डालना)

भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया।

30. **विष उगलना**–(क्रोधित होकर बोलना)

सामान्य बातों में विष उगलना अच्छी बात नहीं है।

18.अनुच्छेद-लेखन

docs.aglasem.com

aglasem.com

अनुच्छेद-लेखन की परिभाषा

किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गये सम्बद्ध और लघु वाक्य-समूह को अनुच्छेद-लेखन कहते हैं।

सरल शब्दों में- किसी भी विषय को संक्षिप्त एवं प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की कला को अनुच्छेद लेखन कहा जाता है।

'अनुच्छेद' शब्द अंग्रेजी भाषा के **'Paragraph'** शब्द का हिंदी पर्याय है। अनुच्छेद **'निबंध'** का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 से 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं।

भाषा-शैली सजीव एवं प्रभावशाली होनी चाहिए। शब्दों के सही चयन के साथ लोकोक्तियों एवं मुहावरों के समुचित प्रयोग से ही भाषा-शैली में उपर्युक्त गुण आ सकते हैं।अनुच्छेद लेखन को लघु निबंध भी कहा जा सकता है। इसमें सीमित सुगठित एवं समग्र दृष्टिकोण से किया जाता है। शब्द संख्या सीमित होने के कारण लिखते समय थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(1) अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत-बिंदु आदि बनानी चाहिए।

(2) अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करें।

(3) भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए।

(4) एक ही बात को बार-बार न दोहराएँ।

(5) अनावश्यक विस्तार से बचें, लेकिन विषय से न हटें।

(6) शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।

(7) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।

docs.aglasem.com

aglasem.com

(8) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण अनुच्छेद

1) जीवन संघर्ष है, स्वप्न नहीं पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

मनुष्य का जीवन वास्तव में सुख-दुःख, आशा-निराशा, ख़ुशी-दर्द आदि का मिश्रण है। यह न तो केवल फूलों की सेज है और न ही काँटों का ताज। वस्तुतः जीवन एक अनवरत संघर्ष का नाम है।जीवन की तुलना एक प्रवाहमान नदी से की जा सकती है। जिस प्रकार एक सरिता अविरल बहती रहती है, समुद्र में लहरे सदा गतिशील रहती हैं, वायु एक क्षण के लिए भी नहीं रुकती, सूर्य, चन्द्रमा, तारे सभी अपने-अपने नियत समय पर उदित एवं अस्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार जीवन की गति भी अविरल है। समय के साथ-साथ आगे बढ़ते रहने की प्रबल मानवीय लालसा ही जीवन है।

इस अविरल गति से प्रवाहमान जीवन में अनेक ऊँचे-नीचे रास्ते आते हैं, अनेक बाधाएँ आती हैं। इन्हीं बाधाओं से संघर्ष करते हुए जीवन आगे बढ़ता रहता है। यही कर्म है, यही सत्य है। जीवन में आने वाली बाधाओं से घबराकर रुक जाने वाला या पीछे हट जाने वाला व्यक्ति भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन सत्य हैं, जबकि स्वप्न असत्य। स्वप्न काल्पनिक है, अयथार्थ है। स्वप्न का महत्त्व केवल वहीं तक है, जहाँ तक वह मनुष्य के जीवन को आगे बढ़ाने में प्रेरक है। मनुष्य स्वप्न के माध्यम से ही ऐसी कल्पनाएँ करता है, जो अयथार्थ होती हैं, लेकिन उस काल्पनिक लोक को वह अपने परिश्रम, उमंग एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से यथार्थ में, वास्तविकता में परिवर्तित कर देता है। वास्तविक जीवन एक कर्तव्य पथ है, जिसके मार्ग में अनेक शूल बिखरे पड़े हैं, लेकिन मनुष्य की

docs.aglasem.com
aglasem.com

इच्छाशक्ति या दृढ़ संकल्प उन बाधाओं और काँटों की परवाह नहीं करता और उन्हें रौंदकर आगे निकल जाता हैं।

जीवन संघर्ष की लंबी साधना है। यह संघर्ष तब तक बना रहता है, जब तक मनुष्य के शरीर में साँस चलती रहती है, संघर्ष से बचा नहीं जा सकता।

2) विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

आज के युग को विज्ञापनों का युग कहा जा सकता है। आज सभी जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन नजर आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पाद एवं सेवा से संबंधित लुभावने विज्ञापन देकर उसे लोकप्रियता बनाने का हर संभव प्रयास करते हैं। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, उसकी विशेषता एवं प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है। विज्ञापनों के द्वारा किसी भी सूचना तथा उत्पाद की जानकारी, पूर्व में प्रचलित किसी उत्पाद में आने वाले बदलाव आदि की जानकारी सामान्य जनता को दी जा सकती है।

विज्ञापन का उद्देश्य जनता को किसी भी उत्पाद एवं सेवा की सही सूचना देना है, लेकिन आज विज्ञापनों में अपने उत्पाद को सर्वोत्तम तथा दूसरों के उत्पादों को निकृष्ट कोटि का बताया जाता है। आजकल के विज्ञापन भ्रामक होते हैं तथा मनुष्य को अनावश्यक खरीदारी करने के लिए प्रेरित करते हैं। अतः विज्ञापनों का यह दायित्व बनता है कि वे ग्राहकों को लुभावने दृश्य दिखाकर गुमराह नहीं करें, बल्कि अपने उत्पाद के सही गुणों से परिचित कराएँ। तभी उचित सामान ग्राहकों तक पहुँचेगा और विज्ञापन अपने लक्ष्य में सफल होगा।

(3) वृक्षारोपण का महत्त्व पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

docs.aglasem.com

aglasem.com

वर्तमान वैज्ञानिक युग में जहाँ विकास के नाम पर धरती का दोहन किया जा रहा है तथा पर्यावरण को प्रतिपल ध्वस्त किया जा रहा है वहाँ वृक्षारोपण का महत्त्व स्वतः सिद्ध हो जाता है। वृक्ष प्रकृति की अनमोल संपदा है। मनुष्य एवं वृक्ष का अटूट सम्बन्ध है। वृक्षों से प्राप्त लकड़ी विभिन्न रूपों में मनुष्य के काम आती है। वृक्षों से हमें फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, औषधियाँ आदि प्राप्त होती हैं। शुद्ध वायु एवं तपती दोपहर में छाया वृक्षों से ही प्राप्त होती है। वृक्ष वर्षा में सहायक होते हैं एवं भूमि को उर्वरक बनाते हैं। वे प्रदूषण को समाप्त कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। वृक्ष बाढ़-सूखा एवं मिट्टी के कटान आदि प्राकृतिक आपदाओं से हमारी रक्षा करते हैं हमारी संस्कृति में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है।

यदि मनुष्य जाति को बचाना है तो वृक्षों को बचाना होगा और हमें वृक्षारोपण का उत्सव करना होगा। इसीलिए एक बच्चा एक वृक्ष का नारा दिया गया है। वृक्षों की 50 मीटर की एक कतार वाहनों के शोर को 30-50 डेसीबल तक कम करती है। इसी तरह चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष वातावरण में उड़ रही धूल को रोकते एवं वायु को शुद्ध करते हैं। वनसंरक्षण का उद्देश्य केवल वृक्षों को लगाना ही नहीं वरन वृक्षारोपण करने के बाद उनकी उचित देखभाल भी है। निजी क्षेत्र में स्वयंसेवी युवकों को संगठन बनाकर वृक्षारोपण का कार्य करना चाहिए और वृक्षारोपण को सामूहिक समारोह के रूप में आयोजित करना चाहिए।

4) अपनी भाषा प्यारी भाषा पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

हर देश की अपनी भाषा होती है। भाषा के माध्यम से ही हम एक-दूसरे की बातों और विचारों को समझ और समझा पाते हैं। भारत देश में वैसे तो अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं पर "हिन्दी" हमारे देश की अपनी और प्यारी भाषा है। हिन्दी भाषा को 14 सितम्बर के दिन दुल्हन की तरह सजाया, धजाया और मनाया जाता है। इस दिन प्रतिवर्ष हम हिन्दी दिवस मनाते हैं। हिन्दी भाषा है भावनाओं की, भारत की संस्कृति और परंपराओं की इसलिए यह भाषा, एक प्यारी भाषा का दर्जा पाने की हकदार है। हिन्दी अपने आप में एक मिलनसार और विशाल हृदय वाली भाषा है, जिसने अन्य अनेक भाषाओं को भी व्यापक रूप में अपने शब्दकोश में समाहित किया

docs.aglasem.com
aglasem.com

हुआ है। हिन्दी हमारे देश की जन सम्पर्क की भाषा है और भारतीयों के दिल में रची-बसी भाषा है।

गूंज उठे भारत की धरती, हिन्दी के जय गानों से।

पूजित पोषित परिर्द्धित हो, बालक वृद्ध जवानों से।"

5) जहाँ-चाह वहाँ राह पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

जहाँ-चाह वहाँ राह प्रत्येक व्यक्ति के मन में किसी न किसी लक्ष्य को पाने की कामना रहती है। जिसके मन में जो चाह या कामना होती है वह उसकी पूर्ति की दिशा में कार्य करता है। मानव-जीवन में इच्छाशक्ति का अत्यंत महत्व है। व्यक्ति अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिए परिश्रम करता है। वह कर्म करने में रुचि रखता है तथा अपने लक्ष्य को पाने के लिए सर्वस्व समर्पित करने को तैयार रहता है। ऐसे व्यक्ति के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं, परंतु वह प्रत्येक बाधा का सामना करते हुए अपने पथ पर निरंतर अग्रसर होता है।

कठिनाइयों के बीच में से रास्ता निकालकर निरंतर आगे बढ़ने वाले लोग ही मानव जाति का आदर्श होते हैं। जब अथक परिश्रम के बाद हमारी इच्छाओं की पूर्ति होती है। तब हमारे भीतर स्वाभिमान, संतोष, सत्य आदि जीवन मूल्यों का वास होता है। ऐसे लोगों की राह पर चलकर ही अनेक लोग जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भी ऐसी ही एक महान नारी थीं। चाह से ही राह का निर्माण होता है। अतः कहा जा सकता है कि जहाँ चाह होती है वहाँ राह अपने आप बन जाती है।

6) विद्या सर्वोत्तम धन है। पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

विद्या एवं धन की तुलना- सामान्य तौर पर समाज में दो तरह की सोच रखने वाले लोग दिखाई देते हैं। एक वे लोग हैं, जो किसी भी प्रकार से धन अर्जित करके धनी बनकर

docs.aglasem.com

aglasem.com

अपने को सफल एवं जीवन को सार्थक मानते हैं। दूसरे प्रकार के लोग वे हैं, जो विद्या एवं ज्ञान के अर्जन में अपना समय लगाते हैं। धन के कारण बना धनी व्यक्ति वास्तविक धनी नहीं है, अपितु विद्या रूपी धन को एकत्र करके उसे ज्ञान एवं विवेक के रूप में सहेजने वाला ही वास्तविक धनी है।

विद्या की श्रेष्ठता- धन संग्रह करने वाले को चोर, डाकुओं एवं ठगों द्वारा धन के चुराए जाने का सदैव भय लगा रहता है। इसके विपरीत विद्या रूपी धन ऐसा धन है, जिसे न कोई चोर चुरा सकता हैं, न कोई दूसरा इसका उपयोग अपने संकीर्ण हितों की पूर्ति के लिए कर सकता है। संस्कृत साहित्य में विद्या की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है- 'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वानं सर्वत्र पूज्यते' अर्थात राजा अपने देश में पूजा जाता है, लेकिन विद्वान की पूजा सभी जगहों पर होती हैं।

हिंदी के कवि वृंद ने भी विद्या रूपी धन को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा है कि

''सुरसति के भंडार की बड़ी अपूरब बात।

ज्यौं खरचे त्यौं-त्यौं बढ़े, बिन खरचे घटि जात।''

विद्या रूपी धन का प्रभाव- विद्या से धन प्राप्त हो सकता है, किंतु धन से विद्या नहीं प्राप्त की जा सकती। धन खर्च करने पर समाप्त होता है, किंतु विद्या बाँटने अर्थात व्यय करने पर बढ़ती है। अतः यह कहा जा सकता है विद्या ही सर्वोत्तम धन है।

7) स्वतंत्रता का महत्त्व पर पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

ऐसा कहा जाता है कि गुलामी के पकवानों से आजादी की सूखी रोटियाँ भली हैं। स्वाधीनता या स्वतंत्रता का मनुष्य के जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। यहाँ तक कि यह मनुष्य ही नहीं, बल्कि सृष्टि के प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध एवं प्राकृतिक अधिकार है।

गुलामी या पराधीनता बहुत बड़ा अभिशाप है। पशु-पक्षी तक भी स्वतंत्र जीवन जीने के आकांक्षी होते हैं। हिंदी के प्रसिद्ध कवि डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की कविता में स्वतंत्रता की आकांक्षा को पक्षियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

पक्षी अपने लिए स्वतंत्रता की माँग करते हुए कहते हैं कि

''हम पक्षी उन्मुक्त गगन के पिंजर बद्ध न गा पाएँगे,

docs.aglasem.com

aglasem.com

कनक तीलियों से टकराकर पुलकित पंख टूट जाएँगे।"

स्वतंत्र रहकर पक्षी को नीम की 'कड़वी फलियाँ' खाना भी स्वीकार है, लेकिन पिंजरे में रहकर सोने की कटोरी में दिए गए मैदे से बना पकवान भी पसंद नहीं हैं। ज ब पशु-पक्षी इस प्रकार की इच्छा रखते हों, तो मनुष्य परतंत्र होकर किस प्रकार सुखी रह सकता है?

स्वतंत्रता व्यक्ति की निर्णायक शक्ति और सर्जनात्मक क्षमता के विकास को बढ़ावा देती है। अंग्रेजी की गुलामी के काल में हमारे देश की जनता का मानसिक, शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास अत्यंत बाधित हो गया था।

जब देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुए, तब से हमने व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की है। स्वतंत्रता सभी सुखों की जननी है।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी परतंत्रता को दुखदायी बताते हुए कहा है कि 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' अर्थात पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता। इस प्रकार व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए स्वतंत्रता का महत्त्व सर्वाधिक है।

(8) भारतीय किसान के कष्ट पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है। इस देश के किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। भारतीय कृषि मानसून पर निर्भर है और मानसून की अनिश्चितता के कारण प्रायः अन्नदाता को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। समय पर सिंचाई नहीं होने के कारण भी उन्हें आशानुरूप फसल की प्राप्ति नहीं हो पाती। आवश्यक व उपयोगी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण कृषकों की स्थिति और भी दयनीय हो गई है तथा उनके सामने दो वक्त की रोटी की समस्या खड़ी हो गई है। किसान एक कठोर दिनचर्या का पालन करता है। वह प्रातः उठता है और अपने हल व बैल लेकर खेतों की ओर चला जाता है। वह घंटों खेत जोतता है उसके पश्चात भोजन करता है। खाने के बाद पुनः वह अपने काम में व्यस्त हो जाता है। दिन-रात कठिन परिश्रम करने के बाद भी उसे उचित आहार तथा तन ढकने के लिए समुचित वस्त्र नसीब नहीं होता। सर्दी हो या गर्मी, धूप हो या बरसात उसे दिन-रात खेतों में कठोर परिश्रम करना पड़ता है। किसानों की स्थिति सुधारने के लिए सरकार ने कुछ उपाय किए है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

'राष्ट्रीय कृषक आयोग' का गठन किसानों की स्थिति सुधारने हेतु किया गया। राष्ट्रीय कृषक आयोग की संस्तुति पर भारत सरकार ने राष्ट्रीय कृषक नीति 2007 की घोषणा की। इसमें कृषकों के कल्याण एवं कृषि के विकास के लिए कई बातों पर जोर दिया है, साथ ही रोजगार गारंटी योजना, किसान क्रेडिट कार्ड आदि भी महत्त्वपूर्ण कदम साबित हुए हैं। अतः कह सकते हैं कि विभिन्न प्रकार के सरकारी प्रयासों एवं योजनाओं के कारण, आने वाले वर्षों में कृषक समृद्ध होकर भारतीय अर्थव्यवस्था को सही अर्थो में प्रगति की राह पर अग्रसर कर सकेंगे।

9) समय किसी के लिए नहीं रुकता पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

'समय' निरंतर बीतता रहता है, कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। जो व्यक्ति समय के मोल को पहचानता है, वह अपने जीवन में उन्नति प्राप्त करता है। समय बीत जाने पर कार्य करने से भी फल की प्राप्ति नहीं होती और पश्चात्ताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी सुबह समय पर उठता है, अपने दैनिक कार्य समय पर करता है तथा समय पर सोता है, वही आगे चलकर सफलता व उन्नति प्राप्त करता है। जो व्यक्ति आलस में आकर समय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। संतकवि कबीरदास जी ने भी कहा है :

''काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होइगी, बहुरि करेगा कब।।''

समय का एक-एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौटकर नहीं आता। इसलिए समय का महत्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय बरबाद न करके आगे की सुध लेना ही बुद्धिमानी है।

10) अभ्यास का महत्त्व पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

docs.aglasem.com

aglasem.com

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए, तो असाध्य को भी साधा जा सकता है। ईश्वर ने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त की। उसी प्रकार वरदराज ने, जो कि एक मंदबुद्धि बालक था, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी :

''करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।

रसरि आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।''

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

(11) विद्यालय की प्रार्थना-सभा पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रार्थना-सभा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। प्रत्येक विद्यालय में सबसे पहले प्रार्थना-सभा का आयोजन किया जाता है। इस सभा में सभी विद्यार्थी व अध्यापक-अध्यापिकाओं का सम्मिलित होना अत्यावश्यक होता है। प्रार्थना-सभा केवल ईश्वर का ध्यान करने के लिए ही नहीं होती, बल्कि यह हमें अनुशासन भी सिखाती है।

हमारे विद्यालय की प्रार्थना-सभा में ईश्वर की आराधना के बाद किसी एक कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा किसी विषय पर कविता, दोहे, विचार, भाषण, लघु-नाटिका आदि प्रस्तुत किए जाते हैं व सामान्य ज्ञान पर आधारित जानकारी भी दी जाती है, जिससे सभी विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं।

जब कोई त्योहार आता है, तब विशेष प्रार्थना-सभा का आयोजन किया जाता है। प्रधानाचार्या महोदया भी विद्यार्थियों को सभा में संबोधित करती हैं तथा विद्यालय से संबंधित महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ भी करती हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को प्रार्थना-सभा में पूर्ण अनुशासनबद्ध होकर विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। प्रार्थना-सभा का अंत राष्ट्र-

docs.aglasem.com
aglasem.com

गान से होता है। सभी विद्यार्थियों को प्रार्थना-सभा का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए व सच्चे, पवित्र मन से इसमें सम्मिलित होना चाहिए।

12) कंप्यूटर:आज की जरूरत पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

कंप्यूटर वास्तव में, विज्ञान द्वारा विकसित एक ऐसा यंत्र है, जो कुछ ही क्षणों में लाखों-करोड़ों गणनाएँ कर सकता है। कंप्यूटर ने मानव जीवन को बहुत सरल बना दिया है। कंप्यूटर द्वारा रेलवे टिकटों की बुकिंग बहुत आसान और समय बचाने वाली हो गई है। आज किसी भी बीमारी की जाँच करने, स्वास्थ्य का पूरा परीक्षण करने, रक्त-चाप एवं हृदय गति आदि मापने में इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त उपकरणों में कंप्यूटर का बेहतर प्रयोग उन्हें और भी उपयोगी बना रहा है। आज हवाई यात्रा में सुरक्षा का मामला हो या यान उड़ाने की प्रक्रिया, कंप्यूटर के कारण सभी जटिल कार्य सरल एवं सुगम हो गए हैं। संगीत हो या फ़िल्म, कंप्यूटर की मदद से इनकी गुणवत्ता को सुधारने में बहुत मदद मिली है। कंप्यूटर से कुछ हानियाँ भी हैं। कंप्यूटर पर आश्रित होकर मनुष्य आलसी प्रवृत्ति का बनता जा रहा है। कंप्यूटर के कारण बच्चे आजकल घर के बाहर खेलों में रुचि नहीं लेते और इस पर गेम खेलते रहते हैं। इस कारण उनका शारीरिक विकास ठीक से नहीं हो पाता। कंप्यूटर आज जीवन की आवश्यकता बन गया है। अतः इसका सही ढंग से प्रयोग कर हम अपने जीवन में प्रगति कर सकते हैं।

(13) ग्लोबल वार्मिंग पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

वैश्विक तापमान यानी ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या बन चुकी है। इससे न केवल मनुष्य, बल्कि पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक प्राणी त्रस्त है। 'ग्लोबल वार्मिंग' शब्द का अर्थ है' संपूर्ण पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होना।' हमारी पृथ्वी पर वायुमंडल की एक परत है, जो विभिन्न गैसों से मिलकर बनी है, जिसे ओजोन परत कहते हैं। ये ओजोन परत सूर्य से आने वाली पराबैंगनी तथा अन्य हानिकारक किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है। मानवीय क्रियाओं द्वारा ओजोन परत में छिद्र हो जाने के कारण सूर्य की हानिकारक किरणें पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर रही हैं।

docs.aglasem.com
aglasem.com

परिणामस्वरूप पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई समुद्री तथा पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जंतुओं की प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा छाया हुआ है, साथ ही मनुष्यों को भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यदि समय रहते ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के उपाय नहीं किए, तो हमारी पृथ्वी जीवन के योग्य नहीं रह जाएगी। इसे रोकने के लिए हमें प्रदूषण को कम करना होगा। साथ ही कार्बन डाइ-ऑक्साइड सहित अन्य गैसों के उत्सर्जन में कमी तथा वृक्षारोपण को बढ़ावा देना होगा, जिससे प्रकृति में पर्यावरण संबंधी संतुलन बना रहे।

(14) विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

आज के युग को विज्ञापनों का युग कहा जा सकता है। आज सभी जगह विज्ञापन-ही-विज्ञापन नजर आते हैं। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ एवं उत्पादक अपने उत्पाद एवं सेवा से संबंधित लुभावने विज्ञापन देकर उसे लोकप्रियता बनाने का हर संभव प्रयास करते हैं। किसी नए उत्पाद के विषय में जानकारी देने, उसकी विशेषता एवं प्राप्ति स्थान आदि बताने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता पड़ती है। विज्ञापनों के द्वारा किसी भी सूचना तथा उत्पाद की जानकारी, पूर्व में प्रचलित किसी उत्पाद में आने वाले बदलाव आदि की जानकारी सामान्य जनता को दी जा सकती है।

विज्ञापन का उद्देश्य जनता को किसी भी उत्पाद एवं सेवा की सही सूचना देना है, लेकिन आज विज्ञापनों में अपने उत्पाद को सर्वोत्तम तथा दूसरों के उत्पादों को निकृष्ट कोटि का बताया जाता है। आजकल के विज्ञापन भ्रामक होते हैं तथा मनुष्य को अनावश्यक खरीदारी करने के लिए प्रेरित करते हैं। अतः विज्ञापनों का यह दायित्व बनता है कि वे ग्राहकों को लुभावने दृश्य दिखाकर गुमराह नहीं करें, बल्कि अपने उत्पाद के सही गुणों से परिचित कराएँ। तभी उचित सामान ग्राहकों तक पहुँचेगा और विज्ञापन अपने लक्ष्य में सफल होगा।

15) मेरे सपनों का भारत पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

docs.aglasem.com

aglasem.com

भारतवर्ष की पावन धरती का प्राकतिक सौंदर्य अत्यन्त अद्‌भुत है। हिमालय भारत के माथे का दिव्य मुकुट है। तथा हिंद महासागर भारत माता के चरणों को स्पर्श करे धन्य होता है। उत्तर में हिमालय तथा पूर्व-पश्चिम । एवं दक्षिण में सागर इस महान् देश की रक्षा करते हैं। यहाँ के पर्वत और उनसे निकलने वाले झरने तथा नदियाँ भारत की शोभा में चार चाँद लगाते हैं। भारत में कहीं पर्वत हैं, तो कहीं मरुभूमि है, कहीं मैदान हैं, तो कहीं पठारे । यहाँ के उपजाऊ खेतों में हरी-भरी फसलें लहलहाती हैं। यहाँ के समुद्रों की छटा देखते ही बनती है।

भारत हमारी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि है। भारत सदियों से विश्व का मार्गदर्शक बना हुआ था। अब भारत की प्रतिष्ठा दिनप्रतिदिन धूमिल होती जा रही है। मैं अपने देश भारत को पुनः विश्व के अग्रणी राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर अंकित करना चाहता हूँ। यह तभी संभव हो सकेगा जब देश का हर नागरिक अपने दायित्वों का भली-भाँति निर्वाह करेगा। लोग अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे और भ्रष्टाचार से देश को मुक्ति दिलाने का प्रयास करेंगे। हमारे देश का विकास अवरोधित हो चुका है इसका प्रमुख कारण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार है। यह हमारे देश की बुनियाद को खोखला कर रहा है। अतः यदि हम अपने देश भारत को पुनः उसकी गरिमा दिलाना चाहते हैं, उसे वही 'सोने की चिड़िया बनाना चाहते हैं, तो हमें अपने राष्ट्र में व्याप्त सभी बुराइयों को मिलकर मिटाना होगा तभी हमारा देश सुनियोजित रहकर अमन, चैन तथा खुशहाली की मिसाल बन सकेगा।'

(16) समय-नियोजन पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

प्रत्येक कार्य को नियोजित समय पर करना समय-नियोजन कहलाता है। समय का बहुत अधिक महत्व है। समय का सदुपयोग हमारे जीवन को खुशियों से भर सकता है और अमूल्य क्षण नष्ट होने से बच जाते हैं। यह सफलता का प्रथम सोपान है।

उपयुक्त समय पर उपयुक्त कार्य करना चाहिए। रोगी के मर जाने पर उसे औषधि प्रदान करने से कोई लाभ नहीं होता। फिर तो वही बात होती है-"अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत ।" अर्थात् किसी भी कार्य को सम्पन्न करने का एक निश्चित समय होता है। उस समय के निकल जाने के बाद यदि कार्य हो भी जाए तो उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है।

docs.aglasem.com
aglasem.com

आग लगने पर कुआँ खोदने वाला व्यक्ति कभी भी, अपना घर नहीं बचा पाता। उसका सर्वनाश निश्चित ही होता है। जो विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में भी अध्ययन नहीं करता वह परीक्षा परिणाम घोषित होने पर आँसू ही बहाता है। जो समय नष्ट करता है, समय उसे नष्ट . कर देता है। जो समय को बचाता है, समय का सम्मान करता है, तो समय भी उस व्यक्ति को बचाता है, तथा उसे सम्मान देता है।

(17) मित्रता पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

मित्रता एक अनमोल धन है। यह एक ऐसी धरोहर है जिसका मूल्य लगा पाना संभव नहीं है। इस धन व धरोहर के सहारे मनुष्य कठिन से कठिन समय से भी बाहर निकल आता है। भगवान के द्वारा मनुष्य को परिवार मिलता है और मित्र वह स्वयं बनाता है। जीवन के संघर्षपूर्ण मार्ग पर चलते हुए उसके साथ उसका मित्र कन्धे से कन्धा मिलाकर चलता है। हर व्यक्ति को मित्रता की आवश्यकता होती है। वह चाहे सुख के क्षण हों या दुःख के क्षण, मित्र उसके साथ रहता है। किसी विशेष गूढ़ बात पर मित्र ही उसे सही सलाह देकर उसका मार्गदर्शन करता है।

मित्र ही उसका सही अर्थों में सच्चा शुभचिंतक, मार्गदर्शक, शुभ इच्छा रखने वाला होता है। सच्ची मित्रता में प्रेम व त्याग का भाव होता है। मित्र की भलाई दूसरे मित्र का कर्त्तव्य होता है। सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति के समय अपने मित्र के साथ दृढ़ निश्चय होकर खड़ा रहता है। हमें चाहिए कि जब भी किसी को अपना मित्र बनाएं तो सोच विचार कर बनाएं क्योंकि जहाँ एक सच्चा मित्र आपका साथ दे, आपको ऊँचाई तक पहुँचा सकता है, कपटी मित्र अपने स्वार्थ के लिए आपको पतन के रास्ते पर भी पहुँचा सकता है। जो आपके मुंह पर आपका सगा बने और पीठ पीछे आपकी बुराई करे ऐसे मित्र को दूर से नमस्कार कहने में ही भलाई है।

18) मन के हारे हार है मन के जीते जीत पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

''मन के हारे हार है मन के जीते जीत'' सूक्ति का अभिप्राय है कि जिसका मन हार जाता है वह बहुत शक्तिशाली होने पर भी पराजित हो जाता है तथा जिसका मन जीत जाता है

docs.aglasem.com
aglasem.com

वह शक्ति न होते हुए भी जीत जाता है। व्यक्ति के जीवन में निराशा अभिशाप के समान है। असफलताएँ जीवन प्रक्रिया का स्वाभाविक अंग होती हैं। यदि व्यक्ति असफलताओं से निराश होकर प्रयत्न करना छोड़ दें तो उसे असफलता ही मिलती है। इसलिए व्यक्ति को निराश नहीं होना चाहिए और प्रयत्न करते रहना चाहिए। मन अनंत शक्ति का स्रोत है, उसे हीन भावना से बचाए रखना अत्यंत आवश्यक है। मन की अपरिमित शक्ति को भूले बिना अपनी क्षमताओं में विश्वास रखना ही सफलता की मूल कुंजी है। ऐसा करने से हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन होता है तथा मनुष्य कार्य करने के लिए प्रेरित होता है।प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आशा-निराशा, उतार-चढ़ाव और सुख-दुःख चक्र की भाँति ऊपर-नीचे होते रहते हैं। व्यक्ति की हार-जीत उसकी मानसिक शक्ति पर निर्भर करती है, जो व्यक्ति परिस्थिति का सामना हँसी-ख़ुशी करता है वह सफलता अवश्य प्राप्त करता है। इसमें सकारात्मक सोच महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सकारात्मक सोच से व्यक्ति का मनोबल बढ़ता है और वह दुगुने उत्साह से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि जिस कार्य को पूरे दृढ़ संकल्प के साथ करेंगे, वह कार्य जरूर पूरा होता है। इसलिए मनुष्य को अपने मन को सुदृढ़ बनाकर जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।

(19) प्लास्टिक की दुनिया पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

प्लास्टिक का अविष्कार ड्यू बोयस एवं जॉन द्वारा किया गया था। प्लास्टिक का उपयोग मशीन के कल-पुर्जों, पानी की टंकियों, दरवाजों, खिड़कियों, चप्पल-जूतों, रेडियों, टेलीविजन, वाहनों के हिस्सों, आदि में किया जाता है, क्योंकि प्लास्टिक से बनी वस्तुएँ आसानी से खराब नहीं होतीं। यदि किसी कारण ये टूट-फूट जाएँ, तो इन्हें फिर से बनाकर पुनः उपयोग में लाया जा सकता है।इनमें मनचाहा रंग मिलाकर इन्हें अधिक आकर्षक भी बनाया जा सकता है। यही कारण है कि प्लास्टिक से बने आकर्षक रंग-बिरंगे फूल असली फूलों से अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। आज लोगों को बाजार से सामान प्लास्टिक से बने आकर्षक थैलों में पैक करके मिलता है।

इसके अनेक उपयोग के बावजूद प्लास्टिक से बनी वस्तुओं से पर्यावरण बुरी तरह दुष्प्रभावित हो रहा है। प्लास्टिक कभी न गलने-सड़ने वाला पदार्थ है, जिसके कारण भूमि, जल, पर्यावरण आदि अत्यधिक प्रदूषित होते जा रहे हैं। अतः हमें प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना चाहिए, तकि पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके।

docs.aglasem.com
aglasem.com

(20) भारत में बाल मजदूरी की समस्या पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

'बाल मजदूरी' से तात्पर्य ऐसी मजदूरी से है, जिसके अंतर्गत 5 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे किसी संस्थान में कार्य करते हैं। जिस आयु में उन बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, उस आयु में वे किसी दुकान, रेस्टोरेंट पटाखे की फैक्टरी, हीरे तराशने की फैक्टरी, शीशे का सामान बनाने वाली फैक्टरी अदि में काम करते है।

भारत जैसे विकासशील देश में बाल मजदूरी के अनेक कारण हैं। अशिक्षित व्यक्ति शिक्षा का महत्त्व न समझ पाने के कारण अपने बच्चों को मजदूरी करने के लिए भेज देते हैं। जनसंख्या वृद्धि बाल मजदूरी का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। निर्धन परिवार के सदस्य पेट भरने के लिए छोटे-छोटे बच्चों को काम भेज देते हैं।

भारत में बाल मजदूरी को गंभीरता से नहीं लिए जाने के कारण इसे प्रोत्साहन मिलता है। देश में कार्य कर रही सरकारी, गैर-सरकारी और निजी संस्थाओं की इस समस्या के प्रति गंभीरता दिखाई नहीं देती।

बाल मजदूरी की समस्या का समाधान करने के लिए सरकार कड़े कानून बना सकती है। समाज के निर्धन वर्ग को शिक्षा प्रदान करके बाल मजदूरी को प्रतिबंधित किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण कर भी बाल मजदूरी को नियंत्रित किया जा सकता है। ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, जो बाल मजदूरी का विरोध करती हैं या बाल मजदूरी करने वाले बच्चों के लिए शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम चलाती हैं।

(21) प्रातःकालीन भ्रमण पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

प्रातःकालीन भ्रमण शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखने की शारीरिक क्रियाओं में से एक है। प्रातःकालीन के भ्रमण से मनुष्य को स्वच्छ वायु प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य में एक नवस्फूर्ति और नवजीवन का संचार होता है। मनुष्य प्रकृति के संपर्क में आकर आनंद का अनुभव करता है। प्रकृति के मनोरम दृश्यों को देखकर उसका मन प्रफुल्लित ही

docs.aglasem.com
aglasem.com

उठता है। प्रातःकालीन भ्रमण करने से हमारी शारीरिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति का भी विकास होता है। हमारे मन से विकार दूर हो जाते हैं। प्रातःकालीन मन प्रसन्न होने के कारण मनुष्य का संध्या तक का समय बड़ी प्रसन्नता से व्यतीत होता है।

सुबह की ठंडी वायु प्रत्येक प्राणी के लिए लाभदायक होती है। प्रातःकालीन भ्रमण से व्यक्ति के शरीर तथा मन मस्तिष्क में तरोताजगी का संचार होता है। प्रातःकालीन भ्रमण व्यक्ति की सेहत के लिए भी बहुत उपयोगी एवं लाभदायक है। हमें प्रातःकालीन नियमित रूप से भ्रमण करना चाहिए, जिससे हमारा मन, बुद्धि और शरीर शांत, प्रसन्न एवं दृढ़ रह सके। अतः स्वस्थ, निरोगी,प्रसन्नचित्त एवं दीर्घजीवी बनने के लिए प्रातःकाल का भ्रमण सर्वोत्तम साधन है। वर्तमान युग में तो यह एक वरदान के समान है।

(22) आलस्य : मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

आलस्य दुःख, दरिद्रता, रोग परतंत्रता, अवनति आदि का जनक है। आलस्य के रहते हुए मनुष्य को विकास और उसके ज्ञान में वृद्धि का प्रश्न ही नहीं उठता। आलस्य को राक्षसी प्रवृत्ति की पहचान कहा जाता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से प्रातःकाल की शुद्ध वायु अत्यंत आवश्यक है। आलसी व्यक्ति इस हवा का आनंद भी नहीं उठा पाते और प्रातःकालीन भ्रमण एवं व्यायाम के अभाव में उनका शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। आलसी विद्यार्थी पूरा वर्ष सोकर गुजारता है। और परिणाम आने पर सबसे आँखें चुराता है।

आलस्य मनुष्य की इच्छाशक्ति को कमजोर बनाकर उसे असफलता के गर्त में धकेल देता है। आलसी को छोटे-से-छोटा काम भी पहाड़ के समान कठिन लगने लगता है और वह इससे छुटकारा पाने के लिए तरह-तरह के बहाने तलाशने लगता है।

आलस्य का त्याग करने से मनुष्य को अपने लक्ष्य को निश्चित समय में प्राप्त करने में सफलता मिलती है। जीवन में वही व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है, जो आलस्य को पूरी तरह त्यागकर कर्म के सिद्धांत को अपना ले। इस प्रकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य ही है। यह मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाता है और कुछ ही समय में मनुष्य का नाश कर देता है। अतः इसका त्याग करने में ही मनुष्य का कल्याण निहित है।

(23) साहित्य का महत्त्व पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

docs.aglasem.com

aglasem.com

साहित्य सोते हुए मनुष्य को भी जागृत करने का सामर्थ्य रखता है। साहित्य कमजोर एवं शोषितों को उत्साहित करने का कार्य करता है। यह साहित्य ही है, जिसने कई बार हारी हुई लड़ाइयों को भी जीतने में मदद की है। कहा भी गया है कि 'साहित्य समाज का दर्पण' होता है। साहित्य देश की वास्तविक स्थिति का सजीव चित्रण करता है, जिससे प्रभावित होकर समाज के जागरूक लोग सामाजिक बुराइयों को पहचानकर, उनका कारण समझकर तथा उन्हें मिटाने के तरीके ढूँढ़कर उन्हें समाप्त कर देते हैं। जिस समय भारतीय संस्कृति और सभ्यता को दुष्प्रभावित करने का षड्यंत्र किया जा रहा था, उस समय कबीरदास, तुलसीदास, भूषण, प्रेमचंद, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि साहित्यकारों ने जनता को अपनी रचनाओं के माध्यम से शिक्षित एवं संवेदनशील बनाने का कार्य किया। राष्ट्रीयता एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा करने में अनेक साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं। साहित्यकारों ने अपने राष्ट्रीय एवं नैतिक दायित्व को पहचाना तथा उसी के अनुसार कार्य किया। इस प्रकार कह सकते हैं कि साहित्यकार का सामाजिक उत्तरदायित्व होता है। समाज के हित की दृष्टि से लिखा गया साहित्य ही श्रेष्ठ साहित्य कहा जा सकता है।

(24) आधुनिक जीवन में मोबाइल पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

मोबाइल आज विश्व में क्रांति का वाहक बन गया है। बिना तारों वाला मोबाइल फोन जगह-जगह लगे ऊँचे टॉवरों से तरंगों को ग्रहण करते हुए मनुष्य को दुनिया के प्रत्येक कोने से जोड़े रहता है।

मोबाइल फोन सेवा प्रदान करने के लिए विभिन्न टेलीफोन कंपनियाँ अपनी-अपनी सेवाएँ देती हैं। मोबाइल फोन बात करने, एसएमएस की सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के खेल, कैलकुलेटर, फोनबुक की सुविधा, समाचार, चुटकुले, इंटरनेट सेवा आदि भी उपलब्ध कराता है। अनेक मोबाइल फोनों में इंटरनेट की सुविधा भी होती है, जिससे ई-मेल भी किया जा सकता है। मोबाइल फोन सुविधाजनक होने के साथ ही नुकसानदायक भी है।

मोबाइल फोन का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह समय-असमय बजता ही रहता है। लोग सुरक्षा और शिष्टाचार भूल जाते हैं। अकसर लोग गाड़ी चलाते समय भी फोन पर

docs.aglasem.com
aglasem.com

बात करते हैं, जो असुरक्षित ही नहीं, बल्कि कानूनन अपराध भी है। अपराधी एवं असामाजिक तत्त्व मोबाइल का गलत प्रयोग अनेक प्रकार के अवांछित कार्यों में करते हैं। इसके अधिक प्रयोग से कानों व हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः इन खतरों से सावधान होना आवश्यक है।

(25) ई-कचरा पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

ई-कचरा आधुनिक समय की एक गंभीर समस्या है। वर्तमान समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी काम हो रहा है। इसके फ़लस्वरुप आज नित नए-नए उन्नत तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का उत्पादन हो रहा है। जैसे ही बाजार में उन्नत तकनीक वाला उत्पाद आता है, वैसे ही पुराने यंत्र बेकार पड़ जाते हैं। इसी का नतीजा है कि आज कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टीवी, रेडियो, प्रिंटर, आई-पोड्स आदि के रूप में ई-कचरा बढ़ता जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार एक वर्ष में पूरे विश्व में लगभग 50 मिलियन टन ई-कचरा उत्पन्न होता है। यह अत्यंत चिंता का विषय है कि ई-कचरे का निपटान उस दर से नहीं हो पा रहा है, जितनी तेजी से यह पैदा हो रहा है। ई-कचरे को डालने या खुले में जलाने से पर्यावरण के लिए गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों में आर्सेनिक, कोबाल्ट, मरकरी, बेरियम, लिथियम, कॉपर, क्रोम, लेड आदि हानिकारक अवयव होते हैं। इनसे कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ गया हैं।

अब समय आ गया है कि ई-कचरे के उचित निपटान और पुनः चक्रण पर ध्यान दिया जाए अन्यथा पूरी दुनिया शीघ्र ही ई-कचरे का ढेर बन जाएगी। इसके लिए विकसित देशों को आगे आना होगा और विकासशील देशों के साथ अपनी तकनीकों को साझा करना होगा, क्योंकि विकसित देशों में ही ई-कचरे का उत्पादन अधिक होता है और वे जब-तब चोरी-छिपे विकासशील देशों में उसे भेजते रहते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए पूरी दुनिया को एक होना होगा।

(26) भारत का मंगल ग्रह अभियान

भारत के मंगलयान MOM ने 24 सितम्बर 2014 को अंतरिक्ष विज्ञान में इतिहास रचते हुए प्रातः 7:11 बजे मंगल ग्रह यानी लाल ग्रह की कक्षा में सफलता पूर्वक प्रवेश किया। इस अभियान की शुरुआत 3 अगस्त 2012 को तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा की गयी और 5 नवम्बर 2013 को भारतीय

docs.aglasem.com
aglasem.com

अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) द्वारा इसे कार्य रूप दिया गया। इस यान ने 299 दिनों में 780 मिलियन किलोमीटर की दूरी तय की। इस पूरे अभियान में कुल 15 महीने का समय लगा तथा कुल 450 करोड़ रु. की लागत आयी जो कि वॉलीवुड में बनने वाली फिल्म की कुल लागत से काफी कम है, यानी लगभग 7 रु. प्रति किलोमीटर। इस अभियान ने अपने पहले ही प्रयास में सफलता अर्जित की। इसी सफलता के साथ मंगल ग्रह अभियानों में जुटी तीन सफल संस्थाओं-सोवियत संघ, नासा तथा यूरोपियन स्पेस एजेन्सी के बाद भारत ने अपना चौथा स्थान बनाया साथ ही मंगलयान तथा यह अभियान पूर्ण रूप से स्वदेशी है। इसका नियंत्रण पूर्णत: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र बंगलौर द्वारा किया जा रहा है। इस गौरवपूर्ण क्षण का साक्षी बनते हुए वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसरो के समस्त वैज्ञानिकों सहित सम्पूर्ण भारतवासियों को बधाइयाँ दीं। आन्ध्र प्रदेश में आने वाले हुदहुद चक्रवात की पूर्व चेतावनी इस यान द्वारा भेजी गई सूचना का ही परिणाम है, जिससे समय से पूर्व ही राहत एवं बचाव कार्यों की व्यवस्था प्रशासन द्वारा कर ली गयी।

(27) दिल्ली है दिल हिंदुस्तान का

किसी ने ठीक ही कहा है-दिल्ली है दिल हिंदुस्तान का, यह तो तीरथ है सारे जहान का।' दिल्ली के इतिहास में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। यह कितनी ही बार उजाड़ी और बसाई गई है। अनेक राजा-महाराजाओं की राजधानी रह चुकी है। जिस तरह 'देहरी', जिसका अर्थ है' 'द्वार का चौखट' को पारकर घर में प्रवेश किया जाता है, उसी तरह 'दिल्ली' को 'भारत की देहरी' समझा जाता रहा है। दिल्ली को सर्वप्रथम पांडवों ने बसाया था। चिड़ियाघर के पास पुराना किला के खंडहर इसके स्वर्णिम अतीत के स्मारक हैं। तब इसका नाम इंद्रप्रस्थ था। तुगलकाबाद तुगलक वंश की अमिट निशानी है। दिल्ली अपने अंचल में पृथ्वीराज चौहान के सत्रह युद्धों की वीरता की गाथा भी समेटे हुए है। दिल्ली को भव्य रूप दिया मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने। उसका बनाया लाल किला भारत की शान है। अंग्रेजी राज्य में दिल्ली में अनेक आधुनिक इमारतों का निर्माण हुआ। आज दिल्ली दो भागों में विभक्त है-पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली। दिल्ली में अनेक प्राचीन, नए, धार्मिक, ऐतिहासिक भवन हैं। यहाँ अनेक संग्रहालय, स्टेडियम, सांस्कृतिक केंद्र, व्यापारिक केंद्र, पार्क, मनोरंजक स्थल, पाँच सितारा होटल, बहुमंजिली इमारतें, म्यूजियम, चिड़ियाघर, मैट्रो लाइन आदि दर्शनीय स्थल हैं। यमुना नदी के तट पर बसी यह अद्‌भुत नगरी प्राचीन और नवीन का अद्‌भुत संगम है |

(28) दैव-दैव आलसी पुकारा

docs.aglasem.com
aglasem.com

इतिहास इस बात का साक्षी है कि कर्मलीन मनुष्यों ने ही अपने पुरुषार्थ के बल पर इतिहास की रचना की है तथा 'समय' पर शासन किया है। यदि मनुष्य भाग्य के भरोसे बैठा रहता, आलस्य में डूबा रहता तो आज भी वह पाषाण युग में होता। आज व्यक्ति जल, थल और नाम का स्वामी है, प्रकृति उस की चेरी है, आज सर्वत्र उसी का आधिपत्य है। वह केवल उसकी पुरुषार्थ प्रवृत्ति के कारण है। परिश्रमी व्यक्ति शेर के समान होता है और लक्ष्मी उसी के पास जाती है, सफलता उसी का वरण करती है। केवल कायर तथा निकम्मे लोग ही कहा करते हैं कि जो कुछ मिलता है भाग्य से मिलता है। मनुष्य के शरीर में ही उसका सबसे बड़ा शत्रु रहता है और वह है आलस्य। मनुष्य का पुरुषार्थ ही उसके सौभाग्य को खींच लाता है। अतः व्यक्ति को चाहिए भाग्य के भरोसे न बैठा रहे और पुरुषार्थ करे। जो व्यक्ति परिश्रम नहीं करते, पुरुषार्थ से बचने का प्रयास करते हैं, वे ही|

(29) **मजहब नहीं सिखाता आपस में वैर रखना**

कर्म वह है जो एक आदमी को दूसरे से मिलाए तथा जो व्यक्ति को असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान ज्ञान की ओर, पाप से पुण्य की ओर, दुर्गुणों से सद्‌गुणों की ओर तथा दानवता से मानवता की ओर ले चले। सच्चा धर्म मानव की संकीर्णताओं को दूर करके उनके दृष्टिकोण को विस्तृत बनाता है। ऐसा धर्म जो मानव-मात्र से हिंसा, द्वेष, कटुता तथा वैर-विरोध उत्पन्न करे, धर्म नहीं कहा जा सकता। वह तो 'अधर्म' है। संसार में अनेक धर्म हैं। चाहे उनकी अन्य बातें अलग-अलग हों, परंतु एक बात जो सबमें सामान्य रूप से पाई जाती है, वह है उनके उच्चादर्श। संसार के सभी धर्म व्यक्ति को अच्छाई की राह पर ले जाते हैं। कोई भी धर्म हमें हिंसा या ईर्ष्या के मार्ग पर अग्रसर नहीं करता। इसीलिए इकबाल ने कहा था, नहीं सिखाता आपस में वैर रखना।"

(30) विद्यार्थी के दायित्व

रूपरेखा-- विद्यार्थी जीवन; जीवन की नींव है, विद्यार्थी देश और समाज के आधार हैं,विद्यार्थी का दायित्व |

विद्यार्थी जीवन हमारे पूरे जीवन की नीव होती है और इसी समय हमें अपने कुछ दायित्व निर्धारित कर लेने चाहिए। विद्यार्थी देश और समाज के आधार हैं। विद्यार्थी को दायित्व सँभालने से पहले यह विचार कर लेना चाहिए कि देश को किस क्षेत्र में उनका सहयोग चाहिए। आज हमारे देश में अशिक्षा और अस्वास्थ्य यह दो बड़ी समस्याएँ हैं। इसलिए विद्यार्थियों को यह दायित्व लेना चाहिए कि वे पूरे भारत को शिक्षित और स्वस्थ बनाएँगे। प्रत्येक विद्यार्थी एक-एक अशिक्षित को शिक्षा प्रदान करे, तो जल्दी ही देश का प्रत्येक

docs.aglasem.com
aglasem.com

व्यक्ति शिक्षित हो जाएगा। इसी तरह देश और समाज की अन्य समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक करना होगा | जिससे देश और समाज की प्रगति हो।

(31) शिक्षा

रूपरेखा-- शिक्षा के माध्यम से सफलता प्राप्त करना, शिक्षारहित जीवन बंजर समान है, शिक्षा मानव को नवीन आलोक प्रदान करती है।

मनुष्य एक विवेकशील सामाजिक प्राणी है। शिक्षा प्राप्तकर वह अपनी समस्त शक्तियों का सदुपयोग करता है। शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता और सफलता प्राप्त करना चाहता है। शिक्षारहित जीवन बंजर भूमि के समान है और शिक्षित जीवन एक उपवन है, जिसकी आभा सब ओर छा जाती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है। शिक्षा मानव को उसके गौरवशाली अतीत से परिचित करवाती है। वह ज्ञान अर्जन कर अपनी रुचियों को अनेक आयाम प्रदान कर विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की नवीन श्रृंखला बन सकता है। शिक्षक बच्चों में मानवीय गुणों का विकास करते हैं। शिक्षित व्यक्ति अपने अनुशासन, सदाचार, दया तथा अहिंसा से समाज का उत्थान करता है। शिक्षा मानव को नवीन आलोक प्रदान करती है। शिक्षा को मात्र पुस्तकीय ज्ञान से जोड़ा जाना उचित नहीं है। मानव की समस्त शक्तियों के विकास में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आत्मिक व बौद्धिक विकास का अचूक मंत्र शिक्षा है।

(32) पक्षियों की समस्याएँ

रूपरेखा-- मनुष्य ने पक्षियों के घोंसले पर पैर रखकर प्रगति की, आज पक्षियों की समस्या कल हमारी होगी, पशु-पक्षियों समाप्त होने से मुनष्य का जीवन खतरे में है।

मनुष्य ने बहुत प्रगति कर ली है। ऊँची इमारतों, विशाल पुल, मेट्रो रेल, बड़े-बड़े मॉल देखकर अच्छा लगता है। लेकिन प्रगति से पशु-पक्षियों की दुनिया में भयंकर समस्याएँ आ गई हैं। लाखों की संख्या में पेड़ काट दिए गए हैं और इससे पक्षियों का बसेरा उजड़ गया है। मनुष्य को उन पर ज़रा भी दया नहीं आती। पक्षियों को घोंसला बनाने की जगह नहीं बची, तो वे अपने अंडे कहाँ देंगे? अपने बच्चे का पालन-पोषण कैसे करेंगे? इससे पूरी प्रकृति को नुकसान होगा। आज जो समस्याएँ पक्षियों की हैं, कल यही समस्याएँ हमारी भी हो सकती हैं। हमें सोचना चाहिए कि पेड़ों पर रहने वाले पक्षी व वनों में रहने वाले पशु समाप्त हो गए तो खाद्य श्रृंखला टूट जाएगी और मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। अत: आज से ही हमें पक्षियों की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए।

docs.aglasem.com
aglasem.com

(33) धर्म और हम

रूपरेखा- धर्म की प्रक्रिया सूक्ष्म भावनात्मक, धर्म मानवता, प्रेम बढ़ाता है, अनेक संतों ने सर्वधर्म की ज्योति प्रज्वलित की।

धर्म या मजहब अत्यंत सूक्ष्म भावनात्मक प्रक्रिया है। यह व्यक्तिगत व भौतिक तत्वों से ऊपर उठ आध्यात्मिक व सर्वमानव कल्याण की पवित्र भावना है। कवि इकबाल ने स्पष्ट किया है कि धर्म स्वार्थ नहीं है। यह तो भाइचारे की मधुरता बताने वाला श्रेष्ठ देश का माध्यम है। युगों से भारत में अनेक धर्मों का एक साथ बढ़ना यह बताता है कि मज़हब आपस में सद्भाव, शांति, मानवता व प्रेम का जिससे व संदेश देता है। विश्व का कोई भी धर्म, मानव-मानव में अंतर नहीं करता। संसार के सब धर्मप्रचारकों ने शांति, दया, क्षमाशीलता व प्रेम का संचार करने की सीख दी है। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा का मार्ग दिखाया, तो ईसामसीह ने क्षमाशीलता का। सभी धर्मों में मानवता की सेवा की दुहाई दी गई है। अनेक संतों ने समय-समय पर सर्वधर्म समभाव की ज्योति प्रज्वलित की है। सभी धर्मों का सार एक है। धर्म मानव को मानव से जोड़ता है। इसका बाह्य आडंबरों और स्थूल भौतिकताओं या कर्मकांडों से कोई नाता नहीं। यह तो समस्त विश्व को एक प्रेम-सूत्र में पिरोने की सुदृढ़ कड़ी है। इस माला के व्यक्तियों के रंग भले ही भिन्न हों, किंतु उद्देश्य एक ही है |

19.क्रिया

क्रिया की परिभाषा – जिस शब्द अथवा शब्द समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा करने का बोध हो, वह क्रिया कहलाती हैं।

जैसे –

सीता गा रही है।

श्याम दूध पी रहा है।

सोहन कॉलेज जा रहा है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

तुम मेरे लिए दूध लाओ।इन दिए गए उदाहरणों में गा रही है, पी रहा है, जा रहा है, लाओ, शब्द कार्य करने का बोध करा रहे हैं। इनसे किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः यह क्रियाएँ हैं।

मुख्यतः क्रिया के दो प्रकार होते हैं-

1. सकर्मक क्रिया

"जिस क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं।"

अतएव, यह आवश्यक है कि वाक्य की क्रिया अपने साथ कर्म लाये। यदि क्रिया अपने साथ कर्म नहीं लाती है तो वह अकर्मक ही कहलाएगी। नीचे लिखे वाक्यों को देखें :

(i) प्रवर अनू पढ़ता है। (कर्म-विहीन क्रिया)

(ii) प्रवर अनू पुस्तक पढ़ता है। (कर्मयुक्त क्रिया)

प्रथम और द्वितीय दोनों वाक्यों में 'पढ़ना' क्रिया का प्रयोग हुआ है; परन्तु प्रथम वाक्य की क्रिया अपने साथ कर्म न लाने के कारण अकर्मक हुई, जबकि द्वितीय वाक्य की वही क्रिया अपने साथ कर्म लाने के कारण सकर्मक हुई।

2. अकर्मक क्रिया

"वह क्रिया, जो अपने साथ कर्म नहीं लाये अर्थात् जिस क्रिया का फल या व्यापार कर्ता पर ही पड़े, वह अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb) कहलाती है।"

जैसे-

docs.aglasem.com

aglasem.com

उल्लू दिनभर सोता है।

इस वाक्य में 'सोना' क्रिया का व्यापार उल्लू (जो कर्ता है) ही करता है और वही सोता भी है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक हुई।

कुछ क्रियाएँ अकर्मक सकर्मक दोनों होती हैं। नीचे लिखे उदाहरणों को देखें-

1. उसका सिर खुजलाता है। (अकर्मक)

2. वह अपना सिर खुजलाता है। (सकर्मक)

3. जी घबराता है। (अकर्मक)

4. विपत्ति मुझे घबराती है। (सकर्मक)

5. बूंद-बूंद से तालाब भरता है। (अकर्मक)

6. उसने आँखें भर के कहा (सकर्मक)

7. गिलास भरा है। (अकर्मक)

8. हमने गिलास भरा है। (सकर्मक)

जब कोई अकर्मक क्रिया अपने ही धातु से बना हुआ या उससे मिलता-जुलता सजातीय कर्म चाहती है तब वह सकर्मक कहलाती है।

जैसे-

सिपाही रोज एक लम्बी दौड़ दौड़ता है।

भारतीय सेना अच्छी लड़ाई लड़ना जानती है/लड़ती है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण

हरीश फुटबॉल खेलता है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

मनीषा खाना पकाती है।

आतंकी गाडी चलाता है।

पुष्प कलि को बुलाता है।

रमा चटनी बनाती है।

रवीश हिंदी बोलता है।

अंकुश शरीर खुजलाता है।

राधा सब्जी बनाती है।

रमेश सामान लाता है।

पिंकू संतरा खाता है।

महेश शिकार करता है।

मोहन खाना खायेगा।

सीता खाना पकाएगी।

हनुमान सीता को लाएगा।

राम रावण को मारता है।

विकास श्याम की गाडी चलाता है।

राम रावण के मुकुट को गिराता है।

शुभम कालू की पत्तंग उड़ाता है।

अर्जुन दुर्योधन को पछाड़ता है।

आकाश विकास का काम करता है।

अकर्मक क्रिया के उदाहरण

docs.aglasem.com

aglasem.com

गीता सो रही है

बच्चा जाग रहा है

युवक हंस रहे हैं

रमा हंसती है

श्याम दौड़ता है

बच्चा रोता है

विभा सोती है

राजेश दौड़ता है।

साँप रेंगता है।

पूजा हंसती है।

मेघनाथ चिल्लाता है।

रावण लजाता है।

राम बचाता है।

सीता रोती है।

आशीष खाता है।

सुनील चढ़ता है।

मनीष सुनाता है।

राकेश मारता है।

लिबिन हिलता है।

गाड़ी चलती है।

गधा मारता है।

घोडा दौड़ता है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

छिपकली कूदती है।

पक्षी उड़ता है।

रमेश स्कूल जाता है।

मनीष सुबह जल्दी उठता है।

सुहानी रोज स्नान करती है।

शक्तिमान उड़ता है।

20. कारक

कारक की परिभाषा-

कारक का अर्थ होता है किसी कार्य को करने वाला। यानी जो भी क्रिया को करने में भूमिका निभाता है, वह कारक कहलाता है।

कारक के उदाहरण :

वह रोज़ सुबह गंगा किनारे जाता है।

वह पहाड़ों के बीच में है।

नरेश खाना खाता है।

सूरज किताब पढता है।

कारक के भेद

कारक के मुख्यतः आठ भेद होते हैं :-

कर्त्ता कारक

कर्म कारक

docs.aglasem.com

aglasem.com

करण कारक

सम्प्रदान कारक

अपादान कारक

संबंध कारक

अधिकरण कारक

संबोधन कारक

1. कर्त्ता कारक :

जो वाक्य में कार्य को करता है, वह कर्ता कहलाता है। कर्ता वाक्य का वह रूप होता है जिसमे कार्य को करने वाले का पता चलता है।

कर्ता कारक का विभक्ति चिन्ह 'ने' होता है।

उदाहरण :

रामू ने अपने बच्चों को पीटा।

समीर जयपुर जा रहा है।

नरेश खाना खाता है।

विकास ने एक सुन्दर पत्र लिखा।

(कर्ता कारक के बारे में गहराई से पढनें के लिए यहाँ क्लिक करें – कर्ता कारक – उदाहरण, परिभाषा, चिन्ह)

2. कर्म कारक :

वह वस्तु या व्यक्ति जिस पर वाक्य में की गयी क्रिया का प्रभाव पड़ता है वह कर्म कहलाता है।

कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' होता है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण :

गोपाल ने राधा को बुलाया।

रामू ने घोड़े को पानी पिलाया।

माँ ने बच्चे को खाना खिलाया।

मेरे दोस्त ने कुत्तों को भगाया।

(कर्म कारक के बारे में गहराई से पढनें के लिए यहाँ क्लिक करें – कर्म कारक – उदाहरण, परिभाषा, चिन्ह)

3. करण कारक :

वह साधन जिससे क्रिया होती है, वह करण कहलाता है। यानि, जिसकी सहायता से किसी काम को अंजाम दिया जाता वह करण कारक कहलाता है।

करण कारक के दो विभक्ति चिन्ह होते है : से और के द्वारा।

उदाहरण :

बच्चे गाड़ियों से खेल रहे हैं।

पत्र को कलम से लिखा गया है।

राम ने रावण को बाण से मारा।

अमित सारी जानकारी पुस्तकों से लेता है।

(करण कारक के बारे में गहराई से पढनें के लिए यहाँ क्लिक करें – करण कारक – उदाहरण, परिभाषा, चिन्ह)

4 . संप्रदान कारक

परिभाषा

docs.aglasem.com

aglasem.com

- जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए, इसका बोध कराने वाले शब्द के रूप को संप्रदान कारक कहते हैं।

सम्प्रदान कारक की विभक्ति क्या है ?

इसका विभक्ति "को" है।

कर्म और संप्रदान का एक ही विभक्ती प्रत्यय है "को"पर दोनों के अर्थों में अंतर है संप्रदान का "को" लिए अव्यय के स्थान पर या उसके अर्थ में प्रयुक्त होता है परंतु कर्म के "को" के लिए अर्थ से कोई संबंध नहीं है।

उदहारण :

1. राम मोहन को मारता है।

2. उसके लड़के को बुलाया।

3. उसने लड़कों को गालियां दी।

4. मोहन हरि को रुपए देता है।

5 . अपादान कारक

5.अपादान कारक

परिभाषा

संज्ञा के जिस रुप से किसी वस्तु के अलग होने का भाव प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं।

अपादान कारक की विभक्ति क्या है ?

docs.aglasem.com

aglasem.com

अपादान कारक का भी विभक्ति चिन्ह 'से' होता है। यहाँ ' से ' का मतलब किसी चीज़ से अलग होना दिखाने के लिए प्रयुक्त होता है।

"जिस शब्द में अपादान की विभक्ति लगती है उसे किसी दूसरे वस्तु के पृथक होने का बोध होता है यहां अपादान कारक "से" से जुड़ा हुआ है यानी यहां से दो वस्तुओं को आपस में जोड़ता है जैसे वह गाड़ी से घर गया यहां करता को से के माध्यम से संबोधित किया।"

उदहारण :

1. गंगा हिमालय से निकलती है।

2. रमेश ने घड़े से पानी ढाला।

3. राम घर से बाहर आया।

4. बिल से चूहा बाहर निकला।

6. संबंध कारक

परिभाषा

-संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से किसी अन्य शब्द के साथ संबंध या लगाव प्रतीत हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।

संबंध कारक की विभक्ति क्या है ?

संबंध कारक का विभक्ति चिन्ह "का" है। वचन और लिंग के अनुसार इसकी विकृति 'के' और 'की' है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

सरल शब्दों में कहा जाए तो संबंध कारक दो शब्दों को जोड़ता है जैसे राम की किताब श्याम का घर इसमें दो अलग-अलग कर्ता है और इन दोनों को आपस में संबंध बनाया गया है इसी को संबंध कारक करते हैं।

उदहारण :

1. श्याम का घर, राम की किताब।

2. पांच रूपए का घी, एक रूपए का चावल।

3. सोने का गाना, चांदी की थाली।

4. भारतेंदु के नाटक।

5 . प्रेमचंद के उपन्यास।

7. अधिकरण कारक

परिभाषा

-क्रिया या आधार को सूचित करने वाली संज्ञा या सर्वनाम के रूप को अधिकरण कारक कहते हैं ।

अधिकरण कारक की विभक्ति क्या है ?

-इसकी विभक्ति में और पर होती है।

"अधिकरण कारक जब क्रिया या आधार को सूचित करने वाले संज्ञा या सर्वनाम निकल कर आता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे तुम्हारे घर पर चार आदमी है यहां पर घर पर यानी घर में से संबंध है। दुकान पर कोई नहीं था यहां दुकान में से संबंध है।"

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण:

1. बाहर लड़के दरवाजे- दरवाजे घूम रहे हैं।

2. जिस समय आया था, उस समय में नहीं था।

3. वह दोपहर समय नदी में स्नान करता है।

4. जब मैं गाड़ी में था तब ट्रैफिक जाम था।

8. संबोधन कारक

परिभाषा

-संज्ञा के जिस रुप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है उसे संबोधन कारक कहते हैं।

सम्बोधन कारक की विभक्ति क्या है ?

सम्बोधन कारक के अरे, हे, अजी आदि विभक्ति चिन्ह होते हैं।

"संबोधन कारक किसी विशेष चीजों को संबोधित करती है। जैसे हे भगवान! मेरी रक्षा करो। इसमें किसी को पुकारना यह संकेत देना उनके भाव से पता चलता है इसी को संबोधन कारक कहते हैं।"

उदहारण :

1. हे भगवान।

docs.aglasem.com

aglasem.com

2. अरे यह क्या हो गया?

3. हाय रे हाय!

4. अजी सुनते हो!

21. पत्र लेखन

पत्र लेखन एक कला है, जिसकी अपनी एक विशेष शैली होती है । इसी विशेषता के कारण पत्र संचार के साधनों में अलग और विशिष्ट स्थान रखते है । पत्रों में जो आत्मीयता छुपी होती है वह अन्यत्र नहीं होती ।

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1 पत्र की भाषा सरल, सुबोध और प्रभावशाली होनी चाहिए।

2 पत्र की शैली सरस्, रोचक तथा उत्सुकता पैदा करने वाली होनी चाहिए।

3 आधा अधूरा पत्र अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर पाता है।

4 पत्र के सभी अंगों में संतुलन होना चाहिए।

5 व्यक्तिगत पत्रों में आत्मीयता तथा औपचारिक पत्रों में सूचना देने का भाव निहित होना चाहिए।

पत्रों के प्रकार

1 औपचारिक पत्र

2अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1पत्र सदा बाईं ओर ही लिखा जाता है।

2 सबसे ऊपर 'सेवामें' लिखें।उसके ठीक नीचे पत्र पाने वाले व्यक्ति के पद का नाम और उसके नीचे संस्था का नाम लिखा जाता है।

3 इससे नीचे विषय का उल्लेख किया जाता है।

docs.aglasem.com

aglasem.com

4 इसके नीचे पत्र पाने वाले के लिए उपयुक्त संबोधन जैसे मान्यवर, महाशय, महोदय, श्रीमान आदिका प्रयोग करना चाहिए।

5 विषयवस्तु के नीचे पत्र लिखने वालों को स्व निर्देश और उसके नीचे अपना नाम लिखना चाहिए या हस्ताक्षर करना चाहिए।

6 हस्ताक्षर के ठीक नीचे अपना पता लिखना चाहिए।

7 सबसे नीचे दिनांक लिखें।

नमूना पत्र

गणित एवं विज्ञान की अतिरिक्त कक्षाएं आयोजित करने के संबंध में प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र।

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय

लाजपत नगर , दिल्ली |

विषय अतिरिक्त कक्षाएं आयोजित करने के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं इस विद्यालय की आठवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारी वार्षिक परीक्षा संभव फरवरी के अंतिम सप्ताह में शुरू हो जाएगी, किंतु गणित और विज्ञान विषयों का पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो सका है। हमारी कक्षा को पढ़ाने वाले इन विषयों के अध्यापकों की ड्यूटी चुनाव कार्य मे लगाई जा चुकी है |चुनाव कार्य पूर्ण होने पर ही वे विद्यालय आएंगे | ऐसी स्थिति मे हम छात्रों के प्रश्न पत्र आधे अधूरे ही हल हो सकेंगे |

आपसे प्रार्थना है कि गणित और विज्ञान का पाठ्यक्रम पूरा करवाने के लिए अतिरिक्त कक्षाएं आयोजित करवाने कि व्यवस्था करें | हम छात्र आपके आभारी रहेंगे|

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

docs.aglasem.com

aglasem.com

वैभव

कक्षा आठवीं

अनुक्रमांक 10

01 नवम्बर ,2021

आपके पिताजी के तबादले के कारण आपको स्कूल छोड़ना पड़ा था , परंतु अब आपके पिताजी का पुनः तबादला उसी शहर मे हो गया और आप उसी स्कूल मे पुनः प्रवेश पाना चाहते हैं | प्रधानाचार्य को पुनः प्रवेश हेतु पत्र लिखें |

सेवा में,

प्रधानाचार्या जी

केंद्रीय विद्यालय

एफ °ए ° डी ° , दप्पर |

विषय विद्यालय मे पुनः प्रवेश पाने के संबंध में।

महोदया ,

सविनय निवेदन यह है कि वर्ष 2019 टीके मए आपके विद्यालय की छात्रा थी| उस समय जब मै आठवीं कक्षा मे थी तो मेरे पिताजी का तबादला मुंबई हो गया था , जिस कारण परिवार के साथ मुझे भी वहाँ जाना पड़ा था | इसी सप्ताह मेरे पिताजी का पुनः तबादला दप्पर हो गया है , इसलिए मै फिर से आपके विद्यालय मे दाखिला पाकर शिक्षा अर्जित करना चाहती हूँ | आज भी मेरे मन में अपने शिक्षकों और विद्यालय के प्रति सम्मान है| अत: मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे पुनः विद्यालय मे प्रवेश दे दें , जिससे मै अपनी आगे की शिक्षा पूर्ण कर पाऊँ | मै सदा आपकी आभारी रहूँगी |

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

विधि

docs.aglasem.com

aglasem.com

कक्षा आठवीं

अनुक्रमांक 10

02 नवम्बर ,2021

आपके मोहल्ले मे सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है | हर जगह कूड़े के ढेर पड़े रहते हैं| मोहल्ले की इस बदहाल स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित कराते हुए सफाई निरीक्षक को पत्र लिखिए |

सेवा मे ,

सफाई निरीक्षक महोदय ,

सैक्टर 08

चंडीगढ़ |

विषय सफाई की बदहाल स्थिति के संबंध में।

महोदय ,

निवेदन है कि मै सेक्टर-१ का निवासी हूँ | इस पत्र के माध्यम से मै आपका ध्यान अपने मोहल्ले मे सफाई की दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ | इस मोहल्ले मे नियुक्त सफाईकर्मी प्रतिदिन नहीं आते है | वे सप्ताह में एक या दो दिन आकर यहाँ वहाँ कूड़ा एकत्र करके चले जाते है | उस कूड़े को कुत्ते और गाय इधर उधर बिखरा देते है | सड़क पर फैला कूड़ा बदबू मार रहा है | मोहल्ले में मक्खियों और मच्छरों की भरमार है| अतः आपसे प्रार्थना है कि ऐसी बदहाल स्थिति का आप स्वयं निरीक्षण करें और सफाई कर्मियों को सफाई करने के लिए तुरंत आदेश दें |

सधन्यवाद

प्रार्थी

अवधेश कुमार

#42 सैक्टर 08

चंडीगढ़

docs.aglasem.com

aglasem.com

01 नवम्बर 2021

आपका मित्र किसी खेल प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए विदेश यात्रा पर जा रहा है| मित्र की मंगलकामना हेतु पत्र लिखिए |

#34 , शालीमार बाग ,

दिल्ली |

21 नवम्बर ,2021

प्रिय मित्र ,

सप्रेम नमस्ते !

आशा है कि तुम स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे | मुझे आज ही तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा चयन राष्ट्रीय हॉकी टीम मे हो गया है, इसलिए तुम प्रतियोगिता हेतु कनाडा जा रहे हो | तुम स्कूल के दिनों मे भी दिन रात परिश्रम एवं अभ्यास करते थे, जिसका तुम्हें फल मिला है| मै तुम्हारे चयन से अति प्रसन्न हूँ और ईश्वर से कामना करती हूँ कि तुम इस खेल प्रतियोगिता मे सफलता प्राप्त करो और देश का नाम रोशन करो |

मेरी शुभकामनाएं सदैव तुम्हारे साथ हें | अपने माता पिता को मेरी ओर से प्रणाम कहना |

तुम्हारा मित्र

क,ख, ग,

अभ्यास के लिए पत्र

1 राज्य परिवहन निगम के मुख्य प्रबन्धक को पत्र लिखकर एक बस चालक के प्रशंसनीय व्यवहार की प्रशंसा करते हुए उसे विभाग की ओर से सम्मानित करने का आग्रह करें |

2 अपने विद्यालय के पुस्तकालय मे हिन्दी की अधिक पुस्तकें मँगवाने के लिए प्राचार्य जी को प्रार्थना पत्र लिखकर आग्रह करें|

3 अपने विद्यालय की प्राचार्य जी को छात्रवृति के लिए आवेदन पत्र लिखें |

4 पुस्तक विक्रेता को पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र लिखें |

docs.aglasem.com

aglasem.com

5 पेयजल की समस्या का वर्णन करते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखो |

2 **अनौपचारिक पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें|**

1 **आपका मित्र किसी खेल प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए विदेश यात्रा पर जा रहा है| मित्र की मंगलकामना हेतु पत्र लिखिए** |

#34 , शालीमार बाग ,

दिल्ली |

21 नवम्बर ,2021

प्रिय मित्र ,

सप्रेम नमस्ते !

आशा है कि तुम स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे | मुझे आज ही तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और यह जानकार अति प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा चयन राष्ट्रीय हॉकी टीम मे हो गया है, इसलिए तुम प्रतियोगिता हेतु कनाडा जा रहे हो | तुम स्कूल के दिनों मे भी दिन रात परिश्रम एवं अभ्यास करते थे, जिसका तुम्हें फल मिला है| मै तुम्हारे चयन से अति प्रसन्न हूँ और ईश्वर से कामना करती हूँ कि तुम इस खेल प्रतियोगिता मे सफलता प्राप्त करो और देश का नाम रोशन करो |

मेरी शुभकामनाएं सदैव तुम्हारे साथ हें | अपने माता पिता को मेरी ओर से प्रणाम कहना |

तुम्हारा मित्र

क,ख, ग,

2 अपने मित्र को बड़े भाई के विवाह मे सम्मिलित होने का निमंत्रण - पत्र लिखो |

246, सीता विहार

जनकपुरी , नई दिल्ली |

docs.aglasem.com

aglasem.com

02 नवम्बर ,2021

प्रिय अनंत

सप्रेम नमस्कार |

तुम्हें यह जानकार खुशी होगी कि मेरे बड़े भाई आदित्य का विवाह 10 दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है | बारात सुबह सात बजे बस द्वारा आगरा जाएगी | विवाह के इस मांगलिक अवसर पर तुम भी सादर आमंत्रित हो| कृपया निश्चित तिथि से एक - दो दिन पहले ही आने का प्रयास करना , ताकि उत्सव का आनंद दुगुना हो जाए | पत्र के साथ विवाहोत्सव का कार्यक्रम भी संलग्न है |

अंत मे सभी बड़ों को नमस्ते एवं छोटो को प्यार |

तुम्हारा अभिन्न मित्र

पंकज

अभ्यास के लिए पत्र

1 वाद विवाद प्रतियोगिता मे प्रथम आने की सूचना देते हुए माता जी को पत्र लिखें |

2 साक्षारता अभियान मे अपने योगदान का उल्लेख करते हुए मित्र को पत्र लिखें |

3 कुसंगति से बचने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखें |

4 अपने विद्यालय की विशेषताएँ बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखें|

5 अपने मित्र को पत्र द्वारा नव वर्ष की शुभकामनाएं दो |

२२.उपसर्ग एवं प्रत्यय

उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी शब्द के आरंभ में यानी पहले लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं |

जैसे- वि+ज्ञान= विज्ञान, अ+पराजय= अपराजय आदि |

उपसर्ग के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं :

1. संस्कृत के हिन्दी में प्रयुक्त उपसर्ग

docs.aglasem.com

aglasem.com

2. हिन्दी के अपने उपसर्ग
3. उर्दू और फ़ारसी से आए उपसर्ग
4. अंग्रेजी भाषा के उपसर्ग
5. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होने वाले अव्यय

1. संस्कृत के हिन्दी में प्रयुक्त उपसर्ग-

संस्कृत के कुल 21 उपसर्ग हिन्दी में अपनाए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

1. **अति:-** अति का अर्थ होता है ज़्यादा या अधिक।

उदाहरण :- अति+इंद्रिय= अतीन्द्रिय, अति+उक्ति= अत्युक्ति, अति+उत्तम= अत्युत्तम, अति+आवश्यक= अत्यावश्यक, अति+अधिक= अत्यधिक, अति+अल्प= अत्यल्प, अति+वृष्टि= अतिवृष्टि, अति+आचार= अत्याचार आदि।

2. **अनु:-** अनु का अर्थ होता है बाद में या क्रम में।

उदाहरण :- अनु+रूप=अनुरूप, अनु+पात= अनुपात, अनु+चर= अनुचर, अनु+करण= अनुकरण , अनु+सार= अनुसार, अनु+शासन= अनुशासन, अनु+क्रमांक= अनुक्रमांक, अनु+ज= अनुज (छोटा भाई), अनु+क्रम= अनुक्रम, आदि।

3. **अ:-** इसका अर्थ होता है अभाव, निषेध, नहीं, विपरीत आदि ।

उदाहरण :- अ+थाह= अथाह, अ+लौकिक= अलौकिक, अ+स्वीकार= अस्वीकार, अ+न्याय= अन्याय, अ+हिंसा= अहिंसा, अ+पलक= अपलक, अ+टल= अटल, अ+मर= अमर, अ+चल= अचल, अ+नाथ= अनाथ, अ+विश्वास= अविश्वास, अ+धर्म= अधर्म, अ+चेतन= अचेतन, अ+ज्ञान= अज्ञान आदि।

4. **अप:-** अप का अर्थ होता है बुरा, अभाव, विपरीत, हीनता आदि ।

उदाहरण :- अप+व्यय= अपव्यय, अप+वाद= अपवाद, अप+कर्ष= अपकर्ष, अप+हरण= अपहरण, अप+शकुन= अपशकुन, अप+यश= अपयश, अप+मान= अपमान, अप+शब्द= अपशब्द, अप+कार= अपकार, अप+कीर्ति= अपकीर्ति आदि।

5. **अभि:-** अभि का अर्थ होता है सामने, पास, चारों ओर आदि ।

उदाहरण:- अभि+नंदन= अभिनन्दन, अभि=मुख= अभिमुख, अभि=उत्थान= अभ्युत्थान, अभि+यान= अभियान, अभि+आगत= अभ्यागत, अभि+शाप= अभिशाप, अभि+ज्ञान= अभिज्ञान, अभि+उदय= अभ्युदय, अभि+मान= अभिमान, अभि+नव=

docs.aglasem.com
aglasem.com

अभिनव, अभि+भाषण= अभिभाषण, अभि+योग= अभियोग, अभि+अर्थी= अभ्यर्थी, अभि+इष्ट= अभीष्ट, अभि+अंतर= अभ्यंतर आदि।

6. **उप:-** उप का अर्थ होता है निकट, छोटा, सहायक, गौण आदि |

उदाहरण:- उप+अध्यक्ष= उपाध्यक्ष, उप+निवेश= उपनिवेश, उप+वेद= उपवेद, उप+संहार= उपसंहार, उप+कार= उपकार, उप+गृह= उपग्रह, उप+मंत्री= उपमंत्री, उप+हार= उपहार, उप+देश= उपदेश, उप+वन= उपवन, उप+नाम= उपनाम, उप+चार= उपचार, उप+सर्ग= उपसर्ग, उप+योग= उपयोग, उप+भोग= उपभोग, उप+भेद= उपभेद, उप+युक्त= उपयुक्त आदि।

7. **अधि:-** अधि का अर्थ होता है श्रेष्ठ, प्रधान, ऊपर आदि |

उदाहरण : अधि+राज= अधिराज, अधि+आत्म= अध्यात्म, अधि+नियम= अधिनियम, अधि+मास= अधिमास, अधि+कृत= अधिकृत, अधि+सूचना= अधिसूचना, अधि+पति= अधिपति, अधि+नायक= अधिनायक, अधि+मान= अधिमान, अधि+ग्रहण= अधिग्रहण, अधि+वक्ता= अधिवक्ता आदि।

8. **आ:-** आ का अर्थ होता है ओर, सीमा, तक, से, समेत आदि ।

उदाहरण : आ+मुख= आमुख, आ+रोहण= आरोहण, आ+जन्म= आजन्म, आ+यात= आयात, आ+गमन= आगमन, आ+जीवन= आजीवन, आ+मरण= आमरण, आ+चरण= आचरण, आ+लेख= आलेख, आ+हार= आहार, आ+भर= आभार, आ+शंका= आशंका आदि।

9. **प्रति:-** प्रति का अर्थ होता है विरुद्ध, प्रत्येक, सामने, बराबरी, उल्टा, हर एक आदि ।

उदाहरण: प्रति+वर्ष= प्रतिवर्ष, प्रति+अर्पण= प्रत्यपर्ण, प्रति+द्वंद्वी= प्रतिद्वंदी, प्रति+शोध= प्रतिशोध, प्रति+रोधक= प्रतिरोधक, प्रति+घात= प्रतिघात, प्रति+ध्वनि= प्रतिध्वनी, प्रति+आशा= प्रत्याशा, प्रति+कूल= प्रतिकूल, प्रति+कूल= प्रतिकार, प्रति+एक= प्रत्येक, प्रति+हिंसा= प्रतिहिंसा, प्रति+रूप= प्रतिरूप, प्रति+निधि= प्रतिनिधि, प्रति+ईक्षा= प्रतीक्षा, प्रति+उत्तर= प्रत्युत्तर, प्रति+क्षण= प्रतिक्षण, प्रति+दान= प्रतिदान, प्रति+अक्ष= प्रत्यक्ष आदि।

10. **उत्:-** उत् का अर्थ होता है श्रेष्ठ, ऊपर, ऊँचा आदि।

उदाहरण: उत्+पीडन= उत्पीडन, उत्+कंठा= उत्कंठा, उत्+कृष्ट= उत्कृष्ट, उत्+कर्ष= उत्कर्ष, उत्+थान= उत्थान आदि।

11. **प्र:-** प्र का अर्थ होता है आगे, अधिक, ऊपर आदि |

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण: प्र+क्रिया= प्रक्रिया, प्र+वाह= प्रवाह, प्र+ख्यात= प्रख्यात, प्र+गति= प्रगति, प्र+पंच= प्रपंच, प्र+लाप= प्रलाप, प्र+कोप= प्रकोप, प्र+दान= प्रदान, प्र+चार= प्रचार, प्र+हार= प्रहार, प्र+पौत्र= प्रपौत्र, प्र+आरंभ=प्रारंभ, प्र+योग= प्रयोग, प्र+बल= प्रबल आदि।

12. **वि:** वि का अर्थ होता है विशिष्ट, भिन्न, हीनता, असमानता, अभाव आदि ।

उदाहरण: वि+वाद= विवाद, वि+शेष= विशेष, वि+स्मरण= विस्मरण, वि+भाग= विभाग, वि+कार= विकार, वि+मुख= विमुख, वि+फल= विफल, वि+संगति= विसंगति, वि+पक्ष= विपक्ष, वि+देश= विदेश, वि+कल= विकल, वि+योग= वियोग, वि+नाश= विनाश, वि+जय= विजय, वि+ज्ञान= विज्ञान, वि+हार= विहार, वि+ख्यात= विख्यात,वि+धान= विधान आदि |

13. **सह:-** सह का अर्थ होता है साथ।

उदाहरण: सह+उदर= सहोदर, सह+पाठी= सहपाठी, सह+गान= सहगान, सह+चर= सहचर, सह+योग= सहयोग, सह+मत= सहमत आदि।

14. **पर:-** पर का अर्थ होता है अन्य आदि।

उदाहरण: पर+देश= परदेश, पर+लोक= परलोक, पर+आधीन= पराधीन आदि।

15. **सु:-** सु का अर्थ है अच्छा, भला आदि |

उदाहरण : सु+बोध= सुबोध, सु+पुत्र= सुपुत्र, सु+गंध= सुगंध, सु+गति= सुगति, सुबोध, सुयश, सुमन, सुलभ, सुअवसर, सूक्ति, सुदूर, सुजन, सुशिक्षित, सुपात्र, सुगठित, सुहाग, सुकर्म, सुकृत, सुभाषित, सुकवि, सुरभि आदि।

16. **सम्** उपसर्ग : सम् का अर्थ होता है अच्छा, पूर्णता, संयोग, उत्तम, साथ आदि ।

उदाहरण: सम्+मान= सम्मान, सम्+कल्प= संकल्प, सम्+चय= संचय, सम्+तोष= सन्तोष, सम्+गठन= संगठन, सम् +चार= संचार , सम्+हार= संहार, सम्+शय= संशय, सम्+रक्षा= संरक्षा, सम्+कल्प= संकल्प, सम्+गृह= संग्रह, सम्+न्यास= संन्यास, सम्+रक्षण= संरक्षण, सम्+ग्राम= संग्राम, सम्+भव= संभव, सम्+तुष्ट= संतुष्ट, सम्+चालन= संचालन, सम्+ताप= संताप, सम्+भावना= संभावना, सम्+योग= संयोग, सम्+शोधन= संशोधन आदि।

17. **अव:-** अव का अर्थ है हीन, बुरा, अनादर, पतन ।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण: अव+नति= अवनति, अव+धारणा= अवधारणा, अव+गति= अवगति, अव+लोकन= अवलोकन, अव+तरण= अवतरण, अव+गत= अवगत, अव+नत= अवनत, अव+सान= अवसान, अव+रोहण= अवरोहण, अव+गणना= अवगणना, अव+शेष= अवशेष, अव+गुण= अवगुण आदि।

18. **परि:-** परि का अर्थ होता है चारों ओर, पास, आसपास।

उदाहरण: परि+मार्जन= परिमार्जन, परि+हार= परिहार, परि+क्रमण= परिक्रमण, परि+भ्रमण= परिभ्रमण, परि+धान= परिधान, परि+हास= परिहास, परि+श्रम= परिश्रम, परि+वर्तन= परिवर्तन, परि+ईक्षा= परीक्षा, परि+पूर्ण= परिपूर्ण, परि+पाक= परिपाक, परि+जन= परिजन, परि+कर्मा= परिक्रमा, परि+पूर्ण= परिपूर्ण आदि।

19. **निर्:-** निर् का अर्थ होता है निषेध, रहित, बिना आदि ।

उदाहरण: निर्+आहार= निराहार, निर् +अक्षर= निरक्षर, निर् +आदर= निरादर, निर्+अहंकार= निरहंकार, निर्+आमिष= निरामिष, निर्+जर= निर्जर, निर्+धन= निर्धन, निर्+यात= निर्यात, निर्+दोष= निर्दोष, निर्+अवलंब= निरवलम्ब, निर्+अंजन= निरंजन, निर्+आशा= निराशा, निर्+गुण= निर्गुण, निर्+भय= निर्भय, निर्+वास= निर्वास , निर्+दोष= निर्दोष, निर्+जीव= निर्जीव, निर्+मूल= निर्मूल, निर्+बल= निर्बल, निर्+मल= निर्मल, निर्+जन=निर्जन, निर्+अपराध= निरपराध आदि।

20. **कु:-** कु का अर्थ होता है बुरा, हीनता आदि ।

उदाहरण: कु+पुत्र= कुपुत्र, कु+रूप= कुरूप, कु+कर्म= कुकर्म, कु+मति= कुमति, कु+योग= कुयोग, कु+कृत्य= कुकृत्य, कु+ख्यात= कुख्यात, कु+पात्र= कुपात्र आदि।

21. **दुर्:-** दुर् का अर्थ होता है कठिन, बुरा, विपरीत, दुष्ट, हीन आदि।

उदारहण: दुर्+अभिसंधि= दुरभिसंधि, दुर्गुण, दुर्दशा, दुर्घटना, दुर्भावना, दुरुह, दुरुक्ति, दुर्जन, दुर्गम, दुर्बल, दुर्लभ, दुरावस्था, दुर्दमनीय, दुर्भाग्य, दुराशा, दुराग्रह, दुराचार, दुर्+अवस्था= दुरवस्था, दुर्+उपयोग= दुरुपयोग आदि।

2. हिंदी के उपसर्ग

हिन्दी भाषा के भी कुछ अपने उपसर्ग होते हैं। जो कि इस प्रकार से हैं:-

1. **दु/दुर्:-** दु/दुर्:- का अर्थ होता है बुरा, हीन, दो, विशेष, कम आदि |

उदाहरण: दुर्जन , दुर्बल , दुसाध्य, दुलत्ती, दुनाली, दुगुना आदि।

2. **अध:-** अध का अर्थ होता है आधा।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण: अधमरा, अधकचरा, अधजला, अधखिला, अधगला, अधनंगा आदि।

3. **अन:-** अन का अर्थ होता है अभाव, निषेध आदि ।

उदाहरण: अनकहा, अनदेखा, अनमोल, अनपढ़, अनहोनी, अनचाहा, अनसुना, अनदेखी आदि।

4. **उन:-** उन का अर्थ होता है एक कम ।

उदाहरण: उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनतालीस, उन्नीस, उन्नासी आदि ।

5. **कु:-** कु का अर्थ होता है बुरा, हीन आदि |

उदाहरण: कुचाल, कुचक्र, कुसंगति, कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र, कुरीति, कुख्यात आदि।

6. **औ**:- औ का अर्थ होता है हीन, निषेध आदि ।

उदाहरण: औगुन, औघड़, औतार आदि।

7. **अ:-** अ का अर्थ होता है अभाव, निषेध, कमी आदि ।

उदाहरण: अछुता, अथाह, अटल, अचेत असफ़ल आदि ।

8. **नि:-** नि का अर्थ होता है रहित, अभाव, कमी आदि ।

उदाहरण: निडर, निहत्था, निहाल आदि।

9. **चौ**:- चौ का अर्थ होता है चार ।

उदाहरण: चौपाई, चौपाया, चौराहा, चौकन्ना, चौमासा, चौमुखा, चौपाल आदि।

10. **ति:-** ति का अर्थ तीन के संदर्भ में लिया जाता है |

तिरंगा , तिराहा , तिपाई , तिकोना , तिमाही आदि।

3. उर्दू भाषा के उपसर्ग :

उर्दू एवं फ़ारसी के भी कुछ उपसर्ग हैं, जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं:-

1.दर:- दर का अर्थ होता है में , मध्य में आदि ।

उदाहरण: दरकिनार, दरअसल, दरकार, दरअसल आदि।

docs.aglasem.com

aglasem.com

2. कम:- कम का अर्थ होता है थोड़ा, हीन, अल्प।

उदाहरण: कमजोर, कमउम्र, कमअक्ल, कमसिन आदि।

3. ला:- ला का अर्थ होता है नहीं, रहित आदि ।

उदाहरण: लाइलाज, लाजवाब, लापरवाह, लापता, लावारिस, लाचार, लाजवाल आदि।

4. ब:- ब का अर्थ होता है के साथ, और, अनुसार आदि ।

उदारहण: ब+ख़ूबी= बख़ूबी, बदौलत, बदस्तूर, बगैर, बनाम, बमुश्किल आदि।

5. बे:- बे का अर्थ होता है बिना, रहित आदि ।

उदाहरण: बे+नाम= बेनाम, बेपरवाह, बेईमान, बेरहम, बेहोश, बेइज्जत, बेचारा, बेवकूफ, बेबुनियाद, बेवक्त, बेकसूर, बेनामी, बेशक आदि।

6. बा:- बा का अर्थ होता है साथ, से, सहित आदि।

उदाहरण: बा+क़ायदा= बाक़ायदा, बाइज्जत, बाअदब, बामुलाहिजा आदि।

7. बद :- बद का अर्थ होता है बुरा, हीनता आदि ।

उदाहरण: बदनाम, बदमाश, बदबू, बदसूरत, बदकिस्मत, बदहजमी, बदमजा, बदहवास, बदनीयत, बदकार आदि।

8. ना:- ना का अर्थ होता है अभाव।

उदाहरण: ना+लायक= नालायक, नाकारा, नाराज, नासमझ, नाबालिक, नापसंद, नामुमकिन, नामुराद, नाकामयाब, नाकाम, ना+पाक= नापाक आदि।

9. गैर:- गैर का अर्थ होता है निषेध, नहीं आदि ।

उदाहरण: गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरजिम्मेदार, गैरमुल्क, गैरमुमकिन, गैरमुनासिब आदि।

10. हम:- हम का अर्थ होता है आपस में, समान, साथ वाला आदि ।

उदाहरण: हम+राज= हमराज, हम+दर्द= हमदर्द, हमजोली, हमनाम, हमउम्र, हमदम, हमदर्दी, हमराह, हमसफर आदि।

11. हर:- हर का अर्थ होता है सब, प्रत्येक आदि ।

docs.aglasem.com

aglasem.com

उदाहरण: हरवक्त, हररोज, हरएक, हरदिन, हरबार आदि।

12. खुश:- ख़ुश का अर्थ होता है अच्छा ।

उदाहरण: ख़ुशनसीब, ख़ुशमिजाज, ख़ुशहाल, ख़ुशखबरी, ख़ुशकिस्मत आदि।

13. सर:- सर का अर्थ होता है मुख्य, प्रमुख, प्रधान आदि ।

उदाहरण: सर+ताज= सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार आदि।

14. अल:- अल का अर्थ होता है निश्चित, अंतिम, आख़िरी आदि ।

उदाहरण: अलतकिया, अलसुबह, अलबत्ता, अलबेला, अलविदा आदि।

4. अंग्रेजी के उपसर्ग :

1. हाफ:- हाफ का अर्थ होता है आधा, अधूरा आदि ।

उदाहरण: हाफपेंट, हाफबाड़ी, हाफटिकट हाफपेंट आदि।

2. सब:- सब का अर्थ होता है अधीन, नीचे, उप आदि |

उदाहरण: सब-स्टाफ़, सब इंस्पेक्टर, सबजज, सबकमेटी, सबरजिस्टर आदि।

3. चीफ:- चीफ का अर्थ होता है प्रमुख, प्रधान आदि |

उदाहरण: चीफ इंजीनियर, चीफ सेक्रेटरी, चीफ मिनिस्टर आदि।

4. जनरल:- जनरल का अर्थ होता है प्रधान , सामान्य आदि |

उदाहरण: जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी, जनरल नॉलेज आदि।

5. हैड:- हैड का अर्थ होता है मुख्य, प्रधान आदि |

उदाहरण: हैडमास्टर, हैडक्लर्क, हैडऑफिस, हैडकांस्टेबल, हैडक्वाटर आदि।

6. डिप्टी:- डिप्टी का अर्थ होता है सहायक, उप आदि |

उदाहरण: डिप्टी स्पीकर, डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्टरार आदि।

7. वाइस:- वाइस का अर्थ होता है सहायक, उप आदि |

उदाहरण: वाइस चांसलर, वाइस प्रेजिडेंट, वाइस प्रिंसिपल आदि।

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रत्यय:- अर्थ और परिभाषा-

वे शब्दांश, जो किसी शब्द के अंत में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं |

<u>जैसे:-</u>

भूल+अक्कड़ = भुलक्कड़, मिठाई+वाला= मिठाईवाला |

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं:

1. कृत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. कृत प्रत्यय :

- ऐसे प्रत्यय जो क्रिया (धातु रूप) के बाद लगते हैं एवं उनके लगने से दूसरे शब्दों की रचना हो जाती है।
- इन प्रत्ययों के लगाने (योग) से जो शब्द बनते हैं वे कृदंत शब्द कहलाते हैं।

कृत प्रत्यय के उदाहरण:

- तैर + आक= तैराक

इस उदाहरण में हम देख सकते हैं कि **तैर** मुख्य शब्द है और **आक** एक प्रत्यय है। जब मुख्य शब्द एवं प्रत्यय को एक साथ मिलाया जाता है तब यह नया शब्द **तैराक** बन जाता है। इस प्रत्यय के लगने से शब्द के रूप और अर्थ में परिवर्तित हो रहा है।

- लूट + एरा= लूटेरा

इस उदाहरण में हम देख सकते हैं कि यहाँ **लूट** मुख्य शब्द है। **एरा** एक प्रत्यय है जो शब्दों के बाद लगाया जाता है। जब हमने लूट के साथ एरा प्रत्यय लगाया तो फिर शब्द बदलकर लूटेरा हो गया है, जिसका मतलब मुख्य शब्द से अलग हो गया है। प्रत्यय मूल शब्द एवं उसके अर्थ, दोनों को परिवर्तित कर देता है।

कृत प्रत्यय के भेद :

कृत प्रत्यय के पांच भेद होते हैं:

docs.aglasem.com

aglasem.com

1. कर्तृवाचक कृदंत
2. कर्मवाचक कृदंत
3. करणवाचक कृदंत
4. भाववाचक कृदंत
5. क्रियावाचक कृदंत

1. कर्तृवाचक कृदंत प्रत्यय-

ऐसा शब्द जो कृत प्रत्यय से बना हुआ हो एवं उससे कर्ता का पता चले, ऐसे प्रत्यय कर्तृवाचक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं। **जैसे:**

कर्तृवाचक कृदंत प्रत्यय के उदाहरण:

- **अक** = लेखक, नायक, गायक, पाठक आदि |

दिए गए उदाहरणों में जैसा कि हम देख सकते हैं कि यहाँ पहले शब्द था **लेख** लेकिन जब इस शब्द में **अक प्रत्यय** मिलाया गया तो यह बन गया लेखक, जिसका अर्थ होता है- लिखने वाला | इस शब्द से हमें कर्ता यानी कार्य करने वाले का पता चल रहा है। अतः यह कर्त्तुवाचक कृदंत प्रत्यय के के रूप में मान जाएगा ।

- **अक्कड** = भुलक्कड, घुमक्कड़, पियक्कड़
- **आक** = तैराक, लड़ाक
- **आलू** = झगड़ालू
- **आकू** = लड़ाकू
- **आड़ी** = खिलाडी, अगाड़ी, अनाड़ी

जैसा कि इन सभी उदाहरण में देख हम सकते हैं कि यहाँ पहले शब्द भिन्न होते हैं। जैसे ही इनमें ये प्रत्यय लगाए जाते हैं, इनके शब्द एवं अर्थ दोनों में परिवर्तन आ जाता है। अतः ये उदाहरण कर्तृवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे |

- **इअल** = अड़ियल, मरियल, सड़ियल
- **एरा** = लूटेरा, बसेरा
- **ऐया** = गवैया, नचैया, खेवैया
- **ओड़ा** = भगोड़ा
- **वाला** = मिठाईवाला, पढनेवाला, लिखनेवाला
- **हार** = राखनहार, होनहार, राखनहार, पालनहार
- **ता** = दाता, गाता, कर्ता, ज्ञाता

इन सभी उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि जब बिना प्रत्यय के इन शब्दों को पढ़ा जाता है, तब इन शब्दों का अर्थ भिन्न होता है। जैसे- **पढ़ना** शब्द हमें एक क्रिया के बारे

docs.aglasem.com
aglasem.com

में बता रहा है। हमें इससे एक क्रिया का बोध हो रहा है। लेकिन जब इस क्रिया शब्द में **वाला** प्रत्यय लगाया जाता है, तो इसका अर्थ बिलकुल भिन्न हो जाता है। अब यह शब्द हमें पढ़ाई करने वाले के बारे में बता रहा है। इस शब्द से हमें कर्ता के बारे में पता चल रहा है। अतः यह उदाहरण कर्तृवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएगा।

2. कर्मवाचक कृदंत प्रत्यय:

जिन शब्दों में प्रत्यय लगने के बाद वह शब्द कर्म का बोध हो, वह कर्मवाचक कृदंत प्रत्यय कहलाता है।

जैसे:

- **औना** = बिछौना, खिलौना

इस उदाहरण में हम देख सकते हैं कि यहाँ पहले जो मुख्य शब्द था, वह किसी क्रिया का बोध करा रहा था | जैसे **खेलना, बिछाना** आदि। जब उन शब्दों में प्रत्यय लगाए गए तो इनका अर्थ और रूप दोनों बदल गए | अब ये शब्द कर्म का बोध करा रहे हैं, क्रिया का नहीं। अतः यह उदाहरण कर्मवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएगा।

- **ना** = सूँघना, पढना, खाना
- **नी** = लेखनी, छलनी
- **गा** = गाना, खाना ।

इन उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि यहाँ पहले जो शब्द थे, वे हमें किसी ना किसी क्रिया का बोध करा रहे थे | जैसे सूँघ आदि। इनसे हमें क्रिया का पता चल रहा था। लेकिन जैसे ही हमने उन शब्दों में प्रत्यय लगाए, उनका अर्थ ही बदल गया। अब ये शब्द क्रिया का बोध कराने के स्थान पर कर्म का बोध करा रहे हैं। अतः ये उदाहरण कर्मवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे ।

3. करणवाचक कृदंत प्रत्यय:

जब कोई प्रत्यय किसी शब्द के साथ लग जाते हैं एवं उन शब्दों से क्रिया को करने के साधन अर्थात् करण का बोध होता है, तो ये प्रत्यय करणवाचक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे:

- **आ** = भूला, झूला

docs.aglasem.com

aglasem.com

इस उदारण में हम देख सकते हैं कि यहाँ पहले जो मुख्य शब्द था, वह हमें क्रिया का बोध करवा रहा था । जैसे:- भटक, भूल, झूल आदि। लेकिन जैसे ही इन शब्दों में प्रत्यय लगाए गए, इन शब्दों का अर्थ भिन्न हो गया। जैसे अब **झूल** का **झूला** हो गया जो हमें किसी साधान अर्थात करण का बोध करवा रहा है। प्रत्यय लगते शब्द परिवर्तित हो गए। अतः ये उदाहरण करणवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे।

करणवाचक कृदंत प्रत्यय के कुछ अन्य उदाहरण:

- **ऊ** = झाड़
- **ई** = रेती, फाँसी, भारी, धुलाई
- **न** = बेलन, झाडन, बंधन
- **नी** = धौंकनी, करतनी, सुमिरनी, छलनी, फूंकनी, चलनी

इन उदाहरणों में हमने देखा कि यहाँ पहले शब्द हमें क्रिया का बोध करा रहे थे लेकिन जब इनमें प्रत्यय लगाया गया तो फिर ये परिवर्तित हो गए एवं करण का बोध कराने लगे । अतः ये उदाहरण करणवाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे ।

4. **भाववाचक कृदंत प्रत्यय :**

वे प्रत्यय जो किसी शब्द में जुड़ने के बाद उस शब्द को भाववाचक संज्ञा में बदल देते हैं, वे भाववाचक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे:

- **अन** = लेखन, पठन, गमन, मनन, मिलन
- **ति** = गति, रति, मति
- **अ** = जय, विचार, मार, लूट, तोल
- **आवा** = भुलावा, छलावा, दिखावा, बुलावा, चढावा
- **आई** = कमाई, चढाई, लड़ाई, सिलाई, कटाई, लिखाई
- **आहट** = घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट, टकराहट

इन सब उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि पहले जो मूल शब्द थे, उनसे हमें किसी क्रिया का बोध हो रहा था। जैसे कमाना, लड़ना, सिलना आदि। फिर हमने इनमें प्रत्यय को जोड़ा। जैसे ही इनमें प्रत्यय को जोड़ा गया तो फिर इन शब्दों का रूप परिवर्तित हो गया। अब ये भाववाचक संज्ञा बन गए हैं।

जैसे **लेख का लेखन, घबराना का घबराहट** आदि। ये भाववाचक संज्ञा का बोध करा रहे हैं। अतः ये उदाहरण भाववाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे |

- **औती** = मनौती, फिरौती, चुनौती, कटौती

docs.aglasem.com

aglasem.com

- **अंत** = भिडंत, गढ़ंत
- **आवट** = सजावट, बनावट, रुकावट, मिलावट
- **ना** = लिखना, पढना
- **आन** = उड़ान, मिलान, उठान, चढ़ान
- **आव** = चढ़ाव, घुमाव, कटाव
- **आवट** = तरावट, बनावट, सजावट, लिखावट, मिलावट

इन शब्दों में हम देख सकते हैं कि यहाँ मूल शब्द से हमें क्रिया का बोध हो रहा था, लेकिन जब इन शब्दों के साथ प्रत्यय जोड़ते हैं तो इनका नया शब्द एवं अर्थ भिन्न हो गए हैं। अब ये शब्द हमें भाववाचक संज्ञा का बोध करा रहे हैं।

5. क्रियावाचक कृदंत प्रत्यय :

किसी प्रत्यय से बने हुए ऐसे शब्द जिनसे हमें किसी क्रिया के होने का पता चले, वे क्रियावाचक कृदंत प्रत्यय कहलाते हैं। **जैसे:**

- **ता** = डूबता, बहता, चलता
- **या** = खोया, बोया
- **आ** = सूखा, भूला, बैठा
- **ना** = दौड़ना, सोना, चलना
- **कर** = खाकर, आकर, जाकर, देखकर

इन सभी उदाहरणों में हम देख सकते हैं कि यहाँ पहले शब्द हमें क्रिया का बोध नहीं करा रहे हैं। मुख्य शब्द हमें पहले क्रिया के बारे में नहीं बता रहे थे। लेकिन जब उन शब्दों में प्रत्यय जोड़े गए, तब ये शब्द परिवर्तित हो गए एवं अब ये हमें क्रिया का बोध करा रहे हैं। अतः ये उदाहरण क्रियावाचक कृदंत प्रत्यय के अंतर्गत आएँगे।

2. तद्धित प्रत्यय

- जब संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में प्रत्यय लगते हैं तो वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।
- इन तद्धित प्रत्ययों से मिलकर जो शब्द बनते हैं, वे शब्द तद्धितांत प्रत्यय शब्द कहलाते हैं।

जैसे;-

- **चतुर + आई : चतुराई**

docs.aglasem.com

aglasem.com

इस उदाहरण में हम देख सकते हैं कि यहाँ मूल शब्द विशेषण शब्द था, लेकिन फिर हमने इस विशेषण में **आई** प्रत्यय लगाया तो यह शब्द परिवर्तित हो गया। इसलिए यह उदाहरण तद्धित्त प्रत्यय के अंतर्गत माना जाएगा |

कुछ अन्य उदाहरण :

- पछताना, जगना, पंडित, चतुर, ठाकुर+आइ = ठकुराई**,** पछताई, जगाई, चतुराई
- पण्डित, ठाकुर + **आइन** = पंडिताइन, ठकुराइन आदि ।
- पंडित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा ,अच्छा + **आई** = पंडिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई , अच्छाई आदि ।
- सेठ, नौकर + **आनी** = सेठानी, नौकरानी आदि ।
- बहुत, पंच, अपना +**आयत** = बहुतायत, पंचायत, अपनायत आदि ।
- लोहा, सोना+**आर \आरा** = लोहार, सुनार, गँवार आदि ।
- डाका, लाठी+**ऐत** = डकैत, लठैत आदि ।
- अँध, साँप, बहुत, मामा, काँसा, लूट+**एरा** = अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लूटेरा आदि।
- खाट, पाट, साँप+**ओला** = खटोला, पटोला, सँपोला आदि ।
- बाप, मान+**औती** = बपौती, मनौती आदि ।
- बिल्ला, काजर + **औटा** = बिलौटा, कजरौटा आदि ।
- धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल+**क** = धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक आदि।

23. पर्यायवाची शब्द

प्रश्न – पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं?

उत्तर – वे शब्द जो अर्थ की दृष्टि से समान होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। इनका अर्थ आपस में मिलता-जुलता है, किंतु ये एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं। कुछ शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द दिए जा रहे हैं |

उदाहरण :-

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**
अमृत	अमिय, सुधा, पीयूष, अमी।
अतिथि	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना, आगन्तुक।
असुर	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर, खल, रजनीचर।
अग्नि	हुताशन, वह्नि, अनल, पावक, आग, दहन, ज्वाला।

docs.aglasem.com

aglasem.com

अपमान	अनादर, उपेक्षा, तिरस्कार, निरादर।।
अन्धकार	तम, तिमिर, तमिस्र, तमिस, तमर, तारीक।
अश्व	घोड़ा, वाहन, हय, बाजी, घोटक, सैंधव, तुरंग।
अहंकार	अभिमान, गर्व, घमण्ड, मद, दर्प।
आकाश	अम्बर, आसमान, व्योम, नभ, गगन।
आँख	दृग, लोचन, चक्षु, अक्षि, नेत्र, नयन।।
आनन्द	प्रसन्नता, हर्ष, उल्लास, खुशी।
आम	आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल।
आभूषण	गहना, भूषण, अलंकार, जेवर
इच्छा	अभिलाषा, चाह, मनोरथ, कामना, आकांक्षा, लालसा।
इन्द्र	देवेन्द्र, सुरेन्द्र, सुरपति, पुरन्दर, देवराज, शचीपति।
ईश्वर	ईश, परमात्मा, परमेश्वर, प्रभु, भगवान, जगदीश।
उदर	पेट, जठर।
उन्नति	उदय, वृद्धि, उत्कर्ष, उत्थान।
उद्यान	उपवन, कुसुमाकर, बगीचा, बाग, वाटिका।
कोयल	पिक, कोकिल, परभृत, वसन्तदूत।
कमल	शतदल, पुण्डरीक, उत्पल, वारिज, कोकनद, सरसिज, पद्म, नलिन, राजीव, सरोज, पंकज, अरविन्द, अम्बुज, जलज, सरोरुह, कंज, नीरज।
कपड़ा	वस्त्र, पट, वसन, चीर, अम्बर।।
किनारा	तट, तीर, कगार, कूल।
कृष्ण	घनश्याम, मोहन, केशव, माधव, वासुदेव, गिरिधर, गोपाल, मुरारि कथा कहानी, आख्यान, गल्प, आख्यायिका।।
कान	कर्ण, श्रोत्र, श्रवण।
खग	पक्षी, पखेरू, विहंग, द्विज, चिड़िया
गणेश	गणपति, भालचन्द्र, लम्बोदर, गजानन, विनायक।
गाय	गौ, सुरभि, धेनु।
घर	सदन, धाम, गेह, आयतन, आलय, आगार, भवन, गृह, निकेतन।
चाँद	निशाकर, हिमांशु, राकेश, निशिपति, कलानिधि, सुधाधर, चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, सोम, शशि, शशांक, मयंक, इन्दु, रजनीश।
जल	पय, सलिल, पानी, जीवन, तोय, अम्बु, वारि, उदक, नीर।
झण्डा	ध्वज, पताका, निशान, केतु।

docs.aglasem.com

aglasem.com

24. विलोम शब्द

प्रश्न- विलोम शब्द किसे कहते हैं?

उत्तर :- परस्पर विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण :-

शब्द	विलोम
नीरस	सरस
मौन	मुखर
उपेक्षा	अपेक्षा
विस्तार	संक्षेप
प्रत्यक्ष	परोक्ष
गरिमा	लघिमा
शाश्वत	नश्वर
मौखिक	लिखित
अनाथ	सनाथ
धनवान	अकिंचन
सकारात्मक	नकारात्मक
अवनी (धरती)	अम्बर
सम्मुख	विमुख
प्रारम्भ (अथ)	इति
सामूहिक	व्यक्तिगत
अंत	आदि
अचर	चर
अपकीर्ति	कीर्ति
ऊसर	उर्वरा
ज्येष्ठ	कनिष्ठ
नास्तिक	आस्तिक
परिश्रमी	आलसी
प्रतिकूल	अनुकूल
राजतंत्र	गणतंत्र

docs.aglasem.com

aglasem.com

मधुर	कटु
यथार्थ	आदर्श
विष	अमृत
वृद्ध	तरुण
सज्जन	दुर्जन
सपूत	कपूत
सरल	कठिन

25. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. जिजीविषा

A.जीवन से मुक्ति की इच्छा
B.जीवन की इच्छा
C.जीविका कमाने की इच्छा
D.किसी चीज़ को पाने की तीव्र उत्कंठा

2. पार्थिव

A.जिसका संबंध मनुष्यों से हो
B.जिसका संबंध पृथ्वी से हो
C.जिसका संबंध ईश्वर से हो
D.जिसका संबंध प्रथा से हो

3. यायावर

A.जिसके जीवन का कोई निश्चित उद्देश्य न हो
B.किसी भी वस्तु को अकस्मात प्रस्तुत करने

docs.aglasem.com

aglasem.com

वाला
C.एक स्थान पर टिककर न रहने वाला
Dइधर-उधर निरुद्देश्य घूमने वाला

4. रवि "ईश्वर को न मानने वाला मनुष्य" है | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.सनाथ
B.पंडित
C.आस्तिक
D.नास्तिक

5. ईश्वर का "कोई आकार नहीं होता" है | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.सरोकार
B.साकार
C.निराकार
D.इनमें से कोई नहीं

6. "आँखों के सामने" घटित घटना पर विश्वास तो करना ही पड़ेगा | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.प्रत्यक्ष
B.परोक्ष
C.प्रारूपत:
D.प्रत्येक

7. भारतीय की "बुरी दशा" देखकर गांधीजी का मन द्रवित हो गया | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.दुर्व्यवहार
B.दीनता
C.दुर्दशा
D.दुर्दिन

8. "दोपहर के समय" शालू आराम कर रही थी | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.पूर्वाह्न
B.मध्याह्न
C.कालिग्रह
D.अपराह्न

9. वैभव को उस विद्यालय में "इम्तिहान लेने वाला" बनकर जाना है |रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.विशेषज्ञ

docs.aglasem.com
aglasem.com

B.परीक्षक
C.अध्यापक
D.समन्वयक

10. ममता "कम बोलती" है | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.समभाषी
B.मृतभाषी
C.मितभाषी
D.मृदुभाषी

11. विवेक ने "श्रेष्ठ कुल में जन्म" लिया है | रेखांकित वाक्यांश के लिए एक शब्द का चयन कीजिए -
A.कुलीन
B.समकालीन
C.कुलश्रेष्ठ
D.कुलभूषण

12. जो ममत्व में रहित हो
A.निरामय
B.निर्मोही
C.निर्मम
D.निष्ठुर

13. जो किसी का हित चाहता हो
A.हितकारी
B.अहितकारी
C.हितैषी
D.हितभाषी

14. जानने की इच्छा रखने वाला
A.विज्ञ
B.जिज्ञासु
C.ज्ञानी
D.ऋषि

docs.aglasem.com
aglasem.com

15. पलकों को गिराए बगैर

A.अपलक
B.उन्मीलित
C.निमीलित
D.निर्निमेष

मानक रूप

प्रश्न 1.

वर्तनी की दृष्टि से मानक शब्द है

(क) पक्का

(ख) पक्का

(ग) पकका

(घ) पका।

प्रश्न 2.

मानक शब्द है

(क) हंसना

(ख) हँसना

(ग) हसना

(घ) हसन्ना।

प्रश्न 3.

'द्वारका' शब्द का मानक रूप है

(क) द्वारिका

(ख) द्वरिका

(ग) दवारका

(घ) द्वारका।

प्रश्न=4. निम्न में से कौन सा शब्द मानक है।

(अ) उन्नती

(ब) ऊन्नती

(स) उनन्ती

(द) उन्नति

docs.aglasem.com

aglasem.com

प्रश्न=5. निम्न में से कौन सा शब्द मानक है।

(अ) संसारिक

(ब) सांसारिक

(स) संस्कारीक

(द) सांसारीक

प्रश्न=6. निम्न में से कौन सा शब्द मानक है।

(अ) एतीहासिक

(ब) इतीहासिक

(स) ऐतिहासिक

(द) कोई नहीं

प्रश्न=7. निम्न में से शुद्ध मानक है?

(अ) दुष्कर

(ब) दुसकर

(स) दुशकर

(द) दुषकर

8. प्रकारान्त से मेरे कथन का अभिप्राय आपसे मिलता है
   A.प्राकारान्तर
   B.प्रकारान्तर
   C.प्राकारनतर
   D.प्रकारान्त

9. मनुष्य जिसको सामान्य समझता है उसकी सेवा में उसे आनंद प्राप्त करता है
   A.सामान्य
   B.सम्मान्य
   C.समान्य
   D.सम्मान्य

10. जहाँ आत्मीयता हो वहां विचार विनियन में उपचारिकता नहीं होती
   A.औपचारिकता
   B.उपचारीकता
   C.उपचारिकता
   D.औपचारीकता

11 दिन रात अध्ययन करके भी वह प्रथम श्रेणी प्राप्त न कर

docs.aglasem.com

aglasem.com

. सका
A.आध्यन
B.अध्ययन
C.अध्धय्यन
D.कोई त्रुटि नहीं

12 दिनकर राष्ट्रीय भावधारा के ओजस्वी कवियों में अगरगन्य
. है
A.अग्रगन्य
B.अग्रगण्य
C.अगर्गन्य
D.अर्गग्र्य

1 देश सेवा के मार्ग पर चलते हुए उन्होंने व्यक्तिक कष्टों की बिल्कुल परवाह नहीं की
3
.
A.वैयक्तिक
B.वैयक्तीक
C.वैयकतीक
D.व्यक्तीक

उत्तर कुंजी

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1 = ब	9= ब
2= ब	10= स
3= स	11= अ
4= ड	12= स
5 = स	13= स
6= अ	14= ब
7= स	15 = अ
8= ब	

मानक रूप

1= क	8= अ
2= 2	9= अ
3= 4	

docs.aglasem.com
aglasem.com

5= द 6= ब 7= स	10 = ब 11 = अ 12 = ड 13 = ब 14 = अ

----------समाप्त----------

धन्यवाद

docs.aglasem.com

aglasem.com